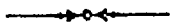




श्रीमान् शा मोतीचन्दजी निहालचन्दजी भटेवड़
की ओर से स्व. दानवीर धर्म-प्रेमी श्री निहाल-
चन्दजी के स्मरणार्थ १०० प्रतिया ।

किंचित्-वक्तव्य



यह अंकित करते हुए हृदय मानस में अतीव
दर्पोत्पन्न हो रहा है कि जब से श्रीमज्जैनाचार्य,
जगत् बंध, परम पूज्य श्री श्री १००८ श्री धर्मदास
जी महाराज के सम्प्रदायस्थ दक्षिण भारतोद्धारक
प्र० मुनि श्री ताराचन्द्रजी म० सा०, शाखह, व्या०
दा० पं० मुनि श्री कृष्णलालजी म० सा० जैन जगत्
के सुप्रसिद्ध वक्ता व्या० वा० पं० मुनि श्री सौभाग्य
मुनिजी म० सा०, सरल स्वभावी, आत्मार्थी मुनि
श्री वच्छराजजी म० सा० प्रभृति ठाणे १४ का
चातुर्मास सम्बत् १९६५ का बैंगलोर शहर में
हुआ था । तब ही से वहां के स्थानापन्न लोगों की

यह उल्टा धमिकाया थी कि पूज्य मुनिराजों के चातुर्मास के उपलक्ष में कोई भी ऐसी आदर्श-पुस्तक प्रकाशित की जाय जिससे कि यह चातुर्मास चिरकाल पर्यन्त विह्वरणीय बना रहे और इसी इच्छित एवं धमिकायित उद्देश्य को सम्मुख रखकर कतिपय धारक-सूत्र में मुनिकरों के निकट उपस्थित हो एतद् सम्बन्धी इच्छापूर्ति हेतु साम्राज्य सम्पर्धना (पार्षना) की ।

फल स्वरूप काव्य कला-कोविद् कविरत्नपं० मुनि श्री सूर्यमुनिजी म० सा० के सुशिष्य म्या-र्यायी श्री माहक मुनिजी म० सा० ने सौमह करके जन-समुदाय के सामार्थे नित्यभेद स्मरण नामक पुस्तक प्रकट की थी । इसकी प्रतियाँ हाथों हाथ समाप्त हो जाने से पुनः तथैव प्रकाशने का मांग जाने तथा पुस्तक के अवश्य में न रहने के कारण

द्वितीय संस्करण के लिये फिर से उक्त मुनिश्रीजी को प्रार्थना पूर्वक कहा गया। महाराज श्री के पास “नित्यनन्द स्मरण” का मेटर विद्यमान था। उसी मेटर को हमने महाराज श्री से प्राप्त कर लोगों की अत्यावश्यकता की पूर्ति करने के लिये उसे पुस्तक रूप में प्रकाशित किया है।

महाराज श्री एवं द्रव्य-दाता महाशय तमी अपने भरसक प्रयत्न को सार्थक समझेंगे जब कि लोग इस पुस्तक का मनन, चिंतन तथा स्वाध्याय कर लाभानुभव प्राप्त करेंगे।

इस पुस्तक के अन्तर्हित (अन्दर) अनेक स्तोत्र, ईश स्तुति एवं उपदेशी भजनों का समावेश किया गया है। यह मुमुक्षु जनों को अपवर्ग सौख्य प्राप्त करवाने में भक्ति-रूप रामबाण औषधि (चिकित्सा) की सफलता प्राप्त करावेगी। यह

अपने ढंग की एक अनुपम ही पुस्तक है। आशु
एवं अज्ञा है कि जन-समाज में यही पुस्तक मक्ति
मार्ग की अेरिका तथा सङ्घान प्रदान में अपूर्ण
सहायिका बनेगी। अेसावि के कारण पुस्तक में
किसी प्रकार की अशुद्धि रह गई हो तो पाठक
गद्य उसे शुद्ध कर पश्चात् पठन करने का उचित
कर उठावें।

बिनयाबधत विनीत—

अश्री-श्री अर्मेदास जेम मिश्र अङ्क,
एतनाम



श्रीमद्धर्मदास जित्सूरिश्वरेभ्यो नमः

(जता २०)

नित्यं नन्द स्मरणं
श्री परमेशि महामन्त्रं

१ एमो अरिहंताणं ।

२ एमो सिद्धाणं ।

३ एमो आयरियाणं ।

४ एमो उवज्झायाणं ।

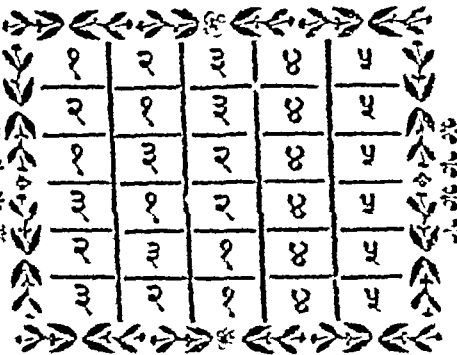
५ एमो लोए सव्व साहूणं ।

ध्यानपूर्वी का फल


ध्यानपूर्वी गणजो जोय,
बढ़ मासी तपनो फल होय ।
सन्देह नहीं मन करो खिगार,
निर्मल मन जपिये नबकार ॥
शुद्ध बल पर ध्यान विवेक,
दिन विन प्रत्ये गणिये एक ।
शुद्ध मन घरके भविजन गण्ये,
पाँच से सागर को पाप हने ॥

• दोहा •

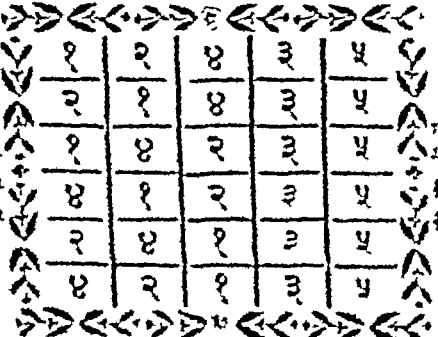
अशुभ कर्म के हरन को,
मत्र बढ़ो नबकार ।
बापी इावण अग में,
देख लियो तत्बसार ॥ १ ॥



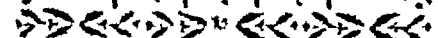
१	२	३	४	५
२	३	४	५	६
३	४	५	६	७
४	५	६	७	८
५	६	७	८	९



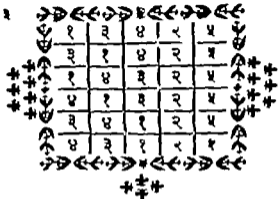
Decorative floral border with a central floral motif.



१	२	३	४	५
२	३	४	५	६
३	४	५	६	७
४	५	६	७	८
५	६	७	८	९



Decorative floral border with a central floral motif.



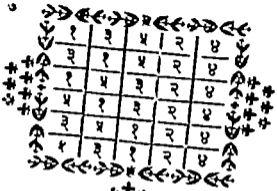
५

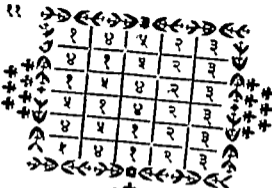
२	२	३	५	८
२	२	३	५	८
२	५	२	५	८
३	२	२	५	८
२	३	२	५	८
३	२	२	५	८



५

२	२	५	३	८
२	२	५	३	८
२	५	२	३	८
५	२	२	३	८
२	५	२	३	८
५	२	२	३	८





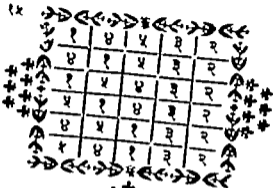
୧୩

୧	୨	୩	୪	୫	୬
୭	୮	୯	୧୦	୧୧	୧୨
୧୩	୧୪	୧୫	୧୬	୧୭	୧୮
୧୯	୨୦	୨୧	୨୨	୨୩	୨୪
୨୫	୨୬	୨୭	୨୮	୨୯	୩୦

୩୧

୧୪

୧	୨	୩	୪	୫	୬
୭	୮	୯	୧୦	୧୧	୧୨
୧୩	୧୪	୧୫	୧୬	୧୭	୧୮
୧୯	୨୦	୨୧	୨୨	୨୩	୨୪
୨୫	୨୬	୨୭	୨୮	୨୯	୩୦





१०

२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----



११

२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----



चौबीस तीर्थंकरों के नाम.

१ श्री ऋषभदेव स्वामी, २ श्री अजितनाथ स्वामी, ३ श्री संभवनाथ स्वामी, ४ श्री अभिनंदन स्वामी, ५ श्री सुमतिनाथ स्वामी, ६ श्री पद्मप्रभु स्वामी, ७ श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी, ८ श्री चन्दा प्रभु स्वामी, ९ श्री सुविधिनाथ स्वामी, १० श्री शीतलनाथ स्वामी, ११ श्री श्रेयांसनाथ स्वामी, १२ श्री वासुपूज्य स्वामी, १३ श्री विमलनाथ स्वामी, १४ श्री अनंतनाथ स्वामी, १५ श्री धर्मनाथ स्वामी, १६ श्री शांतिनाथ स्वामी, १७ श्री कुन्थुनाथ स्वामी, १८ श्री अरहनाथ स्वामी, १९ श्री मल्लिनाथ स्वामी, २० श्री मुनिसुव्रत स्वामी, २१ श्री नमिनाथ स्वामी, २२ श्री नेमनाथ स्वामी, २३ श्री पार्श्वनाथ स्वामी, २४ श्री महावीर स्वामी.

ग्यारह गणधरों के नाम.

१ इन्द्रभूतिजी ३ वायुभूतिजी ५ सुधर्मा स्वामी
२ अग्निभूतिजी ४ व्यक्तजी ६ मंडिपुत्रजी

- ७ मीर्यपुत्रजी ९ अश्वत्थजी ११ प्रयासजी
 ८ अश्वत्थितजी १० मैतार्यजी

बीस विहरमानों के नाम

- १ श्री सीमन्धर स्वामी १ श्री युगमन्धर
 स्वामी, २ श्री पाहु स्वामी, ४ श्री-शुबाहु स्वामी,
 ५ श्री सुजात स्वामी ६ श्री न्ययप्रभु स्वामी, ७
 अयमान स्वामी ८ श्री अमरवीर्य स्वामी, ९
 श्री सुरप्रभु स्वामी, १० श्री विशाङ्गप्रभ स्वामी
 ११ श्री वल्लभर स्वामी १२ श्री चन्द्रानन स्वामी
 १३ श्री चन्द्रबाहु स्वामी १४ श्री भुजंग स्वामी
 १५ श्री ईश्वर स्वामी १६ श्री नेमप्रभ स्वामी १७
 श्री वीरसेन स्वामी १८ श्री महामन्न स्वामी १९
 श्री देवदत्त स्वामी २० श्री अशितवीर्य स्वामी ।

सोकेह सतियों के नाम

- | | | |
|------------|----------|---------------|
| १ ब्राह्मी | ४ सीता | ७ प्रीवरी |
| २ सुन्दरी | ५ राजमती | ८ चन्द्रमवासा |
| ३ कौसल्या | ६ कुन्ता | ९ मृगावती |

१० चेलणा	१२ सुभद्रा	१४ सुलसा
११ प्रभावती	१३ दमयंती	१५ शिवा
		१६ पद्मावती

चतुर्विंश तीर्थकर के नाम.

॥ हरिगीतिका ॥

श्री आदिनाथ अजीत संभवनाथ अभिनन्दन
गुणी । श्री सुमति पद्म सुपार्श्व जिन शशिसुविधि
शीतल दिनमणी ॥ श्रेयांस वासुपूज्य निर्मल विमल
जिनवर जगपती । स्वामी अनंत सु धर्म शांती
सौख्य सबको दे अती ॥ १ ॥ तिहुं लोक पूजित
कुंधु जिन राजे अर जग में प्रभो । श्री मल्लिजिन
यश ख्याति जग भगवान मुनि सुव्रत विभो ॥
नमि नेमि पारस वीर यों चौबीस जिन कीरति
भणी । 'मुनि सूर्य' कहैं तिहुं काल भज सब भावना
हो मन तणी ॥२॥

बीस विहरमान के नाम

॥ वीर छन्द ॥

श्री सीमधर युग बाहु सुबाहु सुबात लयप्रभु
 श्रुपमानन । अनंत सुरप्रभु विशाल बखर शिव
 मुक्त कारन सम्राजत ॥ बन्दुबाहु मुञ्जग ईश्वर
 भूमि वीरसेन महामद्र जिनन्द । देवदस और
 अजितवीर्य यह बीस विनेश मजो सुककन्द ॥१॥

ग्यारह शषधर के नाम

॥ हरिगीतिका ॥

श्री इन्द्र अगनी वापुमूर्ति ज्येष्ठ नायक गुण-
 पती । स्वामी सुधर्मा महिह मौर्यज पुनि अर्कपित
 गणपती ॥ आता अशक्त मेतार्य मुनि राजे सदा
 मुक्त भारती । परमास पञ्चादशमथी मुक्त हीनिये
 नित सम्मति ॥ ४ ॥

सोलह सतियों के नाम.

॥ हरिगीतिका ॥

ब्राह्मी सु चन्दनवालिका राजीमती पुनि द्रौ-
पदी । चूड़ा सुभद्रा सुदरी सुलसा शिवा सीता
सती ॥ दमयंति कौशल्या मृगा पद्मावती परमा-
वती । कुन्तादि षोडश भगवती ध्याओ सदा
चढ़ती रती ॥ ५ ॥



१. श्री जिननामगर्भिततीर्थकरस्तोत्रं

१ । २४

श्रीनामिसूनो जिन सार्वभौम
वृषभध्वज त्वन्नतये ममेहा
षड्जीवरक्षा पर देहि देवी-
भर्त्रर्चितं स्वं पदमाशु वीर

२।२३

श्रीनवमाद्या व्यथयन्ति पापा
अवाप्त वेधाजित मां तुपार्श्व
जिनांगिना रोगतठिर्विस्तीना
तपामिधानावपि पार्श्वमाय

३।२२

ससारपारोऽहमि मेऽद्य ज्ञाने
अवत्पदौ संभव पद्यजामि
वश्याः स्वयं ते मधमोहमाना
अमगर्मणे सति मेमिषाय

४।२१

मिवोस्त्रि मैमा अमिमन्दनैः
नैवत्पमग्री तव पूजयामि
वया वरिष्ठेऽपि वृषे समाना
न मे कथं ते मयि सा मनाथ

(१६)

५।२०

श्रीखंडवत्तापहरा शिवश्री
सुखाय गीस्ते सुमते प्रजासु
महस्तुते सुव्रत देव तीव्र-
तिरस्क्रियाकृतमसोऽपि तात

६।१६

पद्मप्रभाक्षिद्वयमंहसाम—

झर मुदेते स्थिरपद्मवल्लि
प्रभो प्रभाते भुवि दिप्य माना
भजद्यमीत्वं जिन मल्लिनाथ

७।१८

श्रीमान् सुपाश्वोऽपि हि नेस्त मां श्र-
सुमत्सुखं देश न याचकार
पारंगता पातक वल्लरीप
श्वर्ग्रंजनं चार पति पुनाति

८।१७

षड् प्रमाशोर्हर मेघ शंकु
द्रुप्यस्मि इत्ते सम कुमि पुंशु
प्रयासतां मुञ्चति नाप्ययना
मह्य सुवर्णे त्वयि कृपुनाथ

९।१६

श्रीरंगजाते सुविधे सदाश्यां
सुधांशुगौरी विशदीकरोति
धिरवैकचंघोसि मृगाकमाना
धिनोपि कोकानपि शक्तिनाथ

१०।१५

श्रीशीतल त्वां शिवमोहपोष
शील्यक्य पात्रे त्रिमराज शर्म
तव स्वरूप इदि संदधाना
सर्व समंते त्वयि धर्मनाथ

(२१)

११।१४

श्रीवत्सिनि श्रीहृदि तावके श्री
श्रेयांस सक्रा नितरामहोश्च
यां मे निजां देहि वदान्य दीनं
समीक्ष्य वीराग्रिम मामनंत

१२।१३

वाग् वासुपूज्या गमिकीं श्रुतिश्री
सुखं कपंति भवताभ्य सावि
पूर्णा ममाशा विमलाद्य नाम
ज्ययासमं लीनशिरो न तोऽल



२ अथ श्री पैसठ पन्त्र उद्धारमय श्री चौथीस जिन स्तोत्र

१	१८	२१	२	२३
२२	१३	६	१४	४
२०	११	१३	१५	६
१६	१२	१०	१०	७
३	८	६	२४	२५

आदिनाथ जगन्नाथ, अर-
मायं तथा नमि । अजित
जितमोहारिं पार्श्वं बंदे गुहा-
घटं ॥१॥ नैमिषायं त्रिलोकी
शं, शक्तिं च सुविधिं तथा ।

अमलं मतदेवैर्द्वं स्तुबेहममितम्बमम् ॥ २ ॥ सुमत
सुमतं नीमि अेषांस्तं सुखदायकं । विमलं विमला-
चार्, धर्मं पद्यममं जिनम् ॥३॥ महिलमायं जिनेशं
च वासुपुम्बं जगद्गुरुं । कुपुं च शीतलं वन्दे
सुपाश्वं परमेस्वरं ॥४॥ सम्मर्षं जगद्गुरुम्बं चम्पु
ममं ममाम्बं । सुमतिं वीरमाईत्ये संघं आपि
अनुविधिं ॥५॥ संशोयं जिनसंज्ञामिः पंच पश्यद्
निर्मितः । पूज्यते यथा पुत्र्यं च संदिरे अततं वासु
॥६॥ तद्पुटे कोटि कस्याणं श्रीविजयति लीलया ।
सुश्रोपप्रचरोगादि नश्यन्ते व्याधिबेदनाः ॥ ७ ॥

॥ मालिनी-छन्द ॥

भवति सुखमनेकं तस्य यो मानवस्य,
विमलमतिरनिद्यं स्तोत्रमेतद्धितन्द्रः ।
पठति परमभक्त्या प्रातरुत्थाय शश्वत्,
मुनिरभिकृतभक्तिः मेघराजो वभाण ॥८॥



३. पैसठ यंत्र चौबीस जिन ।

१८	३	६	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१६	२५
१८	०४	५	६	१२
१०	१५	१७	२३	४

आदौ नेमिजिनं नैमि संभवं
सुविधिं तथा । धर्मनाथं महा-
देव शान्ति शान्तिकरं सदा ॥
१ ॥ अनंतं सुव्रतं भक्त्या
नेमिनाथं जिनोत्तमं । अजितं

जितकंदर्पं चन्द्रं चन्द्रंसमप्रभं ॥ २ ॥ आदिनाथं तथा
देवं सुपार्श्वं विमलं जिनं । मल्लिनाथं गुणोपेतं
धनुषां पञ्चविंशतिम् ॥ ३ ॥ अरुनाथं महावीरं सुमतिं
च जगद्गुरुम् । श्री पद्मप्रभनामानं वासुपूज्यं
सुरैर्नतं ॥ ४ ॥ शीतलं शीतलं लोके श्रेयांसं श्रेयसे

सदा । कुंभुनाथं च धामेयं विश्वामिनम्बन त्रिभुम्
 ॥ ५ ॥ त्रिमार्गा नाममिष्यः पंचपष्टिसमुद्भवः ।
 रत्नोर्य राजते यत्र तद्य सौख्य निरंतरं ॥६॥ यस्मिन्
 गृहे महामफत्या संघोऽयं पूज्यते पुषैः । मूढमेव
 पिशाचादेः मय तत्र न विद्यते ॥७॥

॥ माधिली इत्य ॥

सकलगुणनिधानं संत्रमेनं विशुद्ध,
 हृदयकमल कोशे धीमता ध्येयरूपं ।
 जयतिलकगुरोः धी सुरिराजस्य शिष्यो
 पदति सुखनिधानं मोक्षं लक्ष्मीनिवासं ॥८॥

४ जिन पञ्चकम्
 शिकरिषी ।

समो भर्त्तासां करमरिपुञ्जो जगतमें ।
 समो सिद्धासां ते श्रुषि सिषि निधानं बुद्धहरम् ॥
 समो धारधार्याणां सकल सुखार्थं मुक्तिं सुखरम् ।
 कर्त्तव्यो है आमे शुभगुण सदाधार पुतजो ॥९॥

उवजभायाणं च प्रकृति ज पचीसो गुण निधं ।
णमो लोए सव्वोज्वल चरण साहूणमनघम् ॥
सहस्रद्वे कोटी जगतमधि साधू जगन है ।
तथोत्कृष्टासाधू नव सहस क्रोडान प्रणमू ॥२॥
नमः सम्यक् दृष्ट्यै विमलतर ज्ञानाय सततम् ।
तपश्चारित्रद्वादशत्रिदशमेदैर्गुणि गरौः ॥
युजे सिद्धवातोऽत्र च परभवेस्याच्छिवकरः ।
स मे हार्दं दुःखं हरतु नितरां पूर्णकृपया ॥३॥
नमो ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभ अजितं संभवजिनं ।
अमिनन्द स्वामी प्रणव सुमतिं पद्म प्रभवै ॥
सुपार्श्वं श्रीचन्द्रप्रभ, सुविधि वा शीतलप्रभुं ।
श्रेयांसं वास्पूज्यं विमलमनतं धर्मप्रणमू ॥४॥
नमः शान्ति कुंथुं अरमलि मुनीसुव्रत विभुं ।
नमिं नेमिं पार्श्वं चरण युगलं नौमि सततम् ॥
महावीरं वंदे परम पद दानैक सुविधं ।
जिनेन्द्राऽहो रात्रं ददतु कुशलं मे समयजा ॥५॥

५ श्रुपम स्तोत्रम्

विलोक्यलोककुलकक्षितकक्ष्यमैक-
 कक्ष्यद्रुम कक्ष्यममंभिवशाधिनाथम् ।
 मक्ष्या मक्ष्यमरिईकुङ्कुत्तनार्थ,
 मो मो जना श्रुपमनाथमनाथनाथम् ॥१॥
 यश्चरिचरुचिर्दर्यनसुयधान-
 धानधिर्यं चितरणे रज्ज्जाद्रिनाथम् ।
 आराधयणमुठ धैर्ब्रिताद्रिनाथं
 मां मो जना श्रुपमनाथमनाथनाथम् ॥२॥
 श्रीमान्पद्माङ्गकमहाकमहाधमामा-
 निद्राननाकृतिनिरस्तनिशाधिनाथम् ।
 स्वाम् स्मरणमधिमाठतनामनाथं
 मो मो जना श्रुपमनाथमनाथनाथम् ॥३॥
 विष्णुमखरुडठचिदपडववाभिपिरुड-
 र्जधमतापभरमप्रदिशाधिनाथम् ।
 मित्य नमस्यमुदयभिजजताधिनाथं
 मां मां जना श्रुपमनाथमनाथनाथम् ॥४॥

६ श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम्.

नमद्देवनागेन्द्रमन्दारमाला-

मरन्दच्छटाधौतपादारविन्दम् ।

परानन्दसन्दर्भलक्ष्मीसनाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥१॥

तमोराशिवित्रासने वासवेशं,

हतकलेशलेशं श्रियां सन्निवेशम् ।

क्रमालीनपद्मावतीप्राणनाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥२॥

नवश्रीनिवासं नवाम्भोजनीलं,

नतानां स्वधीदानदाने सलीलम् ।

त्रिलोकस्य पूज्यं त्रिलोकस्य नाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥३॥

हतव्याधिवेतालमूतादिदोषं,

वृताशेषपुरयावलीपुरयपोषम् ।

मुखश्रीपराभूतदोषाधिनाथं,

स्तुवे देवचिन्तामणिं पार्श्वनाथम् ॥४॥

नृपस्याश्वसेनस्य परोऽवतंसं,
 अमासां मनोमानसे राजांसम् ।
 प्रमाद्यप्रभावाद्दिनीसिन्धुमार्यं
 स्तुभे देवचिन्तामसि पार्ष्वेनाथम् ॥१॥
 कलौ भाषिणी कल्पदुष्पोषमानं,
 अगम्यात्मने सन्ततं सावधानम् ।
 धिरं मेदपादस्थितं विश्वनाथ
 म्नुभे देवचिन्तामसि पार्ष्वेनाथम् ॥२॥



७ यमक पन्ध-भी पार्ष्वेनाथ स्तोत्रम् ।
 ॥ १॥ १७ ॥

वरसवरसंवरसवरसं मधर्ममधर्ममधर्ममधर्म ।
 सममासममासममासममास गमर्मगमर्मगमर्मगमम
 ॥ १ ॥ दरमदरमदरमदरम गतरंगतरंगतरंगतरं ।
 गरसगरसंगरसगरसं नवरनवरनवरनवरं ॥ २ ॥
 एमुदारमुदारमुदारमुदा समिसंसमिसंसमिसं-
 समिसं । विदितंविदितंविदितंविदितं समतेनमते-

नमतेनमते ॥३॥ यतनायतनायतनायतना, नयमा-
 नयमानयमानयमा । क्षणलक्षणलक्षणलक्षणलक्षणल,
 क्षरदक्षरदक्षरदक्षरदक्षरद ॥४॥ प्रमदाप्रमदाप्रमदाप्रमदा,
 नकरानकरानकरानकरा । नवमानवमानवमानवमा,
 नसदानसदानसदानसदा ॥५॥ तरसातरसातरसा-
 तरसा, दयनोदयनोदयनोदयनो । कदमंकदमं-
 कदमंकदमं, विभवाविभवाविभवाविभवा ॥ ६ ॥
 इति पार्श्वजिनेश्वर ते स्तवनं, रचितं खचितं यमकैः
 सुघनं । परिरंजितदक्षनरप्रकरं कुरुतां शिवसुन्दर-
 सौख्यभर ॥ ७ ॥



द. श्री ऋषभस्तोत्रम् ।

॥ श्लोक छन्द ॥

सुखकारणमुत्तमभं ऋषभं, ऋषभांकितपाद-
 पयोजयुगं । युगमानभुजं नृपनाभिभवं, भवसागर-
 तारणपोतनिभं ॥ १ ॥ निभभूधरभेदनजम्भरिपुं
 रिपुरोगरणादिकभीतिहरं । हरमुत्कटमारतिर-

स्वरूपं करणेषु कलात्मसं सकलं ॥ २ ॥ कल
कां च न देहकृदि सखिरं धिरसखितपापविनाम
कर । करपादविनिर्मितकोकनयं नवतुल्यगुहो
दृष्टपूर्वमस्य ॥ ३ ॥ मत्तयानितशीतलशांतरसं
रसनागुसरमितसखीजन । जनमीजनकोपमितं
अगतो अगतो धिक् माधिवमे सतत ॥ ४ ॥ सत-
तादिबहुर्दिव्यतूर्यसवं सपसप्तम देवमनो
नमन । नमनोत्तरपूजकनविद्विनफल सपसंयम
तीनमनापयनं ॥ ५ ॥ पञ्चमांगुलिषिषिषिषिषारि-
क्ष्यो वयमाजनमेजन तारदितं । द्वितहेतुसु-
द्विगितभाषयतं शत पञ्चधनुस्तनमानधर ॥ ६ ॥
धरणीसमसर्षसहस्रगुहं गुहभूमिकला—
शशिर्भं शमिर्भं । शमिनदिकरं भरमाय सुरा-सुर-
पण्यमह तु मज्जामि जिन ॥ ७ ॥



६. श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

॥ तोटक वृत्त ॥

रणनिर्जितमारवलं सवलं, बलवस्त्रसमान-
 शरीर विभं । विभवं भगवंतमिभेंद्रगतं, गतदुर्मति
 दुर्गति दूरतर ॥ १ ॥ तरणाय भवांबुनिधौ तरणिं,
 तरणींदुसमद्युतिसौम्यकलं । कलकल्पित
 कल्पतरुं गुणिनं, गुणिनंदिकर करणैरजितं ॥ २ ॥
 जितपञ्चमकालविलासफलं, फलवत्तरपादपयोज-
 नुतिं । नुतिसंस्तुतितत्परनाकपतिं, पतिताखिल-
 भव्यसमुन्नतिदं ॥ ३ ॥ नतिदं कमठस्य शठस्य फलं,
 कलभावमुपेयुष ईतिहर । हरधातृहरिभ्रमभेद-
 बुधं, बुधलक्षितलक्षणलक्षपर ॥ ४ ॥ परमात्मजल-
 प्रतिविंबतुला, तुलितं यतियोगिगणैरमलं । मल-
 शालिनि भालनतो विमुखं मुखदीप्तिरिरस्कृत
 पूर्णविधुं ॥ ५ ॥ विधुरेपि जनस्मृतिसौख्यकर,
 करणत्रयशुद्धिविशुद्धहृदं । हृदयंगमसंगमरग-
 धर, धरणेन्द्रसदाश्रितलोकभर ॥ ६ ॥ भरतांतर-

वसिष्ठि काशियपुरे पुरतः कृतकृत्यजनैषु वर ।
 अश्लोथमिन्दमिमांषधर, वरिषधरि कर्मि अनाधि
 पति ॥ ७ ॥



१० श्रीवीरजिनस्तोत्रम् ।

महामन्त्रशुश्राभितं देवदेवं महीनाथसिद्धार्थ-
 पुत्रं पवित्रम् । यथाकामितं वृत्तकारिभ्यदत्तं
 त्रिकालं स्तुभे श्रीजिनं वर्धमानम् ॥ १ ॥ बहुप्रसिद्धि-
 देवेन्द्रयोगीन्द्रचन्द्रं सुधाशालि संशुश्रावकं वरे
 एयम् । इयासागरं शुश्रुसन्मार्गपार्थं त्रिकालं स्तुभे
 श्रीजिनं वर्धमानम् ॥ २ ॥ अमन्तोत्तरेणामचारिण-
 बीनं अरागोगन्मोहनस्तापदीनम् । सदाद्भुत-
 निर्मूलमापावितार्थं त्रिकालं स्तुभे श्रीजिनं वर्ध-
 मानम् ॥ ३ ॥ शमस्वात्पायोधिस्तंभर्गसक्तं सदा
 काममर्मप्रपञ्चप्रमुक्तम् । प्रचरुहप्रतापेन मास्वस्स-
 मानं त्रिकालं स्तुभे श्रीजिनं वर्धमानम् ॥ ४ ॥ मनो
 हारिकस्यासपत्ने त्रिकालं विदीर्घांतरारिप्रक्षालि

कृपालुम् । गभीरं विशालैर्गुणैर्वर्धमानं त्रिकालं स्तुवे
 श्रीजिनं वर्धमानम् ॥५॥ जगज्जीवसन्दोहजीवादि-
 भूतं, भवभ्रान्तिरिक्तं नमन्नाकिभूतम् । लसत्स्वर्गि-
 निर्वाणलक्ष्मीनिदानं, त्रिकालं स्तुवे श्रीजिनं वर्ध-
 मानम् ॥६॥ इत्थं भक्तिवशेन मुग्धमतिना श्रीवर्ध-
 मानः स्तुतः, प्रोद्यद्देहपवित्रकांतिकलितः सश्री-
 कशोभायुतः । याचे नैव कलत्रपुत्रविभवं नो काम-
 भोगश्रियं किन्त्वेकं परमोत्तमं शिवपदं श्रीबाल-
 चन्द्रार्चितम् ॥७॥



११. प्रथमस्वरमयं प्रथमजिनस्तोत्रम् ।

सकलकमलदलकरपदनयन ! प्रहतमदनमद !
 भवभयहरण ! सततममरनरनतपदकमल ! जय
 जय गतमद ! मदकलगमन ! ॥१॥ अमलकनक-
 नगवर ! गतरमण ! क्षतजननमरण ! शमरस-
 सदन ! श्रमणकमलवनतपन ! गतभव ! भवभयम-
 पहर मम जनमहन ! ॥२॥ अभयद ! भवदरजल-

धरपवन ! सचलमदुमधनदहनजलधर ! व्यपगत
 मय ! शृणुधरधरधन ! जगदधर ! जय ततधर
 समय ! ॥३॥ तरलधरसुहृषधरदमनकर ! कल
 कञ्जधरगमन ! तरधरा ! प्रथम परमपद्मपद्म
 धरधरधर ! धनधरधरधर ! धनधरधर ॥४॥ परम-
 पद्मधरधर ! कमलधरधर ! शृणुधरधरधरधर-
 धरधरधर ! परमधरधरधर ! सकलधरधरधर ! कल-
 धरधरधरधरधर ! रधरधरधर ॥ ५ ॥ इत्येवं प्रथम-
 स्वरेण मन्त्रज्ञानीपार्थक्यप्रमः सन्नूक्त्या प्रथमो
 जिनः स्तुतिपद्यं नीतो युगादिप्रभुः शोषाम् । मैऽव-
 गच्छत्य विश्वजनतात्राणा शुभस्वानकं, तुर्मैर्धं प्रथमे
 जिनस्तु सपदि येषः मियं यच्छतात् ॥६॥



१२ अथ श्री नीतरागाष्टक ।

॥ लिखिती नृप ॥

विद्यातन्त्रं कर्म जिनपतिजिनैर्ध्रं अथहरं
 मया एभु धामं विशुधपरध्यात सुखकर ।

शरणाग्रं कारुण्यं अचलशिव अक्षं मुनिवर,
अनन्तं अव्याधं परमपदसाक्षं जिनवरं ॥१॥
हितं सर्वं सत्त्वं सुगुणगुणराजं जगपतिं,
विधिं ब्रह्मं रम्यं विदितं सव योऽंगं मगपतिं ।
अनेकं एकवा हरन सव रोगं प्रभु तुमे,
सदा शक्तिं व्यक्तिं परम सुख रक्तिं विभु तुमे ॥२॥
जगत्त्वद्यं जेषु जयति जग श्रेष्ठ जुगगुरुं,
महावीर वीरं सकल मति भासं भयहरं ।
महा भाग्यं भोग्यं भगतजन पालं गत दर,
महामोक्षं सोक्षं रहित रज पंकं जयकरं ॥३॥
गुणधीप धीशं रटत सव नामं मुनिजनं,
महामुक्तं गुप्तं कटत सव क्लेशं भ्रमचनं ।
महाबुद्धं सिद्ध चढत सुख श्रेणि दम युत,
महा कीर्तिं स्फूर्ते घटत दुख श्रेणी समयुत ॥४॥



१३ श्रीपार्व्य स्तोत्र ।

॥ प्रमादीया इन्द्र ॥

परिप्लव्यदेवता श्रीपार्व्यनायसेविता ।
 प्रमायमासिता गुणोद्भवा जयविता ॥१॥ परित्रम
 गोपतिर्दत्ताष्टकर्मविधुतिः विवेकबुद्धिवाक्पति
 गुणगुरुरद्य सद्यतिः ॥ २ ॥ पशोमयस्रमएव
 गताष्टमार्गमएडली विगंगनांगमूषिता मवद्गुण
 विषयोपिता ॥ ३ ॥ त्वदीयधर्मदेशमा कृताष्टकर्म
 वेपद्या सररसुपावधीरिही सुतन्त्रतत्त्वमीरिही ॥४॥
 कुतर्कतर्कतकिता मधन्तमेत्य वृषिता परे प्रधीव
 वाक्कृता अयास्तमानमत्सराः ॥५॥ त्वदीयपादमल्लिता
 प्रचण्डपापपंकितः जना मबन्धि गूरतः शुमानि
 मंपमानतः ॥६॥ त्वदीयदामशीडता कृतायिसर्ष
 वेचता किमस्ति कामयेजु का धनेशुसुष्यसेवकाः ॥
 ७॥ गुणा विलोक्य सर्वतः कलापनेष्टधर्मतः बसंत
 मन्पधिधमा मवद्गुरीरधममाः ॥ ८ ॥ गुणाष्टकं
 सुखाकरं सतां मतस्तु सञ्चरं अकारि रत्नपीधरे
 गुणेशुमफिउविर्भरेः ॥ ९ ॥

॥ वसन्ततिलका ॥

इत्यष्टकं गुणवतो गुणमालिकाभि-

स्सस्यक् प्रयोगरुचिः रचितं चिरायः

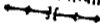
श्रीमन्मुनेविमलशीलभृतो गुरोन्दो-

र्भव्याश्रितं भवतु भव्यतराय भूमौ ॥१०॥

१४. अथ श्रीनेमिजिनस्तोत्रम् ।

मानेनानूमानेत्ततोन्नमुन्नामिमाननम् । नेमिना-
मानमममं मुनीनामिनमानुम ॥१॥ नानामानामनि-
स्त्राना ममानानामनामिनाम् । नामिनेनामिना मोमे
नेमिनाम्ने तमोनमः ॥ २ ॥ मानतोन्नामिनं नाम
ननामिस्त ममानने । तनु नेमिममी मैना मोमा-
नामनमक्षिनाः ॥ ३ ॥ मिन्नमन्मनमामानि मानिनी-
मानतोन्मना । नानानामी मनन्नेमिं मनोमनिम-
मानिनाम् ॥ ४ ॥ मनो मुन्निस्त्रनं नूनमुन्नमन्मानतो
ननम् । नुन्नसेतोमुनानेमिनास्त्रानमामनु ॥५॥ नोन-
मुनमानमानेन मुनीनानेममाननम् । मीनानमिं तमम्ने

मिमनूनामामिर्मीममाम् ॥ ६ ॥ मुमीनमेनोमीबाय
मिमानं मेमिमानिगम् । मेमिनामानमावामा ममो
मानममु नमः ॥७॥ मेमीममनर्ममिममनमनं मेमि
मानमम् । मेमिनाम्मो न माम्मा न मानानूमममी मम
॥ ८ ॥ इति स्तुतिं य पुरतः पठन्ति श्री मेमिनो
प्यङ्गनयुग्मसिद्धाम् । श्री पर्यमानोदयशक्तिस्तं
स्तु सिद्धिययाः परिमोगयोग्याः ॥१॥



१५ चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तोत्र ।

चन्द्रममस्य विजयो यद्यो सुदृढि पक्षिणी ।
सुविषेभ्यजितो यतो पक्षियपस्ति सुतारका ॥ १ ॥
पद्मममस्य कुसुमो यद्यः श्यामा च पक्षिणी ।
कुमारो वासुपुत्रस्य यस्तत्रैवास्ति पक्षिणी ॥२॥
गामुखो हृषुपमस्यास्ति बरा चक्रेश्वरी सुती । अस्ति
तस्य महायज्ञस्तथाजितबला मता ॥३॥ त्रिसुक्त
संभवस्यास्ति वुरितारिभ्य पक्षिणी । पून्यामिमम्भ
स्यास्ति यद्य मायक काकिडे ॥४॥ सुमतेस्तुदु-

श्वास्ति महाकाल्यस्ति यक्षिणी ॥ श्री सुपाश्वे-
 स्य मातङ्गः शांताख्या यक्षिणी शुभा ॥५॥ परमुखो-
 विमलस्यास्ति विदिताख्यास्ति यक्षिणी।श्रीअनन्तस्य
 पातालश्चांकुशा यक्षिणीवरा ॥ ६ ॥ ब्रह्मा सुशीत-
 लस्यास्ति ह्यशोका यक्षिणी मता ॥ श्रेयांसस्य-
 प्रभोर्यक्षेद् मानवी यक्षिणी तथा ॥ ६ ॥ धर्मस्य
 किन्नरो यक्षः कंदर्पा यक्षिणी मता ॥ शान्तेर्गरुडो
 यक्षोस्ति निर्वाणी यक्षिणीवरा ॥ ८ ॥ कुंत्योर्गन्धर्व-
 यक्षोस्ति बलानामन्यस्ति यक्षिणी ॥ अरस्य यक्षो
 यक्षेद् च धारिणी यक्षिणी शुभा ॥ ९ ॥ नमेर्भृकुटि
 यक्षोस्ति गन्धारी यक्षिणीतथा । यक्षो वीरस्य
 मातंगः, सुरीसिद्धायिका मता ॥ १० ॥ मल्ले.
 कुबेरयक्षोस्ति यक्षिणीधरणप्रिया । पार्श्वः श्री
 पार्श्वनाथस्य सुरी पद्मावती तथा ॥ ११ ॥ नेमेर्गो-
 मेध यक्षोस्ति त्वं विकाशे विकाशती । श्री वरुणो
 सुव्रतस्यापि नरदत्ताथ यक्षिणी ॥१२॥ माया बीज-
 स्थायिनां च परमेष्ठि स्वरूपिणां । अर्हतां तत्कमात्
 स्तोत्रं कृतं सागर साधुना ॥ १३ ॥ इति श्री
 चतुर्विंशति तीर्थकर स्तोत्रं समाप्तम् ॥

१४ श्रीपरमेष्ठिरक्षास्तोत्रम्

परमेष्ठिनमस्कारं सारं सपपद्मार्मकं, धाम
 ग्लाकं यज्ञ पञ्जरामं स्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो
 परिहृणासु गिरस्कं गिरसिस्वियतं ॥ ॐ नमो
 सिद्धाम मुखं मुखपटम्बरं ॥ २ ॥ ॐ नमो भावति
 धामं अगारक्षातिशायिनीं ॥ ॐ नमो उच्चम्रपापै
 धापुध हस्तयोर्दंडं ॥ ३ ॥ ॐ नमो शोच सप्त
 साहस्र मोक्षके पादयोः शुभे ॥ एसा पंच ममुखापै
 गिलायज्ञमयी नले ॥ ४ ॥ सम्बपावप्पक्षासके
 धमो धम्ममथा बहिः ॥ मंगलायां च सन्धीसि कारि
 रांगारखातिकाः ॥ ५ ॥ स्थाहार्त्तं च पदं क्षेत्रं पदार्त्त
 हृद्यं मगलं ॥ धमोपरिषज्जमर्थ विधार्त्तं देहरक्षणे
 ॥ ६ ॥ महाप्रभावा रक्षेयं शुभोपद्रवमाश्रिणी ॥
 परमेष्ठिपदान्ता कविताः पूरैस्वरिमिः ॥ ७ ॥
 यस्वेवं कुर्वते एसा परमेष्ठिपदैः सदा ॥ तस्य
 नप्यान्नय व्याधिग्रविधापि कदाचन ॥ ८ ॥

१७ चतुर्विंशति स्तोत्रम्

प्रथमं ऋषमं देवं, द्वितीयं चैवाजिताख्यक ।
 तृतीयं संभवं नत्वा तुर्यं चैवाभिनन्दनं ॥ १५ सुमति-
 पंचमचैव षष्ठं षड् प्रकीर्तितम् । सप्तमोस्तु सुपा-
 र्श्वः स्यादष्टमो मतः चन्द्रप्रभः ॥ २ ॥ नवमः पुष्प-
 दन्तश्च दशमश्शीतलस्तथा । श्रेयांश्चैकादशश्चैव
 वासुपूज्यस्तु द्वादशः ॥ ३ ॥ विमलो त्रिदशश्चैवा-
 नंतश्च हि चतुर्दशः । धर्मपञ्चदशश्चैव शांतिनाथस्तु
 षोडशः ॥ ४ ॥ सप्तदशमः कुण्डुनाथः ह्यरोऽष्टादशम-
 स्तथा । मल्लिनाथश्चोनाविंशो, विंशमस्तु मुनिसुव्रतः
 ॥ ५ ॥ श्रीनमिश्चैकविंशश्च, द्वाविंशो नेमिनाथकः ।
 पार्श्वनाथस्त्रयोविंशो, वर्द्धमानस्तुर्यविंशतिः ॥ ६ ॥
 ऋषभादिश्चतुर्विंश, तीर्थङ्करा उदाहृता । स्मरणा-
 त्सर्वपापेभ्यो, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ य इदं
 पठते नित्यं, त्रिकालश्च जिनोत्तमः । इहैव
 लभते सौख्यमन्ते निर्वाणमाप्नुयात् ॥ ८ ॥ इति
 श्रीरामचन्द्र विरचितायां ऋषभादिचतुर्विंशति-
 तीर्थराष्टकं सम्पूर्णम् ॥ मि० ज्ये० १३ सं० १६२६

१८ श्रीपार्ष्णिनाष्ठकम्

टीका

सुरदानधमत्पमुनीन्द्रमत नतमव्यजनावति
 षोपहरम् । हरमूधरदारियशाप्रकरं करसेमसि
 पुवनमिहमिमम् ॥ १ ॥ निमपावपपंफितविभङ्गा
 गजसिंहववानसमीतिहरम् ॥ हरहापविपुम्पत
 कीतिकरं कुरुशोदधिमद्रुत रूपधरम् ॥ २ ॥ परसे
 न्द्रमिपधितपावयुग युगधाङ्गयुगं कमलाङ्गयुगम् ।
 युगपञ्जमनीन्पधिषामपरं परमातपतिं जितकर्म
 रिपुम् ॥ ३ ॥ रिपुमिप्रसमाशपमर्हत्तम तमउत्कर
 वाक्कथाम्गिरम् । गिरिराजमहीपरपीरगुलं गुफ
 गशिपिगुठिनसङ्घवनम् ॥ ४ ॥ वनयम्ननकुम्भ
 सुम्भकमतं मतिकीशिकमण्डलमण्डलमणिः । मणि
 काञ्चनरुप्यहसङ्गुलं रक्षसङ्गपर्यं गतजन्मवरम्
 ॥ ५ ॥ वरभाविषयाजितकर्मगलं गलनापकचित्तकज
 जमग्म ॥ मरुकाम्बुधिपानपयोधिमूर्तिं मुनिमायक
 र्मास्मिन्नकल्पितम् ॥ ६ ॥ तन्मार्कसमोद्यतसुत्करज

रजताद्रिमनोशविशुद्धकुलम् । कुलवारिधिचन्द्रमन-
 न्तकल कलधौतनिभं जिनपार्श्वविभुम् ॥ ७ ॥
 विभुसौख्यकरं भवभीतिहरं हरहारकृतोद्यरणेन्द्र-
 वरम् । वरपोतनिभं भववारिनिधौ निधिवत् सुरसद-
 जिनपस्तवनम् ॥ ८ ॥ श्रीवामेयो जिनाधीश
 शिवपद्यादिति स्तुतः । पाठकार्योत्तमाम्भोधिगुरूणा
 सुप्रसादतः ॥ ९ ॥

१९. श्रीचन्द्रप्रभस्तोत्रम् ।

चन्द्रप्रभ प्रभाधीश चन्द्रशेखर चन्द्रभूः ।
 चन्द्रलक्ष्मीक चन्द्राद्य चन्द्रबीज नमोऽस्तु ते ॥१॥
 ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चन्द्रप्रभः ह्रीं श्रीं कुरु कुरु स्वाहा ।
 दृष्टसिद्धि महासिद्धि तुष्टि पुष्टि करोद्भव ॥२॥
 द्वादश सहस्र जपतो वाञ्छितार्थफलप्रदः ।
 गृहीतस्त्रिसन्ध्यजपत सर्वाधिव्याधिनाशक ॥३॥
 सुरासुरेन्द्रमहित श्रीपाण्डू च नृपसुत ।
 श्रीचन्द्रप्रभ तीर्थेश चन्द्रोज्ज्वलां कुरु कुरु ॥४॥
 श्रीचन्द्रप्रभविद्येयं स्मृता सद्यफलानृता ।
 भवाधिव्याधिविध्वंसदायिनी मे वरप्रदा ॥५॥

१० श्री गौतमस्तोत्रम् ।

ॐ नमस्त्रिजगत्सुखीरस्याप्रिमामवे ।
नमममधिषमासिस्फरोहशयेन्ममूतये ॥१॥

पादाभोजं मगवतो गौतमस्य नमस्यतां ।
पशीमधन्ति बैलोफ्यस्तपवो विगतापदः ॥२॥

तथ सिद्धस्य बुद्धस्य पादांबुः परमाकृष्टः ।
पिपति कल्पशाखीय कामितामि तनूमताम् ॥३॥

श्रीगौतमासीत् महा नमस्य तत्र कीर्तनात् ।
बुधर्षापुष्पां पृथिवीमुच्चिनोति नरश्चिरं ॥४॥

प्रतिशेवे तत्रांघाम्ना मगवान् मास्करी धिर्यं ।
अति सौम्यतया चाम्प्रीमदो ते श्रीमकांतता ॥५॥

प्रिञ्जित्य संन्यागमायां बीज मोहमदीपते ।
नराः स्यान्मुक्तिराश्रधीनायकस्त्यत्रमावतः ॥६॥

ठावशानी विधो वेधा श्रीग्राधमरयंक्षितः ।
अगगयपुगयर्नपुगय तेषां स्वाहाकृतोऽसि धीः ॥७॥

नम म्याहा परिउर्षानिच्छिन्नकारी तनूत्पिपे ।
रागात्म ग । तत्र यागीशाय मजागमे ॥ १॥

इति श्रीगौतमस्तोत्रं मन्त्रन्ते स्मरतोन्वहं ।
श्रीजिनप्रभसूरेस्त्व भव स्वार्थसिद्धये ॥६॥



२१. ओपरमात्मस्तोत्र ।

॥ मुजगप्रयत्त ॥

शिरं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं, न देवं न बन्धुं
न कर्म न कर्ता । न अगं न संगं न इच्छा न कामं,
चिदानन्दरूपं नमो वीतराग ॥ १ ॥ न बन्धो न
मोक्षो न रागादि लोकं, न योग न भोगं न व्याधिर्न
शोकं । न क्रोधं न मान न माया न लोभ, चिदा०
॥२॥ न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिह्वा, न चक्षुर्न
कर्णं न वस्त्रं न निद्रा । न स्वेद न खेदं न वर्णं न
मुद्रा, चिदा० ॥ ३ ॥ न जन्म न मृत्युर्न मोदं न
चिन्ता, न क्षुत्तृद् न भीतं न काश्यं न तुंदा । न
स्वामी न भृत्यो न देवो न मर्त्या, चिदा० ॥ ४ ॥
त्रिदंढे त्रिखंढे हरे विश्वव्यापं, हृषीकेश विध्वंस
कर्मारिजाल । न पुण्यं न पापं न अज्ञान प्राणं,

चिदा० ॥ ५ ॥ न बाह्यं न ह्य्य न विश्राय सूडो, न
 क्वेद न मेव न मूर्तिर्न मोहो । न कृष्णं न शुक्लं न
 मोहं न तन्द्रा, चिदा० ॥ ६ ॥ न आद्यं न मार्यं न
 अन्तं न मन्था न तृष्य न शेभं न दृष्टी न मन्था ।
 न सुर्वो न शिष्यो न आश्रयो न दीर्न, चिदा० ॥ ७ ॥
 इदं ज्ञानरूपं अयं तत्त्ववेदी न पूर्यं न शुभ्य स चै
 तन्य रूपं । अन्यो विमिथं न परमार्थमिदं चिदा०
 ॥ ८ ॥

॥ शार्ङ्गविद्येति ॥

आत्मारामगुहाकरे गुह्यनिधिर्भैरवस्तथाकरा ।
 सर्वे भूतगतागते सुखबुक्ताख्याता त्वया स्वयेन ॥
 त्रिलोक्याधिपति स्वय स्वमनसा व्यायन्ति योगीश्वरा
 नन्दे तं हरियशहपद्भयं धीमान् भूष्युता ॥ ९ ॥



२२ श्री घन्टाकर्मा स्तोत्रम् ।

ॐ घन्टाकर्मा महावीर सर्वेष्याधिपतिनाथका ।
 त्रिकोटकर्मणं प्राप्त रक्ष रक्ष महापला ॥ १ ॥

यत्र त्वं तिष्ठसि देव लिखितोऽनगपंथितमिः ।
 रोगास्तत्र प्रणश्यंति वातपित्तकफोद्भवः ॥ २ ॥
 यत्र राजभयं नास्ति यंति कर्णो जपाजगत् ।
 शाकिनी भृत वैताल राजसाः प्रभवन्ति न ॥ ३ ॥
 नाकाले मरणां तस्य न च सर्पेण दश्यते ।
 अग्निचौरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्रीं वरटाकर्णो नमोस्तु
 ते ठः ठः ठः स्वाहा ॥४॥



२३. श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।

॥ श्लोक ॥

प्रणमामि सदा प्रभुपार्श्वेजिनं, जिननायक
 दायक सौख्यधनम् । धनचारुमनोहरदेहधर,
 धरणीपतिनित्यसुसेवकरम् ॥ १ ॥ करुणारस
 रजित भव्यफणी, फणिसप्त सुशोभित मौलिमणि ।
 मणिकंचनरूपत्रिकोटघटं, घटिता सुर किन्नर
 पार्श्वतटं ॥ २ ॥ तटिनीपतित्रोपगभीरस्वर,
 शरणागतविश्वश्रशेषतरं । नरनारिनमस्कृत

नित्य ग्वा पद्मावती गायतगीत सदा ॥ १ ॥ सत-
 तेन्द्रिय गोप यथा कमठं कमठासुर शक्य मुञ्च-
 दठ । इठहेति कर्म कृतास्तयस, बलधाम इरैर
 पद्मजल ॥४॥ अलज्जय पद्म पद्मा नपन सयवेरिठ
 भद्रपतरी समनं । मयमरधमहीरुह बहनिष्ठम,
 समता गुण एवमय परम ॥ ५ ॥ परमार्थ विद्यार
 सदा कुशल कुशलं कुच मे मिमनाय अरं । अलिनी
 मलिनी मज गीत तन तनुवा प्रभु पार्ष्णिजिनं
 सुधमं ॥ १ ॥

इतिशिविन ॥

सुधमधाम्पकर करुणापरं

परमसिद्धिकर वरदापरं ।

वरतर अम्बसेनपुसोत्तरं

मयमतां मधुपार्ष्णिजिनं शिर्षं ॥७७



२४. भक्तामरस्तोत्रम् ।

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा-

मुद्योतकं दलितपापतमोविनानम् ।

सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा-

वालम्बन भवजले पतता जनानाम् ॥१॥

यः संस्तुत सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा-

दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ।

स्तोत्रैर्जगत्त्रिनयचित्तहरैरुदारैः ।

स्तोप्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥२॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ !

स्तोतुं समुद्यतमतिर्धिगतत्रपोऽहम् ।

वालं त्रिहाय जलसंस्थितमिन्दुविम्ब-

मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

घक्तुं गुणान्गुणसमुद्र शशाककान्तान्

कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।

कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं

को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

नित्य ग्वा पद्यावती गायतगीत सदा ॥ १ ॥ सत
 तेन्द्रिय गोप यथा कमठं कमठासुर धारुस मुक्त-
 हटं । इठहोसि कर्म हठास्थयत्नं, बलधाम धरंर
 वहुत्तलं ॥४॥ अहाजस्य पक्ष पमा मयन, मपनैरिठ
 मध्यतरी समन । मममत्थमहीरुह वहुनिसम,
 समता शुभ गलमयं परमं ॥ ५ ॥ परमार्थं विचार
 सदा कुशल कुशलं कुक मे जिमनाय अलं । अग्निषी
 मखिबी मज नील तनं सनुता मभु पार्वैजिन
 सुधर्मं ॥ ६ ॥

पुनश्चिन्तित ॥

सुधमधायकर कज्यापरं
 परमसिद्धिकर दववापरं ।
 वरतर अम्भसेमपु लोभ्य
 मयमूर्ता मभुपार्वैजिनं शिष्य ॥ ७ ॥



दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ॥९॥
नात्यद्भुत भुवनभूषण भूतनाथ
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसम करोति ॥१०॥
दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत् ॥११॥
यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ।
तावन्त एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपर न हि रूपमस्ति ॥१२॥
वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि
नि शेषनिर्जितजगन्त्रितयोपमानम् ।
विस्वं कलङ्कमल्लिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥१३॥

सोऽहं तथापि तत्र भक्तिवशात्सुखीय !

कर्तुं सर्वं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।

प्रीत्यात्मधीर्वमधिचार्यं मृगी मृगेन्द्रम्

नाम्प्येति किं निवृत्तिशोः परिपात्रमार्धम

अरुपमुत भुतवतां परिहासयाम

त्वद्भक्तिरेव मुक्तीकुवते बलत्पाम् ।

यात्कोकिलः किल मधी मधुरं विरीति

तथात्सूतकसिकाभिकरेकहेतुः ॥६॥

न्यात्संस्तवेन भवमस्ततिसचिपयर्च

पार्यं चखात्कयमुपैति शरीरमात्राम् ।

आत्मान्तसो क्मस्त्रिनीलमशेषमाद्य

सूर्याद्यभिन्नमिदं शरीरमन्यकारम् ॥७॥

मत्प्रेति नाद्य तत्र संस्तवम मयेव-

मारभ्यते तमुचिषापि तत्र प्रमावात् ।

चेतो हरिण्यसि सतां नक्षिमीदलेषु

मुक्त्वाफलघृतिमुपैति ननुवविन्दुः ॥८॥

आस्तां तत्र स्तवमस्तसमस्तवीर्यं

न्यात्संकथापि अगतां पुरितानि हन्ति ।

विभ्राजते तव मुखाञ्जमनलकान्ति,
 विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकविभ्रम् ॥१८॥
 किं शर्वरीषु शशिनाहनि विवस्वता वा
 युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ।
 निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
 कार्यं कियञ्जलधरैर्जलभारनम् ॥१९॥
 भानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
 नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
 तेजः स्फुरन्मणिषु यानि यथा महत्त्वं
 नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥
 मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्ट्वा
 दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ।
 किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य-
 कश्चिन्मनो हरति नाथ भवान्तरेऽपि ॥२१॥
 स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
 नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
 सर्वा दिशो दधति भानिसहस्ररश्मि
 प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

श्यामाममन्त्रि मुनय परम पुमांस-
मादिस्वर्षममस्त तमस्तः पुरस्तात् ।

त्वामेष सस्यगुणसम्प जपन्ति मूर्ख्यु
नाम्पः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र पम्पा १२१

स्यामस्यय विमुमविस्त्यमसंक्षयार्थ
प्रह्लादमीश्वरमनन्तमनङ्गाकेतुम् ।

यागीश्वरं विदितयोगमनेकमेष्टं

घानस्यरूपममस्तं प्रपदन्ति सस्त ॥२४॥

बुधस्यमेव विबुधाश्चित्तपुत्रिबोधात्-
स्वं शंकरोऽसि मुपनबपशकरत्यात् ।

घातामि पीर शिवमार्गविधेर्विधानात्
व्यक्त स्वमेव मगबन्पुङ्गवोत्तमोऽसि ॥२५॥

तु ये नमन्त्रिभुषमार्तिहराय नाथ

तुभ्यं गम शिन्तितकामस्तमुपखाव ।

तुभ्य नमन्त्रिजगत परमेश्वराय

तुभ्यं नमो जिन मषोदधिगोपखाव ॥२६॥

का विष्णव्यान्त्र यदि नाम मुक्षिरशेरी-

स्वं मधिता निरवकाशतया मुनीश ।

दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः

स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख-

माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् ।

स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं

विभ्रं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥२८॥

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे

विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।

विभ्रं वियद्विलसदशुलतावितानं

तुङ्गोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदातचलचामरचारुशोभम्

विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ।

उद्यच्छशाङ्कशुचिनिर्भरवारिधार-

मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्रत्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-

मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम् ।

सुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभम्

प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

गंभीरताररवपूरितदिग्दिग्भाग-

म्भैलोक्यसोकशुभसंगमभूतिदधः ।

मठर्मराजजयघोषघोषकासम्

जे दुधुमिर्ष्यमति ते यशसः प्रवादी ॥३३॥

मदारसुभ्रनभेठसुपारिजात-

संनानकादिहसुमोत्करवृष्टिदया ।

गंभोदविम्बुशुभमंभमकल्पपाता

दिष्ट्या दियः पतसि ते यथसां ततिवै ॥३४॥

शुभ्रप्रभाबलयमूरिभिमा तिमोस्ते

लोकवपद्युतिमतां युतिमाधिपंती ।

घोषदिघाकरमिरंतरभूरिसंख्या

दीप्त्या जवत्यपि निशामपि सोमसौम्यां ॥३५॥

स्वर्गावय गममार्गेविमार्गेष्टेष्टः

मठर्मनककयमं कपद्रुष्टिबलोक्याः ।

दिष्ट्यवनिभवात तं विशदार्थसर्ष-

भापास्वभापपरिलामगुह्यैः प्रबोड्या ॥३६॥

इष्टिद्रष्टमनवपद्रु जपु जगन्ती

पशुजसचम्भमगुन्वजिगामिगामी ।

पादौ पदानि तद्य यत्र जिनेन्द्र धत्तः

पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥३६॥

इत्थं यथा तव विभृतिरभूज्जिनेन्द्र

धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।

यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा

तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विक्राशिनोऽपि ॥३७॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल-

मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ।

एरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं

दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥३८॥

मिन्नेभकुम्भगलदुज्ज्वलशोणिताक्ल-

मुक्ताफलप्रकरभूपितभूमिभागः ।

वद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि

नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३९॥

कल्पान्तकालपवनोद्धतवह्निनकल्पं

दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् ।

विश्वं जिघत्सुमिध सम्मुखमापतन्तं

त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

रफतेक्षया समदकोकिलकण्ठनीलं
 क्रोषोद्यतं फणितमुत्फुल्लमापतन्तम् ।
 आश्रमति क्रमयुगेण निरस्तपु-
 स्यधामनागदमनी इति यस्य पुंसः ॥४१॥

वहगस्तुरङ्गजगर्जितमीमसाद्-
 माजौ वल्ल वल्लपतामपि भूपतीनाम् ।
 उद्यद्विधाकरमयूकयिखापविशम्
 त्वत्कीर्तनात्तम इयम्पु भिदामुपति ॥४२॥

कुन्तामभिभगजशोयितवारियाह-
 वेगापनारनखातुरपोषमीमै ।
 युञ्ज जय विजितवुर्जपजियपता-
 स्त्वात्पावपपुत्रवनाभयिसो लभन्ते ॥४३॥

धम्मोतिषी कुभितमीपचमकचह-
 पाठीनपीठमयवोल्पचवाचवागी ।
 रत्नतरङ्गशिकरन्ध्रिषठयामवाचा-
 त्वान् विहाय भवत स्मरत्याद् मञ्जति ॥४४॥

उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्ना.

शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ।

त्वत्पादपङ्कजरजोऽमृतदिग्घदेहा.

मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपा ॥४५॥

श्रापादकरुणमुखंखलवेष्टिताङ्गा-

गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघा ।

त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः

सद्यः स्वयं विगतबंधमया भवन्ति ॥४६॥

मत्तद्विपेन्द्रमृगराजदवानलाहि-

संग्रामवारिधिमहोदरबन्धनोत्थम् ।

तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव

यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४७॥

स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां

भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।

धत्ते जनो य इह करुणगतामजस्रं

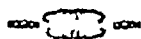
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मी, ॥४८॥



२५ पारवेनाथ स्वामी छव ।

विनि मंगलमुकुटं धर्मक निकटं विश्वा प्रगटं
 नाह भटं । नवरेणु समीर नील शरीरं सुर गुह
 पीर गंभीर ॥ अगति अग शरसु कुर्मति हरण पुत्र
 अरु सुख करुण । श्री पारबै जिनेद्रं नित नागेन्द्र
 नमत सुरेन्द्रं कृत भद्रं ॥ १ ॥ देह पुत्रि धारं सुभगा
 कारं विश्वाधारं गुह धारं । शिव रमणी
 रफतं पग विरफतं संकठ मुफतं गुह पुफनं ॥
 कमठे नम दक्षनं गजगति बलनं केपल कमल
 श्रीबिमल । श्री पारबै जिनेद्रं नित नागेन्द्र नमत
 सुरेन्द्रं कृत भद्रं ॥ २ ॥ महिमा दिन कारं भय
 निस्तारं निश्चितधारं वाधारं । प्रतिभय मैतारं
 गन संमार जितार चातारं ॥ इन्दुमे असरुवने
 कुर्मति डलन संमति मदनं गुह नदनं । श्री पारबै
 जिनेद्रं नित नागेन्द्रं नमत सुरेन्द्रं कृत भद्रं ॥ ३ ॥
 पाम श्री अद्य निर्मल पद्य हन जिनरुहं जिनमोहं
 शिव नमना हारं सफल विहारं मुकुट विहारं
 सुखकारं ॥ पारणी धर नम्य अगस्यगम्यं

रम्यारम्य शहरम्भं । श्रीपार्श्वे जितेन्द्र निव नागेन्द्र
नमत सुरेन्द्र कृत भद्रं ॥४॥



२६. छंद त्रिभंगी शान्तिनाथ का ।

गजपुर श्रवतारं, शान्ति कुमार, शिवदातार,
सुखकारं । निरुपम आकारं, रुचिगाचार, जगदा-
धारं, जितमारं ॥१॥ कृत श्ररिसहारं, महिमापारं,
विगत विकार, जगसारं । परहित ससारं, गुन
विस्तार, जग निस्तारं, शिवधारं ॥२॥ श्री शान्ति
जिनेश, जगत महेशं, विगत कलेश, भद्रेशं । भविक-
मल दिनेशं, मति महिसैवं, मदनमहेशं, परमेशं ॥३॥
जनकुमदनिशेशं, रुचिरादेशं, धर्मधरेशं, चक्रेशं
भवजल पोतेशं, महिमनगेशं, निरुपमवेशं, तीर्थेशं
॥४॥ वर रूप श्रमानं, श्ररितमभानं, निरुपम ज्ञानं,
गतमानं । गुन गणउत्थानं, मुक्ति वितानं, लोक
निदानं, संधानं ॥ ५ ॥ भवि तारन स्थानं, कृपा
निधानं, जगत प्रधानं, मतिमानं । प्रगटित कल्याणं

वर महिमानं शिष्यपदवानं मगजानं ॥६॥ मी
 भवजाल जितकलिकालं कीर्ति विद्यालं त्रिमप
 गति विजित मराल परिकुलकालं यवन रर
 धरमान ॥ ७ ॥ मुनि जलज सृणालं मव भयत
 शिष्यउर मालं सुकुमालं । भवि तर रर
 त्रिभुवन पावं बान विद्यालं गुनमालं ॥८॥



२७ श्री पार्श्वनाथ ।

(विष्णो वर)

शिष्यसुखदातार विभवाघारं सीक्याका
 नेतार जितमदनविकार करुणागारं इतरिपुषारं
 जेतारं ॥ इतमबमिस्तारं परमोदारं स्ववनापारं
 जालार । गुणपागयारं कीर्तिस्वारं केयलपारं
 धातार ॥ १ ॥ आनवासकन तोपितमकतं वष
 ि युक्त सुख्यकतं । मयमत्सरमुकतं तारख सकतं
 विषयविरक्त शिष्यरक्तम् । अय्याहवमद्रं धैर्यगिरीम्द्रं
 वमा समुद्रं सम्मुद्रं ॥ मुख निजित चन्द्रं मखत

सुरेन्द्र महामुनीन्द्रं निस्तन्द्रं ॥ २ ॥ सुखदायि-
 स्मरणांडु खितशरणां वन्दितचरणां विगतमदम् ।
 कृतदानोद्धरणां कलिमलहरणां विमलीकरणां
 प्रवरपदम् ॥ प्रकटीकृतविनय दर्शितसुनय
 प्रवचननिलयं सुगुणमयम् । अगणितगुण-
 निचयं मुनिजनहृदयं पार्श्वजिनं जयक्षपित-
 भयम् ॥

२८ अथ ऋषभदेव छन्द ।

(मायकाल का)

परम अलक्षहि त्रय जग चक्षुहि, संघसुपक्षहि
 अक्षवते । प्रभु अवियोगी आदि वियोगी, स्वय
 सुपयोगी संघ कृते ॥ ऋषभ निरञ्जन सब दुख
 भञ्जन, हे मनरञ्जन सुध वित्ते । जय जय हो
 अमराधिप् वन्दन, कर्मनिकन्दन नाभिसुते ॥१॥
 मुरुदेवीनन्दन अनिद हि-कंदन है ढिगचन्द
 हिमन्द दुते । तनकनकाचलचम्पक लीकल दीप-

शिकादलम्बच्छुषते ॥ निरकत ह्य प्रकर्म बधि,
 वृत्तजाल वितकत मार्कयते ॥ अथ ॥ २ ॥ यद् अर-
 विद्विं वृम्ब चिन्तित धम्बत वृम्ब सुरम्बतिते ।
 जुग सुम संछन बद्धित वृम्बन म्बच्छ प्रतम्ब
 स्यम्बम्बधिते ॥ सद्धि अपपरगद्धि वीर्न सुक न सहे
 ममपरगद्धि म्यगपते ॥ अथ ॥ ३ ॥ दर्शन केवल
 कबल ज्ञानति केवल राग विराग विरोधरते ।
 अनिशय लापक व्यक्त लहायक मुक्ति मदापक
 मुक्ति पते ॥ मव अम जाल कपाल इलिततकाल,
 मृशाल दम्बाल पते ॥ अथ ॥ निरजर कोट पलाटत
 पाप निरस्तर चीट अम्बुट बते । सिरहिय वृत्र
 विन्विध र्हे अकरज पवित्र मद्यत्र पते ॥ इम
 महिमा रूप अनूपगते प्रतिहार ज्यो जिमपज
 जुते ॥ अथ ॥ मव जग जीवन जीवन मूलद्धि धर्म
 मृजीवन इम्बुपते । यह भव सागर भागर ते
 गद्धि म्बग्द नापसु पारजुते ॥ तुम विध रूप
 कपाल अनूप शरसागत सिख सरूपकृत ॥ अथ ॥
 प्रभु गुण भागर पार म्बानिति र्मुञ्ज धारज

पारगते । निम पदहीन अपंग निरन्तर चढे गिरि
अद्ग उतंगनते ॥ इमहिज हो बुद्धि हीन अधीन,
यह यतकीन क्षमा कुरुते ॥ ७ ॥

॥ इति ऋषभदेव छन्द ॥



२६. साधु गुण ।

। छन्द त्रिमयी ॥

गहे सुमानं, धरत ही ध्यानं, मरदत मानं, बड
भारी । दुर्मतिसे दूरा, संजमसूरा, कथे न कूडा,
अणगारी ॥ परहरिया प्रेमा, निर्मलनेमा, हिरदे
हेमा, शुभचारी । तपस्या तन तावे, अघ उडावे,
धन २ साधु गुणधारी ॥ ॥ सुख सेजां सूली, धन
हे धूली, अनमूली, उर लोभलता । नो कल्पनिहारी,
उग्रविहारी, कीधा भारी, मोक्षमता ॥ सम साकर
टाकर कंचन काकर ठाकर चाकर एकसारी ॥ त०
॥ २ ॥ दिल नहिं दभा, थिर मन थम्भा, अधिक
अचम्भा, गुणगेह व्रत पाले धम्भा, रमे निरंभा भल

पक्ष अम्मा अग जेहू ॥ ऊमण्य चारमा, पया निरमा,
 लुडे लम्पा अक्षपारी ॥ त० ॥ ३ ॥ युम कारज सारब,
 विपन विहारसु आनम तारण आप अपे । अप
 मर जारे न्यूना हारे मर्क नियारे ताप तपे ॥
 वृश्मम अठदाठसु मनकी मारसु तप तकारी
 लेकारी ॥ त० ॥ ४ ॥ जीते मन ओषा काम विरोधा
 बैर विरोधा वेतक्षी । सब लुडे स्वार्थ उर उम्मार्व
 गमे न नार्थ रंगरक्षी ॥ भरजे विपयात्र पंचममार्व
 अर्थ इपार्व शृङ्गारी ॥ त० ॥ ५ ॥ बहुत व्यपारी,
 मारी मारी परसु विचारी वेता है । प्रेपङ्गेमायक
 पाने पायक चीअसु बायक वेता है ॥ धर्म चीअ
 मकी धर भावे अक्षीपर बडे मुनीश्वर वरीशारी ॥
 त ॥ ६ ॥ एकक पदकाया मिथ्या माया अरिहल
 टाया नेक रही । अथ स्वाग अठारे, ममता मारे
 बावन घारे सत सही ॥ ईसा पति बाऊ, विचारे
 बाऊ अचिक उवाड उर डारी ॥ त० ॥ ७ ॥ सोमा
 सिद्धगाऊ उर अक्षगाऊ करे न काऊ वैद विधा ।
 अक्षपा सई अजे मेल न मंसे नब हक मंजे अर

सदा ॥ तज हॉसि तमासा, वेप विलासा, उरकी
आशा सब छारी ॥ त० ॥ ८ ॥ सतवीस सुरगा, गुण-
जल्लगंगा, ओपम अद्गा, शशि जैसा । भल वाणी
भाखे, दोप न दाखे, रात न राखे मनरेपा ॥
साधू गुण सांचा, वंद्या वाचा, जग में जाचा, सब
सारी ॥ त० ॥ ९ ॥



३०. शारदाष्टक ।

॥ छन्द मुजग प्रयात ॥

जिनादेश जाता जिनेन्द्रा विख्याता, विशुद्धा
प्रबुद्धा नमोलोकमाता, दुराचार दुर्नैहरा संकरानी,
नमो देवि वागीश्वरी जैनवानी ॥ १ ॥ सुधी धर्म
संसाधिनी - धर्मशाला, मुधातापनिर्नाशिनी मेघ-
माला, महामोहविध्वंसिनी मोक्षदानी, नमो देवि
वागीश्वरी जैनवानी ॥ २ ॥ अखै वृक्ष शाखा व्यती-
तामिलाषा, कथा संस्कृता प्राकृता देश भाषा, चि-
दानन्द भूपाल की राजधानी, ॥ नमो० ॥ ३ ॥ समा-

स्वामी, अमिन शक्ति भाण्डार ॥ सेवे० ॥१॥ कर
पण्डु कमण्डु अण्डु गुण, युक्त मुक्त संसार । पायो पद
परमिष्ठ तास पद, वन्दो वारम्भार ॥ से० ॥२॥ सिद्ध
प्रभु का स्मरण जग में, सकल सिद्ध दातार ।
मन वाञ्छित पूरण सुर-नर मम, चिंता चूरण
हार ॥ से० ॥ ३ ॥ जपे जाप योगीश रात दिन,
ध्यावे हृदय मभार ॥ तीर्थङ्कर हृ-प्रणमें उनको,
जय होवे अणगाग ॥ से० ॥४॥ सूर्योदय के समय
भक्तियुत, स्थिरचित्त दृढ़ता धार । जपे 'सिद्ध'
यह जाप तास घर होवे ऋद्धि अपार ॥ से० ॥५॥
सिद्धस्तुति पढ़े भाव से, प्रति दिन जो नरनार ।
सो दिव शिव सुख पावे निश्चय, बना रहे सरदार
॥ से० ॥६॥ माधव मुनि कहे सकल संघ में, बड़े
हमेशा प्यार । विद्या विनय विवेक ममन्वित, पावे
प्रचुर प्रधार ॥ से० ॥७॥



तणे । अडवडियां तुँ आधार कह्यो, समरथ साहव
 में आज लह्यो ॥७॥ दुखिया ने सुख दायक दाखे,
 अन्तरणे शरणे तूँ राखे । तुम नामे सङ्कट विकट
 टले । विड्वडिया वहाला आय मिले ॥८॥ नट विठ
 लम्पट दूरे नाशे तुम्ह नामे चोर चुगल घासे । रण
 राजल जयतुज नाम थकी, सघले आगल तुम्ह सेव
 थकी ॥ ९ ॥ यज्ञ राक्षस किन्नर सवि उरगा, करि
 केशरी दावानल विहगा । वध वन्धन भय सघला
 जावे, ते एक मने तुजने ध्यावे ॥ १० ॥ भूत प्रेत
 पिशाच छली न शके, जगदीश तवामिध जाप
 थके । मोटा जोटिंग रहे दुरे, दैत्यादिकना तुं मद
 चूरे ॥११॥ डायणि सायणि जाय हटकी, भगवन्त
 घाय तुज भजन थकी । कपटी तुज नाम लियां कंफे
 दुरजन मुख थी जी जी जंफे ॥१२॥ मानी मञ्जराला
 मुंह मोड़े तेपण आगलथी कर जोड़े । दुर मुख
 दुष्टादिक तूहि दमे, तुज नामे म्दोटा मलेच्छ नमे
 ॥१३॥ तुज नामे माने नृप सबला, तुज जश उज्जल
 जिम चन्द्र कला । तुज नामे पामे रिडि घणी, जय

अथ अयदीश्वर विजगत धरणी ॥ १४ ॥ विठामधि
 काम समी पामे इयगय रय पाबक तुड शामे ।
 जनपद दुकगार्हे रू भाधि, बुर्जम शारिहर कधि ॥
 ॥ १५ ॥ विर्यम नै तू धनपस्त करे, तुळ्यो कोठार
 मंडार मरे । धर पुत्र कसब परिवार धर्यो, ते सहु
 महिमा तुम्ह नाम लखो ॥ १६ ॥ माखिक मोठी एत
 अरुपा सोबन मूयस पडु सुचड धर्या । बडि पडे
 रण सवरंग नेप धर्या तुम मामे मधि रहे कीर्
 मला ॥ १७ ॥ वेरी विठला मधि ताकि शके बली-
 कोर बुगल मनकी धमके । सुल विद्र कदा केवमो
 न बने, मिनराज सदा तुम उधोसि जने ॥ १८ ॥ इग
 ठाकुर सब धर हर कंये पाखंडी पल को मधि
 फरके । मंत्रापविक्त सहु मासी जावे मारण तुज
 अपतां अथ धावे ॥ १९ ॥ अह मूरत के मति दिव
 बली अज्ञान निमिर तस जाय रली । तुज सुम-
 रण धी शाया धाप, पंडित पद पामी पूजाय ॥ २० ॥
 कस कांसि लपन पीडा नासे सुरबल मुख दीन
 पलु शासे । गद गुबद कुपलीके सबला, तुज जावे

रोग समं सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिराय
 जिके, तुज ध्याने गत दुख जायतिके । तनु कांति
 कला सुविशेष वधे, तुज स्मरण से नवनिधि सधे
 ॥२२॥ करि केशरी अहिरण बंधसया, जल जलण
 जलोदर अष्ट भया । रांगण पमुहा सब जायटली,
 तुज नामे पामे रग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हे श्रीं
 पार्श्वनमो, नमि उण जपंता दुष्टदमो । चिंतामणी
 मन्त्र जिके ध्यावे, तिण घर दिन दिन दोलन धावे
 ॥२४॥ त्रिकरण शुद्ध जे आराधे, तस जस कीर्ति
 जगमां थांधे । वलि कामित काम सवे साधे, स-
 मिहित चिंतामणी तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर
 मन श्री दूर नजे, भगवन्त भलीपरे जेह भजे । तस
 घर कमला किल्लोल करे, वलिराज्य रमणी बहु
 लीलवरे ॥२६॥ भय वारक तारक तं प्राता, सज्जन
 मनगति मतिनो दाता । मात तात सहोदर तं
 स्वामी, शिव दायक नायक हित कामी ॥ २७ ॥
 करुणा कर ठाकुर तं म्हारो, निशिवासर नाम जपूं
 त्हारो । सेवक हूं परम कृपा करजो, बालेश्वर

अथ अगदीभर विजगत धर्षी ॥ १४ ॥ चिंतामणि
 काम सभी पामे हयगय रथ पायक तुज नामे ।
 जनपद दुकगई तू भापे दुर्जन दारिद्र कपि ॥
 ॥ १५ ॥ निर्धम ने नू धनधस्त करे, तुष्टयो जोडार
 भंडार मरे । घर पुत्र कलत्र परिवार धणो ते सहु
 महिमा तुम्ह नाम लखो ॥ १६ ॥ मायिक मोठी रत्न
 अख्या सोधत मूरुग बहु सुघट घट्या । बलि पडे
 रण मधरंग बेप धखा तुम नामे नदि रहे कोई
 मया ॥ १७ ॥ बेरी बिरुआ नदि ताकि शके पक्षी-
 थोर युगल मतधी धमके । छस विद्र कदा कैदमो
 न हणे जिनपद्य सदा तुम श्पोति अगे ॥ १८ ॥ ठग
 डाकुर सब घर हर कंये पाखंडी पख को नदि
 फरके । सुहारादिक सहु नासी खाबे मारग तुज
 खपता अय धाबे ॥ १९ ॥ अड मूरुख पै मति द्विन
 पक्षी अज्ञान तिमिर तस जाय टक्षी । तुज सुम-
 रण थी आद्या धाप, पंडित पद् पामी पूजाय ॥ २० ॥
 कस खांसि खपन पीडा नासे दुरबल मुख हीन
 पर्यु आसे । गड गुबड कुपणीके मरसा, तुज जाये

रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा बहिराय
 जिके, तुज ध्याने गत दुख जायतिके । तनु कांति
 कला सुविशेष वधे, तुज स्मरण से नवनिधि सधे
 ॥२२॥ करि केशरी अहिरण बंधसया, जल जलण
 जलोदर अष्ट भया । रांगण पमुहा सब जायटली,
 तुज नामे पामे रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं
 पार्श्वनमो, नमि उण जपंता दुष्टदमो । चिंतामणी
 मन्त्र जिके ध्यावे, तिण घर दिन दिन दोलन थावे
 ॥२४॥ त्रिकरण शुद्ध जे आराधे, तस जस कीर्ति
 जगमा बांधे । वलि कामिन काम सवे साधे, स-
 मिहित चिंतामणी तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर
 मन थी दूर तजे, भगवन्त भलीपरे जेह भजे । तस
 घर कमला किल्लोल करे, वलिराज्य रमणी बहु
 लीलवरे ॥२६॥ भय वारक तारक तूं प्राता, सज्जन
 मनगति मतिनो दाता । मात तात सहोदर तूं
 स्वामी, शिव दायक नाथक हित कामी ॥ २७ ॥
 करुणा कर ठाकुर तूं म्हारो, निशिवासर नाम जपूं
 त्हारो । सेवक हूं परम कृपा करजो, बालेश्वर

पश्चित फल देज्यो ॥२८॥ जिनरात्र सदा तूं जय-
 कापी मुञ्ज धरति अमि मोहनगारी । मुगति महे-
 तर्मा तू गजे, त्रिभुवन ठकुराई मुञ्जहाजे ॥ २९ ॥
 इम भाव मले जिनवर गापो, यामा सुत देखी बहु
 सुख पापो । एहि शशि मुनि संबन्धर रंगे, जय-
 देय सुत्तमां सुख संगे ॥ ३० ॥ जय पुढयादाणी
 पारबैप्रभो, सकलार्थ नमिहित दोहियिमो । पुष
 हर्ष रुचि विजयाय मुदा तव सम्भिरुची मुञ्जघाय
 नदा ॥ ३१ ॥



३३ पैमठिया पत्र ।

२२	३	६	१६, १६
१४	२	११	२ ८
१	७	१३	१६ २६
१८	२५	६	३ १९
१	१७	७	२३ ४

भी मैमीभर सम्भव स्वाम
 सुयिधि धर्म शान्ति अमिराम ।
 अलन्त सुमन नमिनाथ सु-
 ज्ञान, भी जिनवर मुञ्ज कगे
 करपाम ॥ १ ॥ अत्रिठनाथ

बन्दाप्रमु पीर भादेभर सुपार्थ गमीर । विमल-

(७५)

नाथ विमल जग जान, श्री जिनवर मुज करो
कल्यान ॥ २ ॥ मल्लिनाथ जिन मंगलरूप, पञ्चीस
धनुष सुन्दर स्वरूप । श्री अरनाथ नमूं वर्धमान,
श्री जिनवर मुज करो कल्यान ॥ ३ ॥ सुमति पद्म
प्रभु अवतंस, वासुपूज्य शीतल श्रेयांस । कुन्थु
पार्श्व अभिनन्दन भान, श्री जिनवर मुज करो
कल्यान ॥ ४ ॥ इण पर जिनवर सम्भारिये, दुख
दारिद्र विघ्न निवारिये । पञ्चीसे पेसठ परमान,
श्री जिनवर मुज करो कल्यान ॥ ५ ॥ इम भणता
दुख नावे कदा, जो निज पासे राखे सदा । धरिये
पंच तणुं मन ध्यान, श्री जिनवर मुज करो कल्यान
॥ ६ ॥ जिनघर नामे वंचिछुत मिले, मनवांचिछुत
सहु आशा फले । धर्मसिंह मुनि कहे नाम निधान,
श्री जिनघर मुज करो कल्यान ॥ ७ ॥



३४ पैसठ यत्र उद्धार जिन यत्र ।

॥ वन्द्य ॥

रठ नेमी नन्दय सुबिधि धम शांति जिन देवा ।
 अनन्त सुप्रथ नमि अजिन शशि आदेय प्रसेधा ॥
 सुपारये विमल धीमन्त्रि धनुष तन द्वि पञ्चवीर्य ।
 अर भीर सुमति सुपन्न वासुपूज्य हैं अगनीश ॥
 शीतसांश भीकुम्पु जिन पारस अमिनदन धिमो ।
 पैसठ यत्र बीबीस जिन सूर्य सुमर सुखकर प्रमोद



३५ पैसठ यत्र मय जिन स्तुति ।

॥ वन्द्य ॥

१६	८	१	२४	१७
१६	१४	७	५	२३
२२	२०	१३	६	४
३	२१	१६	१२	१०
६	२	२६	१८	११

धर्म बन्धु जिन शूयभ बीर कुपु प्रभु श्यंती ।
 धर्मत सुपान्न भी सुमति पार्श्व वपु मोमित कांती ।

नेमी मुनि सुव्रत विमल पद्म अभिनन्दन वन्दौ ।
 संभव नमि जिन मलिल वासुपूज्य तिहुँ जग चन्द्रौ ।
 मीतल सुविधी अजित जिन भावन पञ्चिस भाइये ।
 अर श्रेयांश चौबीस जिन पैसठ यंत्र युत ध्याइये ।१।



३६. पार्श्वनाथ छंद ।

सकल सार सुरतरु जग जाणं, जग जस वास
 जगत प्रमाणं । सकल देव शिर मुकुट सुचंगं,
 नमो नमो जिनपति मनरग ॥१॥ त्रिभगी ॥ जिनपति
 मनरंगं, अकल अभंगं, तेज तुरंगं नीलंगं । सुर-
 शोभा संग, दग्ध अनंगं, शीश भुजंगं, चतुरंगं ॥
 ॥ २ ॥ बहु पुण्य प्रसंगं, नित उद्धरंगं, नवनव रंगं,
 मरदंग । कीरति जलगग, देश दुरंगं, सुरनर संगं,
 सारंगं ॥ ३ ॥ सारंगा चक्रं, परम पवित्रं, रुचिर
 चरित्रं, जीवित्रं । जगजीवन मंत्र, पंकजपत्रं, निर्मल
 नेत्रं, सावित्रं ॥४॥ सावित्रा चरणां, मुकुटा भरणां,
 त्रिभुवन शरणां, आचरणां । सुरअर्चित चरणां,

शरिद हर्षणं शिषसुखकरणां, महाधरणां ॥ १ ॥
 अथ द्विजवर मन्त्रं नाशुत शर्म मन्त्रामन्त्रं, महा-
 मन्त्रं । विश्वे अथवर्तं चामर सुत्र शीत धरणां
 पायित्रीं ॥ ६ ॥ गोधमूलकरणां भवजलतरणां, अन-
 मन मरणां, उदरणां । सुख सन्गति करणां अथ-
 मन्त्रहरणां यत्साधन्यां भावहरणां ॥ ७ ॥ भावहरणां
 पालं भाक भ्रमां निग भ्रवां, उजियास ।
 अथम शशिमां देव क्यास विश्वे चाल सुकु-
 मास ॥ ८ ॥ शशुगार रसास, महके मां, एति सु-
 विशाल भ्रवास । रिपु दुर्मन्त्रास चमा कुदास,
 मोह कराल भयटास ॥ ९ ॥ त्रिभुवन रथावास, काल
 दुकास महापिकरास, भुटास । महागुणधारे,
 मधिकाधारे, अगदाधारे निर्धारे ॥ १० ॥ तुम विश्व
 विश्वारी अरुह हमापी वारी धारी अथधारी ।
 तुम शर्म पां, अथ म पां, इक्षमव परेभव
 सुखधारी ॥ ११ ॥ आनन्दरस पूरे संकट पूरे
 रंगल मां सुविशालं । इह अन्वसु गाथे, आनन्द
 पाथे संकट गाथे लनकाथे ॥ १२ ॥

॥ छप्पय ॥

सकल स्वरूप उदार मार सम्पति मुखटायक ।

रोग शोक मंताप पाप सब दूर नावरक ॥

चहुँ दिशि आण अखण्ड तपे जिम तेज दिनन्दो ।

नमें अपसरा क्रोड जस गावे सुर इन्दो ॥

तेविसमो जिनवर मलो अधिक अधिक मगल निलो ।

मुनि मेघराज इम विनवे प्रभु पार्श्वनाथ त्रिभुवनतिलो ॥

३७. नवकार महिमा का सवैया ।

जग में सरजीवन जड़ी, पंच नवकार मंत्र,
 वार वार जपिये, क्षण न भुलाईये । सोवत उठत
 मुख, जोवत प्रदेश मांही, रण में भुजंग सिंह,
 देखी न डराईये ॥ सङ्कट न पड़े भूत व्यंतर कोई
 नहीं छले; जले न अगन, भवोदधि तिर जाइये ।
 कहत है विनोदीलाल, तांको कहां स्वर्ग दूर; जिन
 ने नवकार मन्त्र, मन बीच ध्याइये ॥ ॥ हिंसा के
 करैया, मुख भूँठ के बोलेया; परधन के हरैया,

कठपुत्र म कङ्कू किया है । रानी के सखिया, मधु-
 पान के पिसेया, कुडी सास के मरेया, कठोर
 अति दिया है ॥ नरक के ज्योया परचाम के रमेया
 कन्ध मूस के मखिया जाने भीर पाप किया है ।
 तेहु तिरजात द्विध, एक में बिनोदीलास, जितने
 नषकार मंत्र अन्त कास किया है ॥ २ ॥ कोड के
 बलवेधता, भूत प्रेत असुरम को, कोड के बल बंडी
 मुडी देध सेवपास को । कोड के बल गावरे को,
 कोड के बजाय वे को, कोड के कमाववे को, कोड
 के उधार को । कोड के बल लड़वे को, कोड के
 बल मरवे को, कोड के बल मारवे को, पांचे हबि
 पार को । कहत है बिनोदीलास अपता में तीनों
 कास; मेरे तो अखूद बल मन्त्र नषकार को ॥ ३ ॥
 कोड के तो धन हैं जी रुपया में मोर घणी, कोड
 के तो देखियेजी कज्जम मंडार हि ॥ कोड के रतन
 माल कोड हीरा मोतीकास, कोड के पस्तु धार,
 द्रव्य अपार है ॥ कोड के तो धन धान कोड के
 तो खेत पायु, कोड के है दापी घोड़ा, कोड के

परिवार है । कहत है विनोदीलाल जपता मैं तीनों
 काल, मेरे तो अखूट धन, मन्त्र नवकार है ॥४॥
 अरिहन्तजी के जपे से, अष्ट कर्म को नाश होय,
 सिद्धजी के जपे से, अरूपी पद पाइये । आचारज
 जी के जपे से, आत्म स्वरूप दीसे, उपाध्याय
 जप्यां सेती, ऊँची गत जाइये ॥ सर्व साधुजी के
 जपे, शिव मारग बताय देत, इह लोक परलोक,
 अति सुख पाइये, कहत है विनोदीलाल, जपता
 मैं तीनों काल नवकार मन्त्र जपे सदा सुख पाइये
 ॥ ५ ॥

३८. बीस विहरमानों के नाम ।

॥ वीर छन्द ॥

श्री सीमंधरे युग बाहु सुबाहु, सुजात स्वयं-
 प्रभु रूपमानन । अनन्त सुरप्रभु विशाल वज्रधर,
 शिव सुखकारन चन्द्रानन ॥ चन्द्रवाहु भुयंग
 ईश्वर नमि, वीरसेन महाभद्र जिणंद । देवजस
 और अजित वीर्य, यह बीस जिनेश भजो सुख-
 कन्द ॥



३९. ग्यारह गणपतों के नाम ।

॥ हरिकीर्त ॥

श्री इन्द्र भद्रि वायुमूर्ती, व्यूह नायक गुरुपती ।
स्वामी सुपर्मा महिष्ठ मौर्य पुनि कल्पित गुरुपती ।
भ्राता अच्युत मेठार्यमुनि, एते सदा सुख भारती ।
परमास एकादशगणी शीघ्रे सदा सुख सम्मती ॥१॥

४०. सोलह सतिपों के नाम ।

॥ हरिकीर्त ॥

वासीसुवन्दनवासिष्ठा एकीमती पुनि द्वौपदी ।
भूदा सुमद्रा सुन्दरी सुलखा शिवा सीता सती ।
दमर्यति श्रीशक्या मृगा पद्मावती परमावती ।
हैवादिषोडशमगवती ध्याओ सदा बहती रती ॥१॥



४१. चार शरणा ॥

प्रह उठीने समरिये, हो भवियण मंगलिक
 शरणा चार । आपदा मिट संपदा हुवे ही भवियण
 दोलतनां दातार ॥ १ ॥ हृदय मां राखीये हो
 भवियण मंगलिक शरणां चार ॥ टेक ॥ अरिहन्त
 सिद्ध साधु तणा, हो० केवली भापित धर्म । ए
 शरणां नित ध्यावतां, हो० तुटे आठों कर्म ॥ ह०
 ॥२॥ वाटे घाटे चालतां, हो० रात दिवस मभार ।
 गाम नगर पुर विचरतां, हो विघ्न निवारण हार
 ॥ ह० ॥ ३ ॥ ए चारों सुख कारिया, हो० ए चारों
 जयकार ए चारों उत्तम कष्टा, हो० ए चारों हित
 कार ॥ ह० ॥ ४ ॥ डायण सायण भूतडा, हो०
 सिंह चित्रा ने सूर । बैरी दुशमन चोरटा, हो०
 रहे ते सघला दूर ॥ ह० ॥ ५ ॥ राखो शरणारी
 आसता, हो० नेडो नहीं आवे रोग । आनन्द
 वरते इण नामथी, हो० व्हाला तणो संयोग ॥ ह०
 ॥ ६ ॥ सुख साता वरते घणी, हो० जे ध्यावे नर

कार । पर मय जाता एव जीयने, हो० एह तयो
 आघार ॥ इ० ॥ ७ ॥ मन चित्तित मनोरथ फले,
 हो० बरते करोक कस्याव । एह मन से व्यापता,
 हो० विषय पद निरवाण ॥ इ० ॥ एह एव सरीखो
 सरखो मही, हो० एव सरीखो मही नाम । एव
 सरीखो मित्र मही हो० गाम मगर पुर ठाम ॥ इ०
 ६६ ॥ ज्ञान शिवक तप भावना हो० जग में तब
 कार । करो आराधन भावहुं हो० पामो मोघ
 दुवार ॥ इ० ॥ १० ॥ जोक कीपी है कुगतहुं, हो०
 पाणी सेवे कास । अवि भीषमहारी हम भसे, हो०
 सुखको बाह गोपाक ॥ इ० ॥ ११ ॥

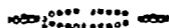


४२. जिनवाणी ।

उर्क-सीह ।

श्री जिनवाणी अति सुखदानी पठित पावन
 ज्ञान । टेर ॥ ज्ञान सुवायक अधमह भायक वायक
 दर्शन ज्ञान । परम ज्योति सुपावन कारक आर
 र्क पुण्यवान ॥ श्री० ॥ १ ॥ सुमति सुधारिणी कुमति

विशरिणी वाप निवारिणी जान । लक्ष चोरासी
टालूनी फेरे देई पद निर्वाण ॥ श्री० ॥२॥ बुडवा-
यासी अज्ञान कारण तार्या आसी ज्ञान । प्राण परा-
याचे नको घेऊं करुणा मनामधि आन ॥श्री०॥३॥
जिनवाणी उर आनी प्राणी अधम गये शिव थान ।
चम्पक मुनि जिनवाणी महिमा होतन एक जवान
॥ श्री० ॥ ४ ॥



४३. चौवीस जिन स्तवन ।

राग—भ्रमाती ।

प्रात ऊठ चौवीस जिनन्द को स्मरण कीजे
भाव धरी ॥ प्रात० ॥ टेर ॥ रिखव अजित सम्भव
अभिनन्दन, सुमति कुमति सब दूर हरी । पद्म
सुपास चन्दा प्रभु ध्यावो, पुष्पदन्त हरया कर्म
अरी ॥ प्रा० ॥१॥ शीतल जिन श्रेयास वासुपूज्य,
विमल विमल बुद्धि देत खरी । अनंत धर्म श्री
शांति जिनेश्वर, हरियो रोग असाध्य मरी ॥ प्रा०

॥२॥ कुम्भु अरुह महिष मुनि सुवतजी, नमी नेम
 शिवरमणी यरी । पार्श्वनाथ धर्यमान जिनेश्वर,
 केवल लक्ष्मी मय मोघ हरी ॥ प्रा० । ३॥ तुम सम
 नहीं कोई तारक वृजो, इममिश्चे मम मांदि यरी ।
 तिलोकरिष कहे जिम तिम करिने मुक्ति षो
 ममु मेहरकरी ॥ प्रा० ॥४॥



४४ नेमीनाथ स्तवन ।

एक-पमती ।

साधारियो साहिब के म्मारो म्हे जाकर ममु
 तेरो । मयसागर में पहु विभ भटक्यो, अब तो
 करो निषेरो ॥ हेर ॥ अष्ट करम मुज निपट बकायो
 दियो म्भक्त धम पेरो । साहिब म्हेर नजर कर
 मोपट, (बेगो भास विखेते ॥ सां० ॥१॥ बोपती
 की पौंती गालो शालो मय मय केरो । सेवग मे
 साहिब अब धीजे, मुगत महिल में डेरो ॥ सां० ॥
 २॥ मोसो इंसरक न समके रैत है करम डेरो ।

अविचल सुख चाह हुवे तो ले सरणो जिनकेरो
 ॥ सां० ॥ ३ ॥ जग में नाम चिंतामणि तेरो सो में
 काज्यो हेरो । रत्नचन्द कहे नित उठ जिन को
 लीजे नाम सवेरो ॥ सां० ॥४॥



४५. नेमीनाथ स्तवन ।

तर्ज—उपरोक्त ।

सांवरियो साहिव सुखदायक सुनजो अरज
 हमारी । जग सागर काराग्रह सरखो तिन सेती
 मोय तारी ॥टेर॥ जनमत नयन कमल दल निरखी
 हरखी है महतारी । पिता राम सुख पायो प्रभु
 को सूरत मोहनगारी ॥ सां० ॥ १ ॥ जोवन वय में
 जोर दिखायो किस्मय हुए मुरारी । सब जन मिल
 के व्याह रचावो मोह दशा मन धारी ॥ सां० ॥२॥
 व्याह विरध में जीव छुड़ाये तारी राजुल नारी ।
 सहस पुरषसुं संजम लेकर आप रहें ब्रह्मचारी ॥
 सां०॥३॥ प्रजन साम्बकंवर को तारी आठ कृष्ण

की मारी । घन घन नेमजिनेश्वर साक्षि व पांडव
 पांच उधारी ॥ सां० ॥ ४ ॥ सहस्र अनेक पुत्र
 निस्तारे पहुँचा मुक्त मजारी । रत्नचन्द्र कहे सब
 तो आई आज हमारी घरी ॥ सां० ॥ ११ ॥



४६ महावीर स्तवन ।

७५-७६ ।

महावीर स्वामी ने समरै पलक पलक ने घड़ी
 घड़ी । वर्तमान स्वामी ने समरै पलक पलक ने
 घड़ी घड़ी ॥ देव ॥ सिद्धार्थ घर सुन्दर मारी
 त्रिशला रूपे जासु सिरी । इश्वरै स्वर्ग घड़ी खरि
 धाय । स्वर्गांतर से लहर पड़ी ॥ म० ॥ १ ॥ मधु मास
 शुद्ध पक्ष तस रजनी पूर्व अर्ध खरी । अतम यषो
 सुरपति मित्र कर में ले चास्था प्रभु मेरुगिरी ॥
 म ॥ २ ॥ मय सुर इन्द्र अप्सरा मिल के मोक्ष
 विनती सकल करी । बरस अगुण्डे मेरु कंषायो
 महावीर तब नाम घरी ॥ म० ॥ ३ ॥ मर जोधम

सुन्दर सुख भोगव परिहरी प्रभु राजसिरी । संजम
ले तप कठण करम हण केवल ले शिवनारवरी ॥
म०॥४॥ महावीर मन माहें जपतां भांजत अलगा
करम श्री । कुशलचन्द्र कहे शिवपुर दीजे जन्म
मरण दुख दूर हरी ॥ म० ॥५॥

४७. उपदेशी पद ।

वर्ष-उपरोक्त ।

रे चेतन पोते तूं पापी परना छिद्र चितारे ।
निर्मल होय करम करदम से निज गुण अंबु नितारे
॥८॥ सम्यक् दृष्टि नाम धरावे सेवे पाप अठारे ।
नरक निगोद थकी किम छूटे जो पर द्वियो न ठारे
॥९॥ जिम तिम करने शाभा आपणी या जग
मांही दिखारे । प्रकट कहाय धर्म को धोरी अंतर
भर्यो विकारे ॥ रे० ॥१०॥ परमेश्वर साखी घट घट
को जाकी शरम न धारे । पचसी कुंभी पाक नरक
में अन्तर छल न निवारे ॥ रे० ॥११॥ परनिंदा अग
पिंड भरीजे आगम साख संभारे । विनयचन्द्र कर
आत्म निन्दा भव भव दुकृत टारे । रे० ॥१२॥

ॐ श्री धीर जिन स्तुति ।

सुरति मन मोहन कचन कोमल काय, सि-
 शारथ नन्दन विशला देवी माय ॥ सुग भायक
 लक्ष्म भाग हाथ ननु मान दिन दिन सुकदायक
 स्वामी श्री वर्द्धमान ॥१॥ सुरतर वर किञ्चर धरित
 पद्म अग्निय कामित भर पूरुष अमिनध सुरतर
 कम्प ॥ मखियसु मे तारे प्रवहसुसम विस वीण,
 चौषीस जिनधर प्रहसुं विसधा बीस ॥ २ ॥ अरथे
 करि आगम माख्या श्री भगवन्त, गसुधर ते गुंघ्या
 गुहनिधि ज्ञान धनेन । सुरगुह विस मदिमा कइ
 व लके एकांत समई सुकदायक मन सुष सुष
 सिद्धान्त ॥३॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष
 लहु मंजुट सुरे पूरे आस अशेष । अहनिती कर
 जाई मेवे सुरतर हम्ब जंवे गुहगद्य हम भीजिन
 लाभ सुग्दि ॥ ४ ॥



४६. विमलनाथजी का स्तवन ।

घर आंगण सुरतरु फल्योजी, कौन कनक फल
खाय । गयवर चांध्यो वारणोंजी, खर किम आवे
दाय ॥१॥ विमल जिन म्हारी तुमसुंजी प्रेम, सुर
सकलंकितशुं मिल्याजी, हियडे ही से केम ॥वि०
॥ २ ॥ मन गमता मेवालहीजी, कुण खड खावा
जाय । आदर साद्विव नो लहीजी, कुण ल्ये रांक-
मनाथ ॥वि०॥३॥ रत्न छते कुण काचनेंजी, अलवे
पसारे हाथ । कुण सुरतरु थी ऊठनेंजी, वावल
घाले वाथ ॥ वि०॥४॥ देव अवर जो हु करूँजी, तो
प्रभु तुमची आण । श्री जिनराज भवो भवेँजी, तुं
हिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥५॥

५०. चवदह स्वप्न ।

दशवाँ स्वर्ग थकी चव्याजी चौवीसवाँ जिनराय ।
चवदह सुपना देखियाजी त्रिशला देवी माय ॥
जिनन्द माय दीठा सुपना सार ॥ टेर ॥

पहिले गयबर देखि गोत्री सुखा वरुण प्रथम ।
 वृद्धे वृषभ देखियोत्री घोरी घोसो सरह ॥ ३० ॥
 तीजे निह सुखचरोत्री करतो मुल बगास ।
 जीये लक्ष्मी देवतात्री कर राधा लील विभास ॥ ३१ ॥
 पध बाध फुलां गणीत्री मोरी देखी सुवास ।
 लहं चन्द्र उजासिवात्री अमीय मूरे आकाश ॥ ३२ ॥
 दिनकर ऊगो लज्जसुत्री किरणा मूक ममास ।
 करकती देखी धवात्री ऊंधी अति अक्षयन ॥ ३३ ॥
 कुंभ कलश रतमा अरुणीत्री उदक मर्षो सुविशाल ।
 कमल फुलां को डाकसात्री मर्षो स्वप्न रसास ॥ ३४ ॥
 पध मंगलकर अस मर्षात्री कमला करी सुसोमास ।
 वय देवी रंग में रमेत्री देख्या आबे दाय ॥ ३५ ॥
 लीर समुद्र चारो दिशात्री जेना मीठो नीर ।
 दूध असो पात्री मर्षोत्री कठिन पाधपो लीर ॥ ३६ ॥
 मोखा केग भुरकात्री देख्या देख विमान ।
 दध देखी कौतुक करेत्री आवतां असमान ॥ ३७ ॥
 रत्ना की राशी निरमलात्री देख्या स्वप्न बदार ।
 स्वप्ना देख्यो वेरमोत्री दिपके हर्ष अपार ॥ ३८ ॥

ज्वाला देखी दीपतीजी अगन शिखा बहु तेज ।
 इतने जाग्या पद्मनीजी धरता स्वप्ना से हेज ॥जि०
 गजगति चाल्या मलकताजी आया राजन् पास ।
 भद्रासन आसन दियोजी राय पूछे हुल्लास ॥जि०
 कहो किन कारण आवियाजी कहो थारा मननी बात ।
 चवदे स्वप्ना देखियाजी अर्थ कहो साक्षात् ॥जि०
 स्वप्ना सुनीराय हर्षियाजी कीनो स्वप्न विचार ।
 तीर्थकर चक्रवर्त हुसीजी तीन लोक आधार ॥जि०
 प्रभाते पंडित तेडियाजी कीनो स्वप्न विचार ।
 तीर्थङ्कर चक्रवर्ती हुसीजी तीन लोक करतार ॥जि०
 पंडित ने बहु धन दियोजी वस्तर ने फूल माल ।
 गर्भवास पूरा थया जद जनम्या पुण्यवंत वाल ॥जि०
 चोसठ इन्द्र आवियाजी छप्पन दिशा कवार ।
 अशुचि कर्म निवारनेजी गावे मंगलाचार ॥जि०
 प्रतिविम्ब घर में धर्योजी माताजी ने विश्वास ।
 शक्र इन्द्र लीधा हाथ मेंजी पञ्च रूप प्रकाश ॥जि०
 मेरु शिखर न्हवरावियाजी तेहनो बहु विस्तार ।
 इन्द्रादिक सुर नाचियाजी नाची अपसरा नार ॥जि०

अटार्ह मडोरनव सुरकरेजी वीप बन्दीश्वर जाय ।
 गुण गाथे प्रभुजी लखाजी दिपके हरय म माय ॥ ३ ॥
 परभात सुपना ओ मयेजी मरुता आमन्द पाय ।
 गेग शोक दृग टलेजी अशुभ कर्म सब जाय ॥ ३ ॥

५१ वीर प्रभु के दश स्वप्न ।

शासन नायक समरियेरे लाल भगवन्त भी
 बर्खमास हो मविकजन । एअ खोड़ीने संजम
 आदपरि लाल खोधीभर्मा जगमाख हो भविजन
 ५१ म दश सुपना वीरजी देखियारे लाल ॥ १ ॥
 पहले पिशाच पक्षादियेरे लाल जीया मोइयी
 कृग हो म० । कर्म मे राव रक कर, दियोरे लाल
 कर्म किया अइचूर हो म० ॥ २ ॥ सफेज कायल
 पंभी देखियारे लाल स्वप्ने कूसरे जान हो, म० ।
 रान दिवस धर्म प्यावतारे लाल प्यायो गुफल
 प्यान हो म० ॥ ३ ॥ विविज प्रकारता देखियारे
 लाल स्वपने तीमरे जान हो म० । प्रभुजी रेने

देशनारे लाल, समभावे हित श्रान्त हो, भ० ॥४॥
 दोय माला रतना तणीरे लाल, स्वपने चोथे वि-
 लोय हो, भ० । साधु वलि श्रावक तणारे लाल,
 धर्म प्ररूप्या दोय हो, भ० ॥५॥ उज्जवल वरण गाया
 तणारे लाल स्वपने पांच में धार हो, भ० । साधु
 साधवी श्रावक श्राविकारे लाल, तीरथ थाप्या
 चार हो, भ० ॥६॥ पद्म सरोवर कमला छादयोरे
 लाल, सपनो छट्टो श्रखेव हो, भ० । चारों जातरा
 देवी देवतारे लाल, सारे प्रभुजीरी सेव हो, भ० ।
 ॥ ७ ॥ भुजाकरी समुद्र तिर गया रे लाल, सातमें
 सपने विचार हो, भ० । संसार समुद्र तिर गयारे
 लाल, उतर्या पहले पार हो, भ० ॥८॥ उगतो सूरज
 दीठो श्राटमेरे, ऊजलो अति असमान हो, भ० ।
 प्रभुजी ने श्राई ऊपनोरे लाल, निर्मल केवल ज्ञान हो,
 भ० ॥९॥ मानुखोत्तर श्रातां विंटियोरे लाल, स्वपने
 नवमें जान हो, भ० । प्रभुजीरो तीन लोक मेरे लाल,
 जस फैल्यो असमान हो, भ० ॥१०॥ मेरु पर्वतनी
 चूलिकारे लाल, तापे सिंहासन ठाय हो, भ० ।

समोत्तरण में विराजियारे सात, दसवां सुपना मांय
 हो म० ॥११॥ मुगति मंदिर में विराजियारे सात
 मगबन्त भी वर्त्मान हो, म० । रिद्धरायबन्धी
 हम कहे रे सात, सुब मगबती प्रमान हो, म० ॥१२॥



५२ शान्तिनाथजी को स्तवन ।

प्रातः ठठ भी शान्ति जिणव को स्मरण कीजे
 ढकी धकी । लंकट कोट कटे मव लंबित ओ
 प्यावे मत भाष घरी । प्रात० ॥ १ ॥ उनमत पाप्य
 जगत दुत्त डछीयो, गलीयो रोग असाध्य मरी ।
 घट घट अन्तर अन्तन्व प्रगदियो हुतस्यो द्विषको
 हर्षधरी ॥ प्रात० ॥ २ ॥ आपद् बर्तन विपम मय
 भांजे जसे येकत मृग हरी । एकल चित्त सु सुख
 बुख प्याता मगट परिचय परम सिरी ॥ प्रात० ॥
 ३॥ गये विरहाय मरम के बादल परमार्थ पव
 पवन करी । अवर देव परंइ कुणरोपे ओ निज

मंदिर केल फली ॥प्रात० ॥४॥ प्रभु तुम नाम जग्यो
घट अन्तर तो शुं करिये करम अरी । रतनचन्द
शीतलता व्यापी, पापी लाय कषाय टली ॥ प्रात०
॥ ५ ॥



५३. नेमनाथ स्तवन ।

तर्ज=उपरोक्त ।

श्री नेमीश्वर साहिवा प्रभु थे मुज सांचा देव ।
अवर देव सहु कारमा ज्यांरी सुपने न वंछू सेव ॥
१॥ जिनेश्वर नाथ हमारो रे, प्रभु मोने लागे प्या-
रोरे ॥ टेर ॥ इण भव कीधी प्रीतडी प्रभु लीजो
आप निभाय । करुणासागर साहिवा धारा नाम
थी आनन्द थाय ॥जि०॥२॥ वैरागियां शिर सेहरो
प्रभु यादव कुल सिनगार । भर जोवनमें जुगत से
प्रभु त्यागी राजुलनार ॥ जि० ॥ ३ ॥ सूरत सुन्दर
सोमती प्रभु दीठां आवे दाय । सेव कियां साहिव
तणी म्हारे कमी रही नहीं काय ॥जि०॥४॥ वाणि

जोजन धरपती प्रभु, सुन न सके कोई कठ । मुख
 हीन्हे बहुरीशे प्रभु धारी किरने न धाधे पृठ ।
 जि००१॥ काधो सरसो जगत को प्रभु ते में दोनो
 कोइ । सांधा सरसो धारो जियो अब पूरो मरको
 कोइ ॥ जि००१॥ बानी मुख बहको नहीं प्रभु कहता
 सास उमास । रिख बौधमहबीरी बिगती अब
 पूरो हमारी भाग ॥ जि०००॥ समत अठारे बाधने
 प्रभु पीराइ सेर बौमास । काती सुख पञ्चम दिने
 प्रभु यह कीपी अरवास ॥ जि० १८॥

४४ अष्टमदेव स्तवन ।

०५-अष्टम ।

जिनम्द मित सरसो धारोरे मोकू मरपार
 उतारोरे ॥ टग ॥ पूरव मव के भाधने प्रभु बहबर्त
 पदवी पाव । मुख मागी संसारना पक्षे संजमरी
 रिख लाय ॥ जि० ११॥ तपस्या कीपी आदरी प्रभु
 संजम पारी सुमान । अन्त समे अचरस करी
 पदुचा न्धारय सिख विमान ॥ जि० १२ ॥ तेतीस

सागर आऊखो पाया, भोगविया अति सुख ।
तिहांथी चविने ऊपना माता मरुदेवीनी कूख ॥
जि०॥३॥ लख चोरासी पूर्व को आयू पाया नाभी-
नन्द । मोच्छव करवा फारणे काई आया सुरनर
वृन्द ॥ जि० ॥४॥ वीस लाख पूर्व लगे प्रभु कंवर
पदे रह्या आप । त्रेसठ पूर्व राज भोगवी पछे त्या-
ग्या अठारा पाप ॥ जि०॥५॥ चार सेंस संग संजम
लियो प्रभु ध्यायो निर्मल ध्यान । हजार वर्ष छुअस्त
रह्या पीछे ऊपनो केवल ज्ञान ॥ जि० ॥ ६ ॥ लाख
पूरव दीक्षा पालने प्रभु दस सेंस मुनि परिवार ।
अनशन करे छे दिन में प्रभु कर गया खेवापार ॥
जि०॥७॥ अनन्त सुखा में विराजिया प्रभु तोड्या
आठूं कर्म । इह भव जीव तारण भणी ज्यारा प्रकट
कियो जिन धर्म ॥ जि० ॥ ८ ॥ काल अनन्त मेला
रह्या म्हारी पूरव प्रीत निभाव । मनरा मनोरथ
पूरवो म्हाने आपरी ठौर वताव ॥ जि० ॥९॥ खूब-
चन्द कहे आपको म्हाने पूरो है विश्वास । गुण
गाया साल त्रेपने खाचरोद सेर चौमास ॥ जि०॥१०॥

५५. महावीर स्वामी का वंद ।

भीसिन्दारय कुल भृंगार त्रिशस्तादेशी सुत जग
 आघार । शोभे सुदर लोचन धाम शरण तुम्हारे
 भीर्धमान ॥१॥ तुम नामे लक्ष्मि संपदा, तुम नामे
 मन बाँधित मुदा । तुम नामे लक्ष्मि सम्मान शरण
 तुम्हारे भीर्धमान ॥२॥ दुर्जन कुष्ट दीर विकराह
 तुम नामे नाशे तत्काल । तुम नामे दिन२ कस्यास
 शरण तुम्हारे भीर्धमान ॥ ३ ॥ तुम नामे नाशे
 आपदा मृत प्रेत ध्वंशर महीं कदा । रोग शोक चिंता
 नबिजास शरण तुम्हारे भीर्धमान ॥४॥ महा-
 दिक् पीडा नवि करे नाम तुम्हारे धे उचरे ।
 धर्मसिंह मुनिवर माव प्रधाम, शरण तुम्हारे भी
 धर्धमान ॥५॥

१६ श्रीमंदरस्वामी की स्तुति ।

त्रिभुवन लक्ष्मि अरज सुशीले दर्शन दीजे
 यत्र । दर्शन दीजे मया करीजे अरज सुशीले

राज ॥ १ ॥ म्हारी वीनतडी अवधारो साहिव श्री
 मंदर जिनराज ॥टेर॥ आप वसो महाविदेह क्षेत्र
 में, हूं इण भरत मम्हार । मिलणो क्किण विध होवे
 साहिव, यो छे सबल विचार ॥ म्हाने० ॥२॥ भरत
 विचाले पर्वत आडो नामे छे वैताड । पचीस
 जोजन ऊंचो प्रभुजी पचास जोजन विस्तार
 ॥ म्हाने० ॥ ३ ॥ गंगा सिंधु दोनुं नदियां, आडी
 छे किरतार । सेंस अट्टावीस दूजी नदियां,
 ये विहुँनो परिवार ॥ म्हाने० ॥४॥ तिण आगे वलि
 पर्वत आडो, चूल हेमवय नाम । एक सेंसने वा-
 घन जोजन, वारह कला अभिराम ॥ म्हाने० ॥ ५ ॥
 क्षेत्र हेमवय आडो छे प्रभू, युगल्या केरो वास ।
 इक्कीस से ने पांच जोजन पांचकला सुविलास
 ॥ म्हाने० ॥६॥ रोईता और रोईतंसा, नदियां महा-
 असराल । छुप्पन सेंसवलि सामिल नदियां, आऊं
 केम कृपाल ॥ म्हाने० ॥ ७ ॥ महाहेम वलि पर्वत
 आडो, मोटो अति विस्तार । चार सेंस दोसे दश
 जोजन, दशकला सुविचार ॥ म्हाने० ॥८॥ आठ सेंस

ने चारसे षष्ठी एकबीस जोड़त तास । कला एक
 षष्ठी ऊपर आसो खेच छे हरिबास ॥ म्हा० ॥ ६ ॥
 हरिकस्ता हरिसक्षिहानामे, नदियां छे परतछ ।
 बीजी नदियां सामिह छे प्रभु सेंस बास एकसछ
 ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ निवेड पबैत आडो छे प्रभु, सोवन
 बहु विस्तार । साझे सेंस सत आठ बियाहिस,
 दोय कल मनुहार ॥ म्हा० ॥ ११ ॥ खेच छे बलि पुग
 ह्या कैरो देबहुठ इननाम । तेह निवेड पबैत पर-
 माणे पदोको छे सुन स्वाम ॥ म्हा० ॥ १२ ॥ सीता
 नामे नदी वडेरी सब नदियां में छिरदार । पांच
 लाख पलि सामिह नदियां ऊपर बतीस हजार ॥
 म्हा० ॥ १३ ॥ लाख जोड़त मेरुपबैत नाम सुदरीन
 सार । गजदस्ताधलि मारग बीच में किम आरुं
 किरतार ॥ म्हा० ॥ १४ ॥ कबनगिरी पकारा पबैत
 केम उलंघ्या जाय । मद्रसाल बन मारग बीच में
 लागे केम उपाय ॥ म्हा० ॥ १५ ॥ बस अठ पबैत
 वहना बीच में नदियां उचह घाट । किछ विच
 आरुं सुगणा स्वाहिव मारग बियमी बाठ ॥ म्हा०

॥१६॥ दूर थकी श्रवधारो साहिव, या म्हारी श्र-
 दास । मनघांछित सुख संपतिदाता पूरो म्हारी
 आस ॥ म्हां० ॥१७॥ किहां मुज दक्षिण भरत किहां
 घलि विजे पुखलावति सार । मिलवो किण विध
 होवे साहिव, यो छे सबल विचार ॥ म्हां० ॥१८॥
 तुम ही साहिव तुम श्रलवे सार, वसिया हिरदा-
 मभार । भव दुख भंजन श्रलख निरजन करुणा-
 रस भंडार ॥ म्हां० ॥ १९ ॥ समत अठारे वरष
 इक्यासी पोष वदी शुभ मास । वीज ने बुधवार
 अनोपम श्री जिन वचन विलास ॥ म्हां० ॥ २० ॥
 खरतर गच्छे हरषचन्दजी, स्वरूपचन्द गुरुराय ।
 अमरचन्द कर जोड़ वीनवे, तारो गरीव निवाज
 ॥ म्हां० ॥ २१ ॥

५७. श्री मरुदेवी स्तवन ।

इण नालंदा पाडा में प्रभुजी चौदह किया चौ-
 मासाजी ॥टेर॥ मगध देश के माय विराजे, सुंदर
 नगरी सोहेजी । राजगृह राजा श्रेणिकरी, देखता

मन मोहेजी ॥६०॥१६॥ भावक लोक बसे घनबन्ता,
 जिन मारगतां रागीजी। घरघर मांहे सोमो रूपो,
 ज्योति जगामग बागीजी ॥ ६० ॥२॥ अङ्गुल गेहा
 जोर विराजे हाण मोर्णा नव लडियाजी। वहर
 पडिरे भारी मौसा गेया एतना जडियाजी ॥ ६० ॥
 घन घर्मी माजम्ही पावे दोमों पाव विरोतोजी।
 फिर २ पीर आया पडु विरिया रूपकार घड़ेरो
 रेक्याजी ॥ ६० ॥ ४ ॥ तीन पाट राजा भेदिकण,
 समकित भारी लगताजी। जिन मारग तो रूप
 कीपायो धीर तखा गुहा मगताजी ॥६॥ १५॥ पीयर
 मांही समकित पामी खेत्खा पटराजीजी। महा-
 मतीजी संजम लीघो धीर जिनम्ह पलाशीजी ॥
 ६० ॥२॥ समय कवगजी महा गुणवन्ता, मन्त्रीनी
 बुध मारीजी। संजम छेइने स्वर्गे पहुँचा, हुमा
 एकावतारीजी ॥ ६० ॥ ७ ॥ तेबीस घेडा राजा
 भेदिकतां पहुँचा घनुष विमानोजी। इस पोहा
 वेध लोके पहुँचा खब आसी निर्घाहोजी ॥६०॥१७॥
 तेबीस राणी राजा भक्किरी तपकर देही गाही

जी । मोटी सतियां मुगत पहुंची, काट करमनी
 जालीजी ॥ ६० ॥ ६ ॥ जंबू स्वामी इण नगरी हुआ,
 आठ अन्तेवर परणीजी । वाल ब्रह्मचारी भली
 विचारी, निर्मल कीधी करणीजी ॥ ६० ॥ १० ॥
 गौभद्र सेठ हुआ हन नगरी, सेठे संजम लीधो
 जी । वीर सरीखा सतगुरु मिलिया, जनम मरण
 से वीनोजी ॥ ६० ॥ ११ ॥ सालिभद्र सेठ हुआ इण
 नगरी, बलि वाणियो धनोजी । वैन सुभद्रा संजम
 लीधो, मुगत जावणरो मन्नोजी ॥ ६० ॥ १२ ॥ महा-
 सतक श्रावक इण गामे हुआ, श्रावक पड़िमा
 धारीजी । करणी करने कर्म खपाया, हुआ एका-
 घतारीजी ॥ ६० ॥ १३ ॥ सेठ सुदर्शन सेठो श्रावक,
 वीर वन्दन ने चाल्योजी । गेला मांही अर्जुन
 मिलियो, न रह्यो किननो पाल्योजी ॥ ६० ॥ १४ ॥
 अर्जुन माली लारे हूओ, वीर जिनन्द ने मेठ्याजी ।
 माली ने दीराई दीक्षा, दुख नगरीनो मेठ्याजी ॥
 ६० ॥ १५ ॥ मेघकवंर श्रेणिकनो बेष्टो, लीधो संजम
 भारीजी । व्यावच निमित्ते करदी काया, की दो

मैनारी सारोजी ॥६०॥१६॥ भेषिक राजा समकित
 धारी कीधो धर्म उद्योतोत्री । एक घर में दोष
 तीर्थकर बाधो ने बलि पोतोत्री ॥६०॥७॥ उत्तम
 पुत्र्य कई कई उपमा मायक मे बलि साधोत्री ।
 भगवता की सेवा कीधी धन मानव मय साधो
 त्री ॥६०॥१८॥ साधक नायक तीर्थ धान्या, सा-
 सता सुख पायात्री । अथ रायधन्व कहे केषल
 पाया मुगति महिला सिधायात्री ॥६०॥१९॥ संबत
 अठारे शुभ बाहीस नागोर सेर थोमाओत्री ।
 पूज्य जयमलजीग परसाद कीधी जोड़ हुतासो
 त्री ॥ ६ ॥२०॥



५८ साधु बन्दना ।

साधुजी मे बन्दना नित नित कीये मात
 उगते सुन्दरे प्राणी । बीच गति में ते महीं आवे
 पाव अथि भरपूररे प्राणी ॥१॥ मोटा ते पंचमहा-
 मन पाव सुः काया का प्रति गलरे प्राणी । अमर
 भिषा मुनि सुभती सेये दोष बयाहीस अलरे

प्राणी ॥सा०॥२॥ ऋद्धि संपदा मुनि कारमी जाणी,
 दीनी संसार ने पूठरे प्राणी । ए पुरुषांरी सेवा
 करतां, आठों करम जावे दूटरे प्राणी ॥ सा० ॥३॥
 एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एक एक ज्ञान का
 भंडाररे प्राणी । एक एक मुनिवर व्यावचिया वैरागी,
 एहना गुणनो न आवे पाररे प्राणी ॥सा०॥४॥ गुण
 सत्तावीश करने दीपे, जीत्या परिग्रह वावीसरे
 प्राणी । वावन तो अनाचारज टाले, तेहने नमावुं
 म्हारो शीपरे प्राणी ॥ सा० ॥५॥ जहाज समान ते
 सन्त मुनिश्वर, भव्य जीव बैठे आयरे प्राणी । पर
 उपकारी मुनि दाम न मांगे, देवे मुगति पहुंचाय
 रे प्राणी ॥सा०॥६॥ ए शरणे प्राणी सातारे पामे,
 पावे ते लील विसालरे प्राणी । जन्म जरा और
 मरण मिटावे, आवे न फिर गर्भावासरे प्राणी ॥
 सा० ॥ ७ ॥ एक घचन जो सद्गुरु केरो, राखे
 हृदय मायरे प्राणी । नर्क निगोद में ते नहीं जावे,
 एम कहे जिनरायरे प्राणी ॥ सा०॥८॥ प्रभाते उठी
 ने उत्तम प्राणी, सुने साधारो व्याख्यानरे प्राणी ।

ए पुढ्यारी खेषा करता पावे अमर विमानरे प्राणी
 ॥ सा०॥६॥ संवत अठारे वष अइतीसे, हुसी गाम
 बोमासरे प्राणी । मुनि आसकरश्री हसी पर
 मये ॥ उत्तम साधा को दासरे प्राणी ॥ सा० १०॥



५६. पड़ी साधु वन्दना ।

जमु अमंत घोषीशी ऋषमादिक महावीर ।
 आर्य खेचमा घासी अर्म की तीर ॥१॥ महा अतुल
 बखीनर शूर धीर ने धीर । तीर्थ प्रवर्तावी पदों
 ज्या भवजल तीर ॥२॥ श्री सीमंवर प्रमुख अपत्य
 तीर्थकर भीस । खे अडाई द्वीपमा अपबन्धा अम
 शीश ॥३॥ एक सो न सिद्धर अकृष्ण परै अगीश ।
 अत्य मोटा प्रभुजी जेहने नमाधु मारो शीश ॥४॥
 कैबली दोष कोडी अकृष्ण नव करोड़ । मुनि दोष
 सहस्र कोडी अकृष्ण नव सहस्र करोड़ ॥ ५ ॥
 विचरे विवेक में मोटा तपस्वी घोर । मारे करी
 बन्धु, दासे भवनी कोर ॥ ६ ॥ घोषीशे अिनमा,

सघला ए गणधार । चउदेसे ने वावन, ते प्रणमुं
 सुखकार ॥७॥ जिन शासन नायक, धन्य श्री वीर
 जिनन्द । गौतमादिक गणधर, वर्त्ताव्यो आनन्द
 ॥८॥ श्री ऋषभदेवना, भरतादिक सोपूत । वैराग्य
 मन आणी, संयम लियो अद्भूत ॥९॥ केवल उपा-
 ज्यो, करी करणी करतूत । जिनमत दिपावी,
 सघला मोक्ष पहंत ॥ १० ॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा
 पाटोघर आठ । आदित्य जशादिक, पहोंत्या, शिव-
 पुर वाट ॥ ११ ॥ श्री जिन अन्तरना, हुवा पाट
 असंख्य । मुनि मुक्ति पहोंत्या, टाली कर्म नो
 वंक ॥१२॥ धन कम्पिल मुनिवर, नेमि नमुं अण-
 गार । जेणे तत्क्षण त्यागो, सहस्र रमणी परिवार
 ॥१३॥ मुनि हरिकेशी वली, चित्त मुनिश्वर सार ।
 शुद्ध संयम पाली, पाम्या भवनो पार ॥१४॥ वली
 ईक्षुकार राजा घर कमलावती नार । भगूने जस्सा
 तेहना दोय कुमार ॥१५॥ छये छत्ति ऋद्धि छांडी,
 लीधो संयम भार । इण अल्प काल में, पाम्या
 मोक्ष द्वार ॥१६॥ वली संयति राजा, हिरण अहिडे

आय। मुनिवर गर्भमाती चाण्यो मारगठाय ॥१७॥
 धारित्र त्वमे मेठया गुरुमा पाय । धर्मी राम
 श्रुपीश्वर धर्माकरी विल साय ॥१८॥ वली द्यो
 चक्रयनी राज्य त्वणी श्रुति होइ । द्यो मुक्ति
 पदोस्या कुलमे गोभा होइ ॥ १९ ॥ इय अयसपे-
 लीमां चाठ राम गया मोह । बसमद्र मुनिश्वर
 गया पंच मे देवलोक ॥ २० ॥ इशारण मद्रराजा,
 धीर बांधाधरी मान । पछे इन्द्र हटायो रिमो
 सुकाय मे अमपदान ॥ २१ ॥ करकंडु प्रमुक्त पयारे
 प्रत्येक शोध । मुनि मुक्ति पदोस्या जीत्या कर्म
 महा जाध ॥ २२ ॥ धम्य मोटा मुनिवर भूगा पुत्र
 जगीश । मुनिवर अमाची जीत्या राग मे रीह ॥
 २३ ॥ धली नमुद्र पाल मुनि राजमती रडे मेम ।
 देशी मे गौतम पाय्या शिबपुर क्षम ॥ २४ ॥ धम्य
 विजय होव मुनि जय पाव धली जासु । धी गर्ग-
 बावे पदोस्या सु निर्वाह ॥ २५ ॥ धी कत्तराष्य-
 वनमां जितवर कर्या बल छ । सुद्ध मनर्म प्या ॥
 म मां धीरज आग ॥ २६ ॥ धली नम्यक मय्यासी

राख्यो गौतम स्नेह । महावीर समीपे पंच महा-
 व्रत लेह ॥२७॥ तप कठिन करीने, भौंसी आपणी
 देह । गया अच्युत देव लोके चवीलेशे भवछेह ॥
 २८॥ वली ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुदर्शन सार ।
 शिवराज ऋषीश्वर धन्य गांग्या अणुगार ॥ २९ ॥
 शुद्ध संयम पाली, पाम्या केवल सार । ए चारों
 मुनिवर पहोंच्या मोक्ष मभार ॥ ३० ॥ भगवन्तनी
 माता, धन धन सती देवा नन्दा । वली सती
 जयती, छोड़ दिया घर फन्दा ॥३१॥ सती मुक्ति
 पहोंत्या, वली ते वीरनी नन्द । महासती सुदर्शना
 घणी सतियां ना वृन्द ॥ ३२ ॥ वली कार्तिक शेठे,
 पडिमा घही शूरवीर । जीम्यो मोरा ऊपर, तापस
 वलती खीर ॥३३॥ पछी चारिष्र लीधो, मन्त्री एक
 सहस्र आठवीर । मरी हुवा शकेंद्र, चवी लेसे
 भवतीर ॥३४॥ वली राय उदाई, दियो भाणेज ने
 राज । पछी चारिष्र लेहने, सार्या आतम काज ॥
 ३५ ॥ गंगदत्त मुनि आनन्द, तारण तीरण री
 जहाज । कुशल मुनि रहो दियो घणा ने साज ॥

१३ ॥ धर्म्य सुमहत्तु मुनिवर सर्वानुभूति धर-
 गार । आराधिक हुई मे, गया देयलोक मझार ॥
 १७० ॥ बधी मुक्ति आसे बधी सिद्धो मुनिवर सार ।
 बीजा पस मुनिवर मगधतीमा अधिकार ॥ १८ ॥
 अधिक ना बेडा मोटा मुनिवर मेघ । तभी आठ
 अम्तेडरी आरयो मन सबेग ॥ १९ ॥ बीर पे ब्रत
 लेदने बापी तपमी नेग । गया विजय विमाने
 बधी लेसी शिव बेग ॥ ४० ॥ धर्म धापचाँ पुत्र
 तजी बधीपी नार । तेमी साथे निकरुणा, पुत्र
 एक हजार ॥ ४१ ॥ सुख देव सम्पासी, एक सहस्र
 शिष्य सार । पंच शत सं सेलक क्षीणो संयम मार
 ॥ ४२ ॥ सबै सहस्र अठार्ह घहा जीवां मे वार ।
 पुत्र गिरी रूप कियो पादोप गमन संधार ॥
 ४३ ॥ आराधिक हुई मे क्षीणो बेबा पार । हुवा
 मोटा मुनिवर नाम लिया निस्तार ॥ ४४ ॥ धर्म्य
 जिनगल मुनिवर दोष धनवाह साध । गया प्रथम
 देवलोक मोक्ष आसे आराध ॥ ४५ ॥ श्रीमस्तिनाथ
 ना ९ मित्र महाबल प्रमुख मुनिपय । सबै मुक्ति

सिधाया, महोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ वली जित-
 शत्रु राजा सुबुद्धि नामे परधान । पोते चारित्र
 लेईने, पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन तेतली
 मुनिवर, दियो छः काय ने अभयदान । पोटिला
 प्रतिवोध्या पाम्या केवल ज्ञान ॥ ४८ ॥ धन पांचों
 पांडव, तजी द्रौपदी नार । स्थिवरनी पासे, लीधो
 संयम भार ॥ ४९ ॥ श्री नेमिवन्दन को एहवो अभि-
 ग्रह कीध । मास मास खमण तप, शत्रुंजय जई
 सिद्ध ॥ ५० ॥ धर्म घोषतणा शिष्य, धर्म रुची अण-
 गार । किडियोंनी करुणा, आणी दयारस सार ॥
 ५१ ॥ कडुवा तुंवानो, कीधो सघलो आहार । स-
 र्वार्थ सिद्ध पहोंच्या, चवि लेशे भवपार ॥ ५२ ॥
 वली पुंडरीक राजा, कुंडरिक इगियो जाण । पोते
 चारित्र लेईने, न घाली धर्ममां हात ॥ ५३ ॥ सर्वार्थ
 सिद्ध पहोंच्या, चवी लेशे निर्वाण । श्री ज्ञाता सूत्र
 मां जिनवर कर्या चखाण ॥ ५४ ॥ गौतमादिक कुंवर
 सगा अठारे भ्रात । सर्व अन्धक विष्णु सुत,
 धारणी ज्यांरी मात ॥ ५५ ॥ तजी आठ अन्तेउर,

काढ़ो दीक्षानी बात । बारिच खेहने कीपी मुक्ति
 मो साथ ॥२५॥ श्री अनेक सेवारिठ वही छो-
 वर भाय । बसुदेवमा मन्दन, देखी ज्यारी भाव
 ॥ २७ ॥ महिलपुर मयारी माण गहापरि आब ।
 घर वधिया सांमसी नेमिनी पाब ॥ २८ ॥ तडी
 बत्तीस बत्तीस अन्तेवर मिकलिया कटकाप ।
 मल कुंवर समादा मेंठ्या श्री नेमिनी पाय ॥२९॥
 करी ब्रह्म ब्रह्म पारवा मल में वैराग्य साथ । एक
 सवार मुक्ति विराग्या आय ॥ ३० ॥ बसी वाठक
 सारण सुमुक्त सुमुक्त मुनिराय । वसी कुमर अना-
 ददि गया मुक्ति गङ्ग भाव ॥३१॥ बसुदेवमा मंदन
 धन धन धन राज सुकमात । इये अति सुन्दर
 कल वस्त वय बाल ॥३२॥ श्री नेमि समीपे छोड्यो
 मोह अंजाल । मिळुनी पङ्किमा गया मसाळ मर-
 काल ॥३३॥ देखी मोमिल कोण्यो मस्तक बांधी
 पाल । खेर ना बीट सिर देविषा अचर्याल ॥३४॥
 मुनि मखर न काण्डी मेठी मजनी जाल । परिपद
 छडीमे मुक्ति गया तत्काल ॥ ३५ ॥ धन जाती

मयाली, उवयालादिक साध । सांव ने प्रद्युमन,
 अनारूढ साधु अगाध ॥६६॥ वली सच नेमी दृढ-
 नेमी, करणी कीधी वाध । दशे मुगति प्होंच्या,
 जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य अर्जुन माली,
 कीयो कदाग्रह दूर । वीर पै वन लेइने, सत्यवादी
 हुवा शूर ॥ ६८ ॥ करी छुट छुट पारणा क्षमा करी
 भरपूर । छः मास मांही कर्म किया चक्रचूर ॥६९॥
 कुवर अइमुत्ते दीठा गौतम स्वाम । सुणी वीरनी
 वाणी, कीधो उत्तम काम ॥ ७० ॥ चारित्र लेइने
 प्होंच्या शिवपुर ठाम । धुर आदि मकाई, अन्त
 अलक्ष मुनि नाम ॥ ७१ ॥ वली कृष्णरायनी, अग्र
 महिषी आठ । पुत्र वधू दोई संच्या पुण्यना ठाठ
 ॥७२॥ यादव कुल सतियां, टाली दुःख की घाट ।
 प्होंची शिवपुर में ए छे सूत्र नो पाठ ॥७३॥ श्रे-
 णिकनी राण्यां, काली आदिक दश जाण । दशे
 पुत्र वियोगे, सांमली वीरनी वाण ॥ ७४ ॥ चन्दन
 वाला पै, संजम लेई हुवा जाण । तप करी देह
 भौंशी, प्होंची है निर्वाण ॥ ७५ ॥ नन्दादिक तेरे,

काट्यो देहनो कस ॥ ८६ ॥ संयम आराधी देव-
 लोकमां जाई वश । महा विदेह क्षेत्र मां मोक्ष
 जासे लेई जश ॥ ८७ ॥ बलभद्रना नंदन, निपढादिक
 हुआ वार । तजी पचास अन्तेउरी, त्याग दियो
 संसार ॥ ८८ ॥ सहुनेमि समीपे, चार महाव्रत लीध
 सर्वार्थ सिद्ध पहोंच्या, दोशे विदेह में सिद्ध ॥ ८९ ॥
 धनो ने शालिमद्र, मुनीश्वरों नी जोड़ । नारीनां
 बंधन तत्क्षण नाख्या तोड़ ॥ ९० ॥ घर कुटुम्ब
 कवीलो, धन कञ्चननी कोड़ । मास मास पमण
 तप, टालेश भवनी खोड़ ॥ ९१ ॥ श्री सुधर्म स्वामी
 नां शिष्य, धन धन जम्बु स्वामी । तजी आठ अन्ते-
 उरी मात पिता धन घाम ॥ ९२ ॥ प्रभवादिक तारी,
 पहोंच्या शिवपुर ठाम सूत्र प्रवर्ताडी, जग में
 राख्यो नाम ॥ ९३ ॥ धन ढंढण मुनिवर, कृष्णराय
 ना नन्द । शुद्ध अमिग्रह पाली, टाल दियो भव-
 फन्द ॥ ९४ ॥ घली खन्धक ऋषि की, देह उतारी
 खाल । परीपह सही ने भव फेरादिया टाल ॥ ९५ ॥
 वली खन्धक ऋषिना, हुवा पांच से शिष्य । घाणी

सतियां गई जमारो जीन ॥१०६॥ चोवीस जिनना
 साधु साध्वी सार । गया मोक्ष देवलोके हृदये
 राखो धार ॥१०७॥ अठार्ह दीपमां, गरडा तपस्वी
 बाल । शुद्ध पञ्च महावन धारी, नमो नमो त्रिकाल
 ॥ १०८ ॥ इण साधु सतियोंना लीजे नित्य प्रति
 नाम । शुद्ध मन से ध्यावो, एह तरण नो ठाम ॥
 ॥१०९॥ इन साधु सतियों ले, राखो उज्जल भाव ।
 इम कहे ऋषि जमलजी ए हीज तरणना दाव ॥
 संवत अठारे वरस सातो शिरदार । गढ़ भालोर
 मांही, ए कछो अधिकार ॥ १११ ॥



६०. श्री गौतम रासा ।

॥ दोहा ॥

गुण गाऊँ गौतम तणा, लविध तणा भंडार ।
 यडा शिष्य भगवन्तरा, जाने सब संसार ॥ १ ॥
 प्रतिबूभया प्रभुजी कने, गौतम गणधर स्वाम ।
 संजम पाली सिध हुआ लीजे नित प्रति नाम ॥२॥

सेवा कीधी दिनने रातजी, पूछा कीधी जोड़ी दोई
 हाथजी, जांरो कछो कठालग जातजी, ज्यारे वीर
 दियो माथे हाथजी ॥ श्री गौतम० ॥ ३ ॥ प्रथम संघ-
 यण संस्थान छे स्वामी गुण गहिरा भरपूर । ब्रह्म-
 चर्य में बस रह्या बलि तपस्या घोर करूजी,
 कायर पुरुष कंपी जावे दूरजी, दीपती तपस्या
 करे कर्म चूरजी, रह्या वीररे हुकम हजूरजी,
 म्हारी वन्दना उगंते सूरजी ॥ श्री गौतम० ॥ ४ ॥
 अमिग्रह कीधो आकरोजी सूत्र भगवती मांय ।
 चार ज्ञान चवदे पूरव भण्या बलि तेजू लेश्या
 पिरड मायजी । दपटी राखी क्षम्यां मन मायजी,
 दियो ध्यानसु चित्त लगायजी, ऊँकड़ बठा सीस
 नमायजी वीर से अलगा न नेड़ा थायजी जारी
 करणी में कमियन कांयजी ॥ श्री गौतम० ॥ ५ ॥
 पूछ्या जद कीधी घणीजी आणी मन आनंद,
 श्रद्धा में संशय ऊपनो उपनो कौतुहल उछरंगजी,
 घांदे श्री वीर जिनन्दजी, पूछ्या देश प्रदेशनां
 स्कन्दजी, अनन्त ज्ञानी त्रिशलाना नन्दजी, मेल

दिया सूत्र संघो संघजी जनि सेवे सुरवर हनु
 जी तारा बीष विराजे चन्दजी ॥ श्री गीतम० ॥१॥
 सूत्र भगवती में पृथियाजी प्रसन्न कृतीस हजार ।
 अङ्ग उपांग में पृथिया पूषा कीषी पहले पारजी
 गीतम क्षियो विरहा में धारजी अंति बुधिरा लीं
 के पारकी पक्षा जीवां सु क्षियो उपकारजी, इत
 पुरुषापी हुं बलिदारजी ॥ श्री गीतम० ॥७॥ इन्द्र-
 मूर्ति मन चित के मने कर्षे न उपजे केवल काम
 केव पाप्मा मभु देखने बुझाया थी बर्धमानजी
 मन वाङ्मिथ देखे दानजी गीतम ऊमा सम्मुख
 आनजी बीर क्षियो आदर सम्मानजी गीतम गुण
 एतवापी आनजी चित निर्मल ज्योति ध्यानजी
 विनती ऊपर धरते ठानजी ॥ श्री गीतम० ॥८॥ धारे
 के धारे गोपमाजी अरु काहणी मीत । धारो
 धारी मेला एखा बलि लोक बक ईमी पीतजी ।
 मोहणी कर्म के बीजो जितजी, केवल धारी धारो
 के मीतजी एखो मोह आबधरो चितजी ॥ श्री
 गीतम० ॥९॥ अरु के अली मरु आतरे धारो दोसू

वरावर होय । वीर वचन श्रवणे करी तव हर्षित
 हिवडो होयजी । गुरु मोटा मिलिया मोयजी,
 म्हारे कमिय रही नहीं कोयजी, राग द्वेष खपाया
 दोयजी, मोहणी कर्म ने दीधो खोयजी ॥श्री गौतम०
 ॥१०॥ स्वयं मुख वीर वखाणियाजी गौतम ने तिण-
 चार । चरचा वादी तूं अति घणो हेतु युक्ति
 अनेक प्रकारजी । पाखण्ड्य रो जीतण हारजी,
 बीजा साधु सहु थारी लारजी, हुआ हियडे हरण
 अपारजी, तीर्थनाथ निकाल दियो तारजी ॥ श्री
 गौतम०॥११॥ काति घदी अमावस्याजी मुगति गया
 वर्धमान । इन्द्र भूति ने ऊपनो तद निर्मल केवल
 क्षानजी । धर्म दिपायो नगर पुर ठामजी, सिद्ध
 कीधा आनम कामथी, रिपि रायचन्द किया गुण
 ग्रामजी, धन २ गौतम स्वामजी ॥श्री गौतम०॥१२॥
 प्रसाद पूज्य जयमलजी तणोजी यह कीधो अ-
 भ्यास । समत अठारे चोतीस में नवमी शुद्ध
 भाद्रव मासजी । यों कीधां गौतमरो रासजी,
 सुरया होवे जीव हुल्लासजी, जीव पामें अविचल

सुमेरुगिरि पै इन्द्र चौसठ मिल महोत्सव कीनो ।
अनन्त बली अरिहन्त वीर प्रभु नामज दीनो ॥
वरप बहुत्तरनो आउखो पाया सुखकारी ।
तीस घरप प्रभु कंवर पदे रह्या अभिग्रह धारी ॥
ज्यांरी मात पिता सुरगति लयाए पीछे लीनो-

संजम भार ।

तपस्या कीधी निर्मली साढी वारे वरप मभार ॥३॥

नव चौमासी तप कियो एक कियो छमासी ।
पांच दिन ऊणा अभिग्रह छमास विमासी ॥
एक २ मासी तप कियो प्रभु द्वादश विरिया ।
षहत्तर पक्ष दो दो मास छ विरिया करिया ॥
दोय अढ़ाई तीन दो ए डेढ २ मासी दोय ।
भद्र महाभद्र शिवभद्र तप तप्या इम सोला दिन होय ४
मिच्छुनी पडिमा अष्ट भगतनी द्वादश कीनी ।
दोसे ने गुणतीस छटम तप गिनती लीनी ॥
ग्यारह वर्ष छे मास पचीस दिन तपस्या केरा ।
ग्यारह मास उगणीस दिवस पारणा भलेरा ॥

इत्यधिप स्वामीजी तपस्वियोऽप पक्षे उपमो केवलज्ञान
 तीस पर्य ऊहा विचरिया ते प्रसमूर् वर्षमान ॥२४॥
 प्रथम अस्मिन् वृजो धम्पापिष्ठ धम्पा दोष कहिये ।
 विशाल वासियो गाँव बेहू मिल झाड़्य लहिये ॥
 वतुईश मातम्बा पाडे से मिपिला मखिये ।
 महिलपुर में दोष सब मिल अकृतीस गखिये ॥
 एक आरंभी एक सायतही एक अनारज आष ।
 अरम खीमानो पाबापुरी अठे पडुवा निरवाष ॥२५॥
 मुनिवर अडदा सैंस सैंस कृतीस आरज का ।
 एक लज गुणसठ सैंस आबक तीन लाख धाधिक ॥
 अधिक अनारज सैंस न्हारे गण्यरणी भाडा ।
 गौतम स्वामी बड़ा शिष्य सती अम्बन बाह्य ॥
 न्हारे केवलज्ञानी सात सोए प्रभु पाहुँवा निरवाष ।
 शासन परने स्वामिनो इबबिस सैंस वर्ष प्रमास ॥३१॥
 पूरव धाँटी तीन सो तेरह सो अकधि डामी ।
 मन पर्यव पाबमी ज्ञान सातमी केवल ज्ञानी ॥
 बेक्रियकधिपना धार साठही मुनिवर कहिये ।
 बारी बार सी ज्ञान मित्र मित्र धर्या कहिये ॥

एकाएक संजम लियोए एकाएक निरवारण ।
 चौसठ वर्ष लग चालियो दर्शन केवल ज्ञान ॥८॥
 वारह नर बल वृषभ वृषभ दश एक हयवर ।
 वारह हय इक महिप महिप पांचसौ इक गयवर ॥
 पांचसौ गज हरि एक सेंस दो हरि अष्टापद ।
 दशलाख बलदेव दोय वासुदेव दो चक्रिपद ॥
 क्रोड़ चक्रि इक सुर गिणाए क्रोड़ सुरा इक इन्द ।
 इन्द्र अनन्ता नहिं नमें चटि आंगुली अग्रजिनंद ॥९॥
 आप तणा प्रभु गुण अनन्त को पारन पावे ।
 लब्धि प्रभावे क्रोड़ काय शिर क्रोड़ वनावे ॥
 शिर शिर क्रोड़ा क्रोड़ वदन मुख क्रोड़ सुवानी ।
 जिह्वा जिह्वा से क्रोड़ क्रोड़ गुण करे मुक्षानी ॥
 क्रोड़ा क्रोड़ सागर लगे करे ज्ञान गुण सार ।
 आप तणा प्रभु गुण अनन्त कहतां आवे न पार ॥१०॥
 चवदह राजू लोक भरे वालू का कणिया ।
 सर्व जीव की रोम राय नहिं जावे गिणिया ॥
 इक इक वालू गुण करे गुण अनन्त अनन्ता ।
 पूज्य प्रशादे ऋषि लालचन्द कहे नहिं आवे अता ॥

संबत अठारह वासठ ए मास मंगसिर सुँ ।
 स्यामपुरे गुण गाबिया चम्प भी धीर जिन्ह ॥ ११ ॥

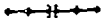


६२ मोक्ष स्थान वर्णन ।

शिवपुर नगर सुहामयो ॥ ११ ॥ गौतम स्वामी
 पूसाकरी धिनयकरी शीश नमाय प्रमुञ्जी । अवि-
 च्छन्न स्थानक में सुग्यो कृपाकर मोक्ष बताय, प्रमु-
 ञ्जी ॥ शि० ॥ १॥ आठ कर्म अहगा करुपा, सात्या
 आत्म काय प्रमुञ्जी । कृत्या तसारना दुष्क धरि,
 रक्षा छे किय ठाम प्रमुञ्जी ॥ शि० ॥ २॥ वीर कहे
 ऊपर्ये लोक में मुक्ति शिला तिख छम हो गौतम ।
 स्वर्ग स्याईस ऊपरे तिथरा छे वाच नाम हो, गौ-
 तम ॥ शि० ॥ ३॥ लाख पैतालीश जोजन लांबी नि
 पहली वास हो गौतम । आठ जोजन आड़ी भीष
 में सुभके माषी पंकरुं वास हो गौतम ॥ शि० ॥
 ४॥ उज्ज्वल हार मोष्या नशो गो वृष, शस वजाय
 हो गौतम । तिख तुं अचिकी ऊपरी उरुद पुत्र

ने संठाण हो गौतम ॥ शि० ॥ ५ ॥ अर्जुन सोना में
 दीपती, घटारी, मठारी जाण हो, गौतम । स्फटिक
 विचाले निर्मली, सुहांली अधिक घखाण हो, गौ-
 तम ॥ शि० ॥ ६ ॥ शिला उल्लंघन ऊंचा गया, अधर
 रह्या सिद्धराज हो, गौतम । अलोकसुं जाई अड्या
 साख्या छे आतम काज हो, गौतम ॥ शि० ॥ ७ ॥
 जठे जन्म नहीं मरणो नहीं, नही जरा, नहीं रोग
 हो, गौतम । वैरी नहीं, मन्त्री नहीं, नहीं संयोग,
 वियोग हो, गौतम ॥ शि० ॥ ८ ॥ भूख नहीं तिरषा
 नहीं, नहीं हर्ष नहीं शोग हो, गौतम । कर्म नहीं
 काया नहीं, नहीं विषय रस भोग हो, गौतम ॥
 शि० ॥ ९ ॥ शब्द रूप गंध रस नहीं, नहीं स्पर्श,
 नहीं वेद हो, गौतम । बोले नहीं चाले नहीं, मूल
 न कोई खेद हो, गौतम ॥ शि० ॥ १० ॥ गाम नगर
 तिहां नहीं, नहीं वस्ती नाहीं उजाड़ हो, गौतम ।
 काल तिहां वरते नहीं, रात दिवस तिथि वार हो
 गौतम ॥ शि० ॥ ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं
 ठाकर नहीं दास हो, गौतम । सुगति में गुरु चेला

नहीं नहीं लोक पढ़ाई नास हो गीतम ॥ शि० ॥
 १२॥ अमन्त सुखा में भूली रक्षा अरुपी ज्योति
 प्रकाश हो गीतम । सपलारा सुख शास्यता, स-
 घला अविघ्न पास हो गीतम ॥ शि० ॥ १३॥ अनन्ता
 सिद्ध मुगत गया अस्त अमन्ता जाय हो गीतम ।
 आगे जागे रुन्धे नहीं ज्योत में उशेत समाय हो
 गीतम ॥ शि० ॥ १४ ॥ केवल धान कर सहित से
 केवल दर्शन पास हो गीतम । सायक समकित
 दीपता कदेयन होय उदान हो गीतम ॥ शि० ॥
 १५॥ सिद्ध स्वरूप कोई मोक्षसे आणे मन धैरग
 हा गीतम । शिष्यमणी बेगी बरे, नय कई सुख
 अयाग हो गीतम । शि० ॥ १६॥



३३ धक्षा मुनि स्तवन ।

उक्त-धक्षाणी ।

अेधिक पूछे बीरजी माखे उचम मुनिश्च
 साय । राज में राज हैं तरतम अगे अधिक धमो

अनगारा ॥ १ ॥ धन्ना मुनि धन मानव भव पायो,
 श्रीमुख यूं फरमायो ॥ टेर ॥ श्रेणिक राजा आत्म-
 हित काजा, धन्नामुनि पे आवे । शीश नमावें मुख
 गुण गावें, जोतां तृप्ति न थावे ॥ धन्ना० ॥२॥ नार
 वत्तीसी अप्सरा सरस्त्री, धन्न वत्तीसे क्रोड़ो ।
 संसार ने पूठ दीवी मुनिवरजी, शिवपुर सामा
 दोड़ो ॥धन्ना०॥३॥ निरंतर तप बेले बेले, पारणो
 उज्झित आहारो । समण वणि मग कोई न वन्दे
 किम तुम कण्ठ उतारो ॥ धन्ना० ॥४॥ वार ईकीस
 जल माही धोई, ते अन्न खाई जल पीयो । ऐसो
 तप सुणी उर कंपे, धन धन थारो जीयो ॥धन्ना०॥
 ५॥ चउदह हजार मुनीश्वर मांही, आपने वीर
 बखायया । दर्शन आपको पुण्यवन्त पावे, मैं पिण
 आज पिछायया ॥धन्ना०॥६॥ नव मासे सुघ संजम
 पाली, सर्वार्थ सिद्ध जावे । रामचन्द्र कहे ऐसे
 मुनिजी, क्यों नहीं मुक्ति सिधावे ॥ धन्ना० ॥७॥



६४ श्री विजयकथर और विजयाकंबरीकी बनबी बंटी ।

श्री विजयकथर और विजयाकंबरी भारी ।
 भर जोरम में पास्यो शीत के ममता भारी ॥१॥
 ये कच्छ देश और कंबुनी नामा नगरी ।
 जहाँ बाग बगीचा शहर के सोभा सगरी ॥
 ये बघा नामा सेठ दास हैं बबरी ।
 श्री विजयकथर के धर्म करणरी लगरी ॥
 पुण्यबल्ल मिला है विजयाकंबरी भारी ॥भर०॥१॥
 खाले करके सिद्धार पिऊ पे जाती ।
 गहणा पहिर्या है लूण धूपर धमकाती ॥
 वाहम से सुन्दर मम धरी बठलाती ।
 कामी की जाती घरर घरर धरती ॥
 दिन करके बोस विजयकथर सुन प्यारी ॥भ०॥२॥
 ज्यों मदन दीपन हो ऐसी बातों करती ।
 मे कृष्ण पद का त्याग लिया मुनिधर धी ॥
 यों सुन के सुन्दर बोझी मयमा झरती ।

मै शुक्ल पत्र का त्याग लिया नहीं डरती ॥
करे वैन भाई ज्यों मिल वातां इकतारी ॥भ०॥३॥
श्री विमल केवली वखान इनका कीधा ।
जिनदास सुश्रावक सुनकर आया सीधा ॥
कर भाव मुनि का दर्शन हिरदा भीजा ।
अरु खूब हुवा मन खुश के अमृत पीधा ॥
तब मात पिता ने सुनी बात हुई जहारी ॥भ०॥४॥
यों सकल जब जाण्यो कंवर कंवरी को ।
घर प्रच्छन्न पणे में शील पाल रजनी को ॥
जाने जहू धंद सब फंद जान सब फीको ।
ले करके आशा पंथ लियो मुनिजी को ॥
जाने शुद्ध पाल के शील आनमातारी ॥भ०॥५॥

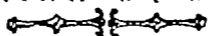
६५. देवकी राणी का भ्रूण ।

तर्ज-धीरा चालो वीरज का वासी० ।

हम भूरे देवकी राणी, यातो पुत्र विना विल-
खाणीरे ॥ टेर ॥ म्हें तो सातों नन्दण जाया, पिण्ड

एकज गोद खिलायारे ॥६०१॥ घर पाहसो नही व
धायो नही मचुर हासरियो गायोरे ॥६०२॥ घुघरा
शूझनी नाहि वसाई भुमर पिणु नहि वंधाईरे
॥६०३॥ नही गदप्या कपडा पहिगया, नहि मगस्या
टोपी मिशायारे ॥६०४॥ नहि कागल झाल लगायो
नहि स्नान करीमे जिमायोरे ॥ ६० ॥५॥ नहि गाह
दामसादीषा वलि घांइ मुरज नहि कीघारे ॥ ६०
॥ ६ ॥ नहि स्नान पय पान करायो कठा मे साहि
मसायारे ॥ ६० ॥७॥ म्हें तो रुडिया नाहि उठापो,
नहि भंगुली एकड बसायारे ॥ ६० ॥८॥ घूषू कही
नाहि इरायो नहि गुद गुस्या पाइ ईसायोरे ॥६०
॥ ९ ॥ नहि मुत्र पे शूबा दीषा नहि हरव घारसा
लीघार ॥ ६ ॥ १० ॥ नहि चढी मचरा मंगाया,
नहि गुसिया गेंद बसायारे ॥६०॥११॥ म्हेंतो जन्म
तया दुख रेण्या गया विफल जन्म जसेव्यारे ॥
६० ॥ १२ ॥ में भ्रमागण पुण्य न कीषा निसकी
सुत विवका लीघारे ॥६०॥१३॥ गझे बे हाथ नखर
ई धरती भाम्य चाम् मरु मुरती रे ॥ ६० ॥१४॥

पग वन्दन किसन पधारे, माजी ने उदास निहारे
रे ॥ इ० ॥ १५ ॥ कहे अमीरिख किम दुख पावो,
माताजी मुझे फरमावोरे ॥ इ० ॥ १६ ॥



६६. श्री आदेश्वर का आह्वान ।

तज-धीरा चालो वीरज का वामी ।

आवो २ हमारे घर स्वामी, आदेश्वर अन्त-
र्यामी हो ॥ टेर ॥ कोई हस्ति सिनगारी लावे,
इगरी गले घूंघर माल पहिरावे हो ॥ आ० ॥ १ ॥
प्रभु दया करीने गज लीजे, असवारी कीजे
हो ॥ आ० ॥ २ ॥ कोई अश्व अनोपम लावे,
रतना में साज सजावे हो ॥ आ० ॥ ३ ॥ प्रभु
घुड़ले आप विराजो, प्रभु पग पाला नवि छाजो
हो ॥ आ० ॥ ४ ॥ कोई लावे रथ सुकपाला, प्रभु लीजे
दीन दयाला हो ॥ आ० ॥ ५ ॥ प्रभु चरण कमल सु-
कमालो, प्रभु पग पाला नवि चालो ॥ आ० ॥ ६ ॥
कोई लावे कन्या सिनगारी, प्रभु सोहे जोड़

तुम्हारी हो ॥ अ० ॥ ७ ॥ कोई लावे धाल मर मोती
 कोई पाट पिताम्बर घोती हो ॥ अ० ॥ ८ ॥ कोई
 लावे मान दुशासा मभु पहरो अति सुख माला
 हो ॥ अ० ॥ ९ ॥ हम विध २ वस्तु लावे, विष आहार
 कोई न पहिरावे हो ॥ अ० ॥ १० ॥ मभु घर २ आंगण
 लावे विष देन २ फिर जावे हो ॥ अ० ॥ ११ ॥
 भोलानर मेह न जाण, मुनि मारग नाहि पिछासे
 हो ॥ अ० ॥ १२ ॥ आगे विष ही न सीधी शीला
 नहीं मांगी घर २ मिछा हो ॥ अ० ॥ १३ ॥ मभु के
 वार हजार हुआ बेला बे करे आहार बिन होला
 ॥ अ० ॥ १४ ॥ मभु में आहार बिन पुख पाषां हम
 तुमने साफ सुनावां हो ॥ अ० ॥ १५ ॥ मभु अस्तव्य
 निज जासो मम राग रोष नवि आसे हो ॥ अ०
 ॥ १६ ॥ एक वन्य आहार नहीं पाषा पकै इस्तनाग-
 पुर आया हो ॥ अ० ॥ १७ ॥ कहे अमीरिख भेबांस
 कुमारी पहिरावो इहुरस आहापो हो ॥ अ० ॥ १८ ॥

६७. प्रभु वीर जन्माधिकार ।

हारे सुधर्मा पति निजमन चिंतवे हरणगमेपी
 बुलाओरे । स्वामीजी को जन्म भयो है जिन मुख
 जोवा जाओरे ॥ स्वा० ॥८॥ जान विमाण घनाय
 मनोहर घटसुं घोष वजाओरे ॥ स्वा० ॥९॥ हुकम
 कर्णेने वेग मुकलाओ धनसुं भण्डार भराओरे ॥
 स्वा० ॥ १० ॥ आई २ दशा छपनकंवारी हरप हरण
 गुण गाओरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ चार आगुल प्रभु को
 नालो छेदी वज्र हीरा से खाड बुराओरे ॥ स्वा० ॥
 १२ ॥ स्नान एक ने मंजन दूजो मधुर २ गुण गाओरे
 ॥स्वा०॥१३॥ संपत सहित निरख मुख माता चरणे
 शीश नमाओरे ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ अपहरा सर्व लगी
 एक ओले निरख हरख सुख पाओरे ॥ स्वा० ॥१५॥
 इतने सुधर्मापति इन्द्र पधार्या आई ने शीस नमा-
 ओरे ॥ स्वा० ॥१६॥ भय मत पाओ माता रत्नकूँख
 धारणी में सुरपति थारा गुण गाओरे ॥ स्वा० ॥१७॥
 एक इन्द्र हाथे लई चाल्या, एक तो छत्र धराओरे

॥ स्वा० ॥१॥ एक घड़ भागे कई चासे हो बाजू
संघर कुराओरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ मेइ शिखर पर
महोत्सव कीषो इन्द्रायवा हर्य बधाओरे ॥ स्वा०
॥ १२ ॥



६८ राजमती ।

उधसेन की लखी २ बेमजी बम्भन गिरमार
अड़ी । सती राजमती २ प्रसुजी बम्भन गिरमार
अड़ी ॥ टेर ॥ मारग में जाना कूठाजी मेइ भीड़-
मई सारी नवरंग कय ॥ उ० ॥१॥ देव गुफा देखी
पैठी निगधार भीर नीषोबे देखो राहुलगाए ॥
उ० ॥ २ ॥ नवल्लो रूप देखी रद्या रहमैम संजम
उज धार्यो तासु मन प्रेम ॥ उ० ॥३॥ ये साइब कुल
साहस भीर शियम रतन देखो लोको मत भीर ॥
उ० ॥४॥ समन आहार वन्दे नही कोय ज्यनि तावे
फाग कुल्ला जो होय ॥ उ० ॥५॥ विविध पवन कई
संजम ठाय देवर मे राजमती समझाय ॥ उ० ॥६॥



६६. तर्ज-काँड़े जवाब करूं रसिया ।

काँड़े प्रभाव कहूं गुरु को, भाव कहंगो प्रभाव
 कहंगो, गुरुजीरा चरणों में लपट रहंगो ॥ १ ॥
 कहोजी गुरुजी थाने किय विध सेऊं, ज्ञान दियो
 जिणरो काइ देऊं ॥ १ ॥ एक वचन गुरुदेवजी थारा,
 ऊपर वारूं पदारथ सारा ॥ २ ॥ बड़ी वस्तु जितरी
 जग मांही, तुम उपकार तुले कोई नांही ॥ ३ ॥ ज्ञानी-
 पुरुषां ज्ञान सगयो गुरु विना ज्ञान कठा सूं आयो
 ॥ ४ ॥ जो जग में गुरु आप न होता किय विध
 आज हिताहित जोता ॥ ५ ॥ जो जग में गुरु
 न होता कठिण करम मलने कुरण धोता ॥ ६ ॥ जो
 जग में गुरु आप न होता, टाल तो कौन गजवर
 गोता ॥ ७ ॥ गुरु सेव्यां पशु पुरुष कहावे, पत्थर
 सो पारस पद पावे ॥ ८ ॥ जग रूठां गुरु आप
 उधारो, तुम रूठा नहीं राखन हारो ॥ ९ ॥ किरपा
 कर दुविधा सब टारी 'अमृत' तो गुरु की बलि-
 हारी ॥ १० ॥

७० तर्ज-बीग सुग्गां मूर्गां होय भादजी ।

म्हानि लागे पूज्य गुरु प्यारा जो दिव शिपवा
बतागजी ॥६६॥ गुरु काम प्यान का बरिया गुरु
पिनय विवेकां मरियाजी ॥ १ ॥ गुरु मुद्रा मोहन
गारी म्हानि लागे सूरत प्यारीजी ॥२॥ गुरु सिद्धि
सम्फदा त्यागी जिय शिवरमणी सं स्यागीजी ॥३॥
गुरु आप तिरे परतारे सब जीवांच काज सुघारे
ली ॥ ४ ॥ गुरु इतरी किरपा कीजो म्हाने साची
समकित दीजोजी ॥ ५ ॥



७१ तर्ज-खेखन दो मनगोर ।

खेखन बे दीवार सहेली खेखन बे दीवार ।
हे म्हारा समकित वा इतार सहेली खेखन बे
दीवार ॥६६॥ त्याग अनोपम अथस विराजे, समक
ली निहार । मङ्गधारी भावा भावारी, मिन
शासन सिद्धगार ॥ १ ॥ उपदेश कटा हे अजब
रिगली सुन दये तरमार । पाचबडी-मद गाखन

घारा, ज्ञान तरणा भरडार ॥२॥ धर्म थकी दिगताने
राखे, भाखे वचन विचार । चाखे समता रस
गुण दरिया, हरिया पाप श्रठार ॥ ३ ॥ रजो हरण
राखे रक्षा हिन मुखपत्ति मुख सुखकार । दुकर
तप धारक गुण युक्ता, पटकाया प्रतिपाल ॥ ४ ॥
तुम चरणों में चित्त वस्यो है, उपकारी अनगार ।
मोहन मुद्रा पे बलिहारी, जावां वारंवार ॥५॥

७२. तर्ज- तावडा धीमोसो पड़जा ।

परम गुरु लागे मोय प्यारा रे, जिनमत का
शृङ्गार गुरुजी है मोहनगारा ॥ टेर ॥ चन्दा जैसा
शीतल गुरुजी, सागर सम गंभीर । सूरज जैसा
गुरु प्रतापी, निर्मल गंगा नीर ॥ १ ॥ खंधक जैसा
क्षमावान गुरु, गौतम सा गुनवान । धन्ना जैसा
घोर तपोधन पारस सा पुण्यवान ॥ २ ॥ केशी
जैसा हो उपदेशी, युक्ति कला भंडार । ज्ञानी
ध्यानी गुरु गुणवन्ता, जिन सासण सिणगार ॥३॥

तारुण तिरुण अहाज सरीका सुरासिंह समान ।
पाकडी मद् गासन पासे बीर यिचरुण वान ॥४॥
कहाँ लग कीर्ति कुरु आपरी एक जीम म्हारी ।
घन ज्ञानि कुल वंश आपरो घत जननी घांरी ॥५॥

७३ ठरुँ—कमली बाल की ।

जिन धर्म का मरुटा बुनिया में फहराया प्यारे
सतगुरु ने अहिंसा का बंधा आत्म में बज्रयाया
मरे सतगुरु ने ॥ टेर ॥ मिथ्यात्व महात्म कूर
किया और सत्य एवार्थ बरसाये । फिर सत्य का
जलवा हर युग में प्रकटाया प्यारे सतगुरु ने ॥१॥
मिथ्यात्व तिमिर की सब जग में घन घोर घटाये
झाई थी । जिन शासन सूरज वहाँ पर भी चम-
काया प्यारे सतगुरु ने ॥२॥ पाकरी के भ्रम आठ
में भविजम जा मरमाये थे । वे सबूठपदेश किमारे
पर पडुंवाया प्यारे सतगुरु ने ॥३॥ पण पैल गया
गुरुदेव तग भारत के हीने कीने में । जिनपानी
का प्यावा बुनिया में पिलवाया प्यारे सतगुरु ने
॥४॥

७४. तर्ज-रसिया ।

म्हारा सतगुरु दीन दयाल कृपाकर वेगा
 आइजोजी, गाम गाम में जिनवानी को मेह वर्षा-
 इजोजी । घणा करी उपकार जगत में, जस थे पाइ-
 जोजी ॥१॥ हेतु न्याय दे पाखण्डी को, दूर भगा-
 इजोजी । करडा काठा वचन सुनी के, मत रीसाइ-
 जोजी ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यान की फुलवारी थे, खूब
 लगाइजोजी । त्याग और वैराग तणी थे, ज्योति
 जगाइजोजी ॥३॥ दर्शन प्यास वसी दिल माही वेग
 मिटाइजोजी । मुर्झित म्हारी फुलवारी को, शीघ्र
 सिंचाइजोजी ॥४॥ सुमति सयानी दिल जानी को,
 गले लगाइजोजी । कुमति के जंजाला मायने, मत
 विलमाइजोजी ॥ ५ ॥



७५. तर्ज-तावडा धीमो तो पड़जा ।

सुगुरु म्हारी बिनती सुन लीजो २ महर नजर
 कर सहर हमारो पावन तो फीजो ॥टेर॥ फुलवारी

ममरो मज्जेसरे चातक ज्यो जलघार । राठ दिपस
 ज्यु पलिया मम मै सतगुठ का शीशार ॥ १ ॥ ये
 उपकारी मोटका सरे धर्म तथा दातार बेगा
 बर्य दिगयजो सरे बीमती बारंबार ॥ २ ॥ गांव
 गांव को गट देखने मतना विसमाहजो । म्हामे
 मी ये याद गाममे गुठजी मूट आहजो ॥ ३ ॥ पाँरा
 दर्शन करके स्वामी लोखन बिकनाया । चापी सुन
 मम आज हमारा अनहद हर्षाया ॥ ४ ॥ आदि
 बीमती आदि आज ही मत ना विसपाहजो । पहा
 से करके पिहार हमारे सीषा ये आहजो ॥ ५ ॥



७६ नम्र—धीरा बाला विरत्र का वाधी ।

सतगुठ सा बंगा आहजो आहजो मै बर्य
 दिगहजोजी ॥ ६ ॥ मिठ्या मत दूर हटारजो सम
 दिन की ज्योन जगाहजोजी ॥ १ ॥ जिनबागी लुघ
 मुनाहजो भूमा मे धर्म बतारजो जी ॥ २ ॥ जिन
 शासन जोर दिपाहजो कुमत्या मे पंच सगाहजोजी

॥ ३ ॥ गुरु देश विदेशां जाइजो, थे जस ले म्हारे
ग्राइजो जी ॥ ४ ॥ ऐसमता रस गम खाइजो, गुरु
कभी मति रीसाइजोजी ॥ ५ ॥ म्हारी वीनती वेगा
आइजो, गुरु अब ना तुम तरसाइजोजी ॥६॥



७७. तर्ज-हा सगीजी ने पेड़ा भावे ।

हा गुरु मुक्त सहर पवारो, भव जीवांरा काज
सुधारो, तिरण तारण की जहाज राज भरलो
हुकारो रे ॥८॥ मोह ममता को दूर हटा दी, जैन
धर्म की ज्योति जगादी, चारों दिशां में फैल रह्यो
है सुयश तुम्हारो रे ॥ १ ॥ आप तिरो ओरों ने
तापो, ऐसो विरद लगे मोय प्यारो, खटकाया
प्रतिपाल अरज म्हारी अवधारो रे ॥ २ ॥ गांवों
गांव ज्ञान फुलवारी, सींची वचनामृत भर भारी,
पाखण्डी मद गाल श्रद्धा को कियो सुधारो रे ॥
॥३॥ नर नारी दर्शन का प्यासा, तन मन से कर
रहे हैं आसा, जलदी कर मंजूर हमोरो मान

घघारो रे ॥ ४ ॥ अब होगा दीवार तुमारा घघ
 वही दिवस हमारा, 'मानूँ मिलियो राज भाइ
 मिहूलोकां वारो रे ॥ ५ ॥

७८. ठर्ज-मावा सीता के खोले में हनुमत्० ।

बैगा भाइजा हो गुठवरी म्दनि तारवा हो
 अग में अनमें भाप गुठवी अगत उखारवा हो ॥
 हेर ॥ सुरगुठ सम हो महा बुषबाम बावी गुठ
 वसमांरी काम गहरा स्वामी सिन्धु समान ॥ १ ॥
 गुठवी परम पैराणी स्वागी रिद्धि सम्पदावी मन
 से ममता मोह निवार करते गुठपर उम विहार,
 मन तप धान्यो बुद्धर कार ॥ २ ॥ बावी गुठवन्ता
 गुठवैव हैं पुनरा पोरसावी, धरि दर्यन के परताप
 जावे पाप ताप खन्ताप होवे मझिन हृदय भी
 साक ॥ ३ ॥ गुठवी करके पूरख महर सहर पभार-
 जोवी धर धर होसी महुसाबाद आनन्द पासी
 सब नरनाद उखरी बीजो भाप विहार ॥ ४ ॥

७६. तर्ज—मेरी जमीर सोने की ।

अरज है आप से मेरी, हमारे क्षेत्र में आना,
विचरते हर जहां जाना, गुरुजी भूल मत जाना
॥ टेर ॥ लगी है यह लगीन दिल में, तुमारे दर्श
करने की । विनय सुनना अरे स्वामी, अधिक ना
आप तरसाना ॥ १ ॥ तुम्हारी दिव्य वानी पर
पपीहा हम बने प्यासू । सरस घन स्वाति की बूंदें
श्राय कर आप बन जाना ॥ २ ॥ हमारे नयन यह
चक्रे, तुमारे को निहारेंगे । [गुरु बन चन्द्रमा
चन्द्रिका खूब चमकाना ॥ ३ ॥ रही कुमला मृदु
कलियां हमारे चित्त पंकज की । ज्ञान मय सूर्य
किरणों को फैलाकर शीघ्र विकसाना ॥४॥ वगीचा
धर्म का स्वामी, तेरे विन सुष्क होता है । कृपा
कर गुल चमन करना, सुधामय वानी बरसाना
॥ ५ ॥



८० वज्र-कमली वाले की ।

यह विमती हमारी सुन लीजो, भद्र दर्शन
 दीजो सत गुरुजी ॥ १ ॥ गुरुदेव बड़ा उपकारी
 हो आर्क चरखों की पहिंहारी रहे गुरु इतनी तो
 किरपा फिजो भद्र दर्शन दीजो सत गुरुजी ॥ १ ॥
 गुरुदेव तुम्हारे आने से ठाट धर्म का लागेगा ।
 आनन्द ही आनन्द होबेगा भद्र दर्शन दीजो सत
 गुरुजी ॥ २ ॥ जमता तुम्हारे दर्शन की दिन रात
 गुरुजी व्यासी है । धाम्ना पूर्ण कर दीजो भद्र दर्शन
 दीजो सत गुरुजी ॥ ३ ॥ दिन माझी के फुलवाड़ो बो,
 गुरुदेव उजड़ती जाती है । सीपा आ लवण लीजो
 भद्र दर्शन दीजो सत गुरुजी ॥ ४ ॥ विमती यह
 मंजूर करो गुरुपुर में पागुवा आप धरो । अब
 आने की जमनी फीजो भद्र दर्शन दीजो सत गुरु
 जी ॥ ५ ॥



८१. तर्ज-मेरी जंभीर सोने की ।

गुरुवर ! आपका आना, मुवारिक हो मुवारिक हो । सुदर्शन आपका पाना, मुवारिक हो मुवारिक हो ॥ टेर ॥ पघारे महिरवानी कर, अथि गुरु पूज्य ज्ञानीवर, संग सब शिष्य को लाना, मुवारिक हो मुवारिक हो ॥१॥ देख कर आज का जलवा, खुली आंखें जवानों की, मोद से आज गुन गाना, मुवारिक हो २ ॥ २ ॥ तुमारे दर्श के खातिर तरसती आंख ये मेरी, तरस पाते को हर्षाना मुवारिक हो २ ॥ ३ ॥ गुरुवर आपका आना, नगर में रंग का छाना, मेरा भी आज का गाना, मुवारिक हो २ ॥ ४ ॥



८२. तर्ज-गवरल ईसरजी कहवे तो हंसकर बोलना

सहियां गावो ए वधाश्रो, सत गुरु आविया जी ॥ टेर ॥ गुरुवर ज्ञान गुणाकर भरिया, आतम तारक दरिया, विचरत २ यहां परवरिया, गुरुजी

शिष्य बड़ा गुनवन्ता संग में लाधियात्री ॥ १ ॥
 बहुत दिनों की थी अमिलाया जैसे घन का बर-
 तक प्यासा फल गई भाज हमारी आशा पासा
 डल गया है मन आया मङ्गल लाधियात्री ॥ २ ॥
 आलो मिल सुल बदिनों सारी भाये भाज गुठ गुठ
 घानी लागे मुझ मोहन गारी आँके बरबारी
 बलिहारी आशा पारियात्री ॥ ३ ॥ पूरे पुण्य से सत
 गुठ आया घर घर में आनन्द बरसाया मिल
 सुल वाँटो रंग बघार्या मरी का गुणवन्ता महापद
 भाज गुण गाधियात्री ॥ ४ ॥

८३ तर्ज—ठाबड़ा पीमो ता पड़भारे ।

भाज म्भारा नतगुरुजी आया रे २ पूरे पुण्य
 से पूज्य गुठ का दर्शन में पाया ॥ देर ॥ धन्य
 दिपन है भाज हमारे बलिठ फल पाया । धन्य
 घकी धन्य भाग्य हमारा पुण्य बरप आया ॥ १ ॥
 किस रेश में किस चेज में दिम ये दिताया ।

धर्म ध्यान का प्रेम लगा धाने, कहो कुण विल-
माया ॥२॥ इतरा दिन तो केइ मिस लेकर काफी
तरसाया । आज दयाल दयाकर मझं पर, आनन्द
वर्षाया ॥ ३ ॥ सतगुरु आया शहर में, तन मन
हुलसाया । मोहनगारा गुरु दर्शन कर, लोचन
विकसाया ॥४॥ केइ दिनों की थी अभिलाषा, नीठ
दर्श पाया । अल्प बुद्धि अनुसारे आज मै, सत
गुरु गुण गाया ॥ ५ ॥

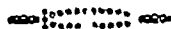
८४. तर्ज-जाली का मोरा काठना ।

सखी सहेल्याए, चालोनी गुरु वन्दने ॥ टेर ॥
आज शहर में सुगुरु पधार्या सारख्या दंछित काज
चालोनी गुरु वन्दने ॥ १ ॥ केई दिनों की मेरी यह
भ्राशा, पूरण हुई आज चालोनी गुरु वन्दने ॥२॥
आज हमारे सुर तरु फलियो मिलिया मनोरथ
माल चालोनी गुरु वन्दने ॥३॥ बटत घरो घर रंग
घघाई, हर्षी सकल समाज चालोनी गुरु वन्दने ॥
४ ॥ गुरु सेवा से मोक्ष मिलत है, गुरुजी है धर्म
जहाज चालोनी गुरु वन्दने ॥ ५ ॥

८५ तर्ज-गवरण ईश्वरजी कह्ये तो ईश्वर बोधनाए

बसिहारी हो सतगुरुजी धार्य ज्ञान की हो
मनको हरण्यो म्हाये देख कृपा वक्तान की हो ॥
देर ॥ ज्ञानी ह्य पर मत जान गिरवा मुख एतनापी
जाम गालो पार्श्वद्विषों का मान ॥ १ ॥ परिपदा
ठाट मुख आगसेजी आये सिद्ध रही देहर क्यारी
बाखी अपवद कर नरनारी मिरखे मुद्रा मोहनगारी
॥ २ ॥ गाओ घन ज्युं बहुत विष संघ में हो सुतर
भिन भिन करनै पायो माको ह्या में साबो
निस विन ज्ञान ध्यान में राखो ॥ ३ ॥ कुचिया वरुण
बुकानरी ओपमाजी परसन ओ पूरे सो तैपार,
उत्तर देखो द्विये उतार धारी बुध को कहन पार
॥ ४ ॥ सीमो लोग कुडुम्ब रिष कोइनेजी आण्यो
ओ सँसार असार विविष कोख्या पाप अहार
जीधो घोर महामठ धार ॥ ५ ॥ अमय जाम विषो
कठकाय ने जी मय अल तारुण तिरु अहाअ
सारो निअ पर आत्म काम शीतल आनम ज्यो

द्विजराज ॥ ६ ॥ बुध निर्मल थांरी श्रुत केवली हो,
थाने सुरनर शीश नमावे, पूरण सुरगुरु पारन
पावे, किंचित किसनलाल गुण गावे ॥७॥



ददं. तर्ज—मोला बुलालो मदीने मुझे ।

मेरे गुरु ने ज्ञान सुनाया मुझे, मिथ्या नींद से
आके जगाया मुझे ॥ १ ॥ सो रहा था मस्त हो
कर मिथ्यात्व खोटे ख्याल में, खो रहा था आत्म
धन को मोह माया जाल में, सच्चे गुरु ने आके
जगाया मुझे ॥ २ ॥ निक्षेप और नय वाद का निर्दोष
गुण निर्णय किया, उतसर्ग अपवाद का सब सत्य
रहस्य बता दिया, भर ज्ञान का प्याला पिलाया
मुझे ॥ ३ ॥ जगत्कर्ता है नहीं जगदीश प्यारे
देख लो ऐसी बातों का प्रेमी बनाया मुझे ॥ ४ ॥
दान देकर दीन पर उपकार करना सीख लो धर्म
जाती देश हित कुछ काम करना सीख लो, सच्ची
श्रद्धा का तत्व सिखाया मुझे ॥ ५ ॥ धर्म हित हिंसा

का करना धर्म से प्रतिकूल है परम अर्थात् धर्म
प्यारा न्याय से अनुकूल है, ऐसे न्याय गुद के
बचाया मुझे ॥ ५ ॥



८७ तम-पनकी मूढे बोझ ।

आम रंग बरसेरे १ म्हाते बाणी सुण सुण
दिवको हवेरे ॥ १ ॥ पाठ रिगाओ धन ज्यु गाओ
बाणी असूत बरसेरे । मबिजीधों की बाणी सुण
सुण दिवका बिकसेरे ॥ २ ॥ ज्ञानी गुहजी काव
सुसाओ बाणी बफी करसेरे । पार लंघ की
सुमी वरधवा भक्ति कलसेरे ॥ ३ ॥ बफी मओहर
बाणी धारी सुनबा आऊँ घर से रे । स्वाती बूँद
ज्यों बातक तरसे त्यों मन तरसेरे ॥ ४ ॥ गुह
मुकधी मदि रतीलो ऐसो असूत भरसेरे । काम
कोप मइ लोम इव्य का मूरा टलसेरे ॥ ५ ॥



८८. तर्ज-तरकारी लेलो माजन आईरे ।

म्हारी वन्दना तो झेलो, मै छूं श्राविका सुंदर
सहर की ॥ टेर ॥ बांध मुखपति करूं सामायक
राखूं पूंजनी आछी । पडिकमणो वे विरिया करंती,
तो मै श्राविका साची ॥ १ ॥ वास वरत में करूं
तपस्या, नहीं करणी में काची । पखी पर्व का
पोसा करती, जद ही श्राविका साची ॥ २ ॥ भार्ये
घैठी भाऊं भावना, साची दिल में राची । स्थानक
जाऊं बेगी ऊठने, तो मै श्राविका सांची ॥ ३ ॥ देव
गुरु की करी ओलखना, धारिया जांची जांची ।
हिंसा धर्म के संगन जाऊं, तो मै श्राविका सांची
॥ ४ ॥ हीगलाल कहे ऐसी श्राविका, भणी गुणी
पुस्तक वांची । विनयवन्त गुणवन्त कहावे, सोहि
श्राविका साची ॥ ५ ॥



८६ उर्म-जाबड़ो धीमो तो पड़जा रे ।

गुरुजी मे धान दिवो मारी रे २ मिथपिन कर
 समझाया सतगुरु आऊँ बहिदारी ४ डेर ॥ बायी
 आपकी मधुर मनोहर, सब मे सुनकारी । इत
 ध्यान में राखो मिल दिन पूषु अणकारी ॥ १ ॥
 बायी आपकी सुणकर मारो, मिठ गबो विषय
 विचार विष विष कर परसाओ स्वामी, शक्ति
 सुधा की धार ॥२॥ पाट विराजो घन ज्यो नामो
 सोमो सिंह समान । मिथवाती मद् गासो गुरुजी
 सकल मूढ का जान ॥ ३ ॥ मुझ से गुण तो कहा
 न जाये यमिं गुण हि विशेष । बन्धना मारी
 अकिन भाय से हूयजो गुरु हमेश ४ ॥



९० उर्म-जाबड़ो धीमो तो पड़जा रे ।

गुरुजी साता मे रहिजो हो २ आप विचरजो
 दिव रेश में पाहा मद् आरजो ४ डेर ॥ अथ अल
 नरही स्वर्ग निभरही कण्ठी से कीजो । कोष

मान मद लोभ कपट तज, समता रस पीजो ॥१॥
भवि जीवों ने गाम गाम में, बोध बीजा दीजो ।
जैन धर्म को खूब दिपाकर, जग में जस लीजो ॥
२॥ कठिण मारग मुनिराज आपको, सुध मन से
सहिजो । मच्छरता तज दूर आप डर, उत्तम गुण
लीजो ॥ ३ ॥ पाट दिपाओ गुरुराज को घणा वर्ष
जीजो । तुम जिसड़ो त्यानी जग मांहे, लाधे नहीं
बीजो ॥४॥ कृपा राखजो करुणा सागर, भूल मति
जाइजो । जिनवानी का प्याला सतगुरु, जलदी से
पाइजो ॥५॥ प्रेम भरी आ वीणती सरे, उर में धर
लीजो । कृपानाथ करुणा कर स्वामी, दर्शन भट
दीजो ॥ ६ ॥

६१. तर्ज-पनजी मूंडे बोल ।

वेगा आइजो हो २ गुरुदेव आप म्हाने भूल न
जाइजो जी ॥ टेर ॥ जैन धर्म को प्रेम लगा मत,
अध विच में छिटकाइजो हो । विचरत २ वेगा

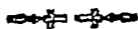
म्दाने दरम दिराहो हो ॥१॥ धार संघ ही दर
 फुलधारी सतगुरु मत कुमलाहो हो । जितधानी
 की झड़ी लगाकर सरस यमाहो हो ॥२॥ इत
 म मस्त होय मुनि गुरु को पाट दिपाहो हो ॥३॥
 पाखण्डी मय गाल गुरुजी पाने जीनी बनाहो हो
 गैम धरम को झण्डो अग में जबर अमाहो हो
 ॥४॥ हाथ जोड़ कर आही धीमती, ध्यान में सेठा
 जाहो हो । धारह मास में एक पाट तो आया
 रहिहो हो ॥ ५ ॥



६२ ठकै—कहंते आमारें देवरिया ।

आसी आसी हो सतगुरु धारी ओखंडी अन-
 पार ओखंडी अनपार सतगुरु ये हो तारख हार
 ० टेर ॥ काम काज तज धर सुं आसी बापी सुख
 सुख के सुख पाती आती मरीये आज हमारी
 सुख के गुरु को विहार ॥१॥ जिन धरनों की धी
 में व्यासी अब कहो अशुभ कौन पितासी आने

उदासी आज गुरु विन करसी कौन संभार ॥ २ ॥
गुरु विन सुत्तर कौन सुनासी, भूला ने कुण
राह लगासी, गुरु विन भूठा राग रंग म्हारे सूनो
सब संसार ॥३॥ सत गुरु ज्ञान ध्यान का रसिया
मारे गोम रोम में वसिया, सुन करके अरदास
गुरुजी ठहरो फिर दिन चार ॥४॥ देश विदेशां में
सतगुरु जाइजो, पाछा वेगा आइजो, होसी हर्ष
अपार जल्दी मै देखूला दीदार ॥ ५ ॥



६३. तर्ज-रसिया नवीन ।

म्हारा सतगुरुजी गुणवन्ता पाछा वेगा आइ-
जोजी, वेगा आइजोजी म्हाने भूल न जाइजोजी ॥
टेर ॥ कुमत सखी के कपट मायने, मत विलमाइ
जोजी । सुमति सहेली संग सदा सुख शांति मना-
इजोजी ॥ १ ॥ म्हाने विलखा छोड़ गुरुजी, अलगा
न जाइजोजी । साल सम्भाल हमारी लीजो, आया
रहिजोजी ॥२॥ जिन वानी को अमृत पायो, फेर

विलाहसोत्री । मूर्छों पापी की मैया, गर सगाहसोत्री
 ॥१॥ हाथ जोड़ मे आही विनती, सुनवा आहो
 जी सारा सस्तों के साथ गुरुजी अहरी आहोत्री
 ॥२॥ गाँम गाँम में जैम धर्म को लूब विपाहसोत्री ।
 सुनओ स्वामीनाथ बात से अस छे आहोत्री
 ॥ ५ ॥



६४ तर्क-मरी मंजीर सोने की ।

गुरुजी आपका जाना हमें बहुत पार आबेगा,
 भगम का आप विन अल्लाह गुरुजी कुछ बतावेगा
 ॥१॥ पकड़ के प्रेम से पैया नीव से कुन जगा
 वेगा । अनुपम आत्मा अनुभव का कइो कुन एस
 विलावेगा ॥ १ ॥ मुझे है आसरा छेरा इसी संसार
 सागर में । पकी हि मंजर में मैया छेरे विन कुम
 बधावेगा ॥२॥ एसिक पइ कान आसिक है तुमारी
 दिव्य पानी गर आप विन बीर की धानी कीन
 हमको मुलावेगा ॥ ३ ॥ तुमारी ममता समता

क्षमा दम शील संयमता । दिव्य गुण आपके
स्वामी, सदा शिक्षा सिखावेगा ॥४॥ पियारे पूज्य
गुरुवरजी, सदा आनन्द में रहना । दर्श फिर आप
का होगा, जवी आनन्द आवेगा ॥ ५ ॥



६५, सद्गुरु स्तुति ।

कव्वाली ।

धन्य धन्य भाग हमारे, यहां सद्गुरु पधारे ॥६॥
देखो मुनी की करनी, मुख से न जाय चरनी,
जिन नाम सदा उच्चारे ॥ यहाँ० ॥१॥
आवो तुम सांज सवेरी, मत ना लगावो कुरी,
अवसर को मत चुकारे ॥ यहाँ० ॥२॥
दुर्गुण को दूर हटाओ, प्रभु चरणें चित्त लगायां,
सिद्ध होय काज तेरे ॥ यहाँ० ॥३॥



६६ गुरु धन्वन ।

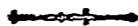
उक्त्वा—वारिवा वारिवा वारिवाते ।

धन्वना धन्वमा धन्वमा रे, ज्ञामी गुरुजी मे
 म्हारी धन्वना ष्टेरः॥ धन्वमा कन्वास्व धानज धाने
 ऊषा पक्षो ठावनारे ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ गुरुजी बुद्ध्या
 तद्वत् उधारो कर मोड़ी मे बोसनारे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥
 गुरुजी पद्याप्या उमोसी रहनो पधारो पधारो
 रम केवनोरे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ विनय मूढ जिन धर्म
 भाष्यो मव अक्षगुह कूर निवारनारे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥
 रत्नश्रुति कहे शील जो माने गुरु वचन शिर
 धारनारे ॥ ज्ञानी० ॥ ५ ॥

६७ गुरु परानि विर्मती ।

भूख मत जाबोजी गुरु म्हाने । विस्तर मत
 जाबोजी गुरु म्हाने । म्हे अरज कक हूं धाने ॥
 भूख० ॥ ६७ ॥ सत गुरु प्रेम विषा विष अक्षिया
 प्रकट काई के धाने । जो मुक्त से अपरायण बने तो

करम दोष गुरु म्हाने ॥ भूल० ॥१॥ भवसागर यह
जल से भरियो, जीव तरण नहीं जाने । जीरण
नाव जोजरी डूबे, पार करो गुरु म्हाने ॥ मूल० ॥
२ ॥ मै चाकर चूक पड़ी तो, गुरु श्रवण नहि
माने । मै बालक गुन्हा किया बहुतेरा, पिता विरुद
इम जाने ॥ भूल० ॥३॥ मेरी दौड़ जिहां लग लागे,
नमस्कार चरणों में । मेखंदास कर जोड़ वीनवे,
धन धन हैं सन्ताने ॥ भूल० ॥४॥



६८. गुरु दर्शन विनंती ।

तर्ज-ख्याल की ।

गुरुदेव हमारा, थाकां दर्शन की म्हारे भावना ।
सुणो सखी सहेल्यां, तन धन चारु रे करसूं घघा-
वणा ॥ टेर ॥ तीन लोक को द्रव्य ही सारो, करूं
मेट तो थोड़ो । दर्शन करके करूं विनन्ती, क्यूं
दर्शन दियो मोड़ोजी ॥ गुरु० ॥१॥ मात पिता सुत
मित्र रु स्वामी, खड़े खड़े सब भांके, समरथ

नहीं कोई तरफ टाकना बाह पकड़ गुठ राखेजी
॥ गुठ० ॥ २॥ अम्पत्व टाली ने मेष दिये और, अ-
पूज्य को पूज्य बनाये । पशुता टाली जन्म सुधारी
सर पकित में कायेजी ॥ गुठ० ॥ ३ ॥ भव भव में
मुक्त सद्गुरु सेवा दीजो सर प्रभु मांगूं । मुनिराम
कहे गुरु वरान दीजो सुकसुत सागुजी ॥ गुठ० ॥ ४ ॥

धीमान् पूज्य भी अम्पाकालजी महाराज विरचित
भजन-संग्रह

६६ पंच परमेष्टि स्तुति ।

तर्क-हीन नमः ।

प्रभात ऊठ पंच परमेष्टी नमू करी ।
जिन नाम से समार जाय दिन माही ने तेरी ॥ ६६ ॥
अरिहन्त बेब गुण्य अति साय तो गिरी ।
सुन पाणी आपकी हमारा पित किया करी ॥ प्र० १ ॥
सकल कार्य सिद्ध कर गुण्य अष्ट तो घरी ।
सब शत्रु कर्म नोक के शिष्य सुन्दरी घरी ॥ प्र० २ ॥

आचार्य उपाध्याय परम पूज्य तो सिरी ।
छत्तीस और पचीस गुण ज्ञान की भरी । प्र० ३॥
सत्तावीस साधु गुण गंग नीर तो भरी ।
गुण एकसो ने आठ जाय पाप तोड़िये श्री प्र० ४॥
प्राणनाथ पंच प्रभु तोड़िये श्री ।
दो ज्ञान करूँ पार दया धर्म आदरी ॥ प्र० ५ ॥
भव पार सिंधु तारिये प्रभु मुज कर श्री ।
कर जोड़ करे अरज चम्पालाल पग परी ॥ प्र० ६॥

१००. प्रभु स्तुति ।

तर्ज-इन्द्र सभा ।

प्रह उठी मैं सदा नमूँ प्रभु पंच परमेष्टि नाम ।
इन कर्मों के लिये नहीं मुझे आराम ॥१॥
दिल लगा है आपसे प्रभु नहीं और से काम ।
अरजी मेरी लीजिये प्रभु लगे नहीं कछु दाम ॥२॥
लख चोरासी जोन में प्रभु बड़ा विकट है ठाम ।
फिरते फिरते मैं थका प्रभु मिला नहीं विश्राम ॥३॥

अष्ट कर्म को तोड़ दो प्रभु शरणा आओ स्वाम ।
मन से अन्तर आएको मैं करूँ बहुत परकाम ॥४॥
आप सिरे संसार से प्रभु लगन लगी एक पण्य ।
जान तो मुझ को हीखिये प्रभु पाऊँ पद निर्बाह ॥५॥
सुख देवा पुत्र मेडवा प्रभु यही तुम्हारी बाण ।
मोघ गरीबकी बीनती प्रभु सुनिये कृपा निधान ॥६॥

— ❦ —

१०१ पथ परमेष्ठी स्तुति ।

पवित्र कव ।

प्रथम प्रार्थना प्रेम ही करूँ अरिहन्त देवमा
ध्यान में धरूँ । सकल जहाना स्वामी को खरा
अरर ! नाथजी आप ईश्वर ॥ १ ॥ शरण राखी
मिथ्य भाभना अधिक अन्तरे राखु आशता ।
कर्म पाप को प्राप्त तोड़या अरर ! बीरी जो संघ
खोड़या ॥ २ ॥ अनूप ज्ञान से आचार्य छोपता,
अरर नाथजी आप सङ्गदा ॥३॥ दिल में बस्या
उपाध्यायजी लरे ललि ललि नमूँ ई प्रत्यक्ष रे ।

सकल धर्मना धोरी स्वाम रे, अरर ! तोड़िया
 क्रोध काम रे ॥ ४ ॥ श्रमण सर्वनी सेव में सजूं,
 सुध मने भला भाव थी भजूं । गुण निधि गुरु
 जान आपजो, अरर ! कर्मनां कष्ट कापजो ॥ ५ ॥
 सरस्वती मया शुद्ध दो गिरा, दिल न ध्याणस्यो
 दोष माहरा । चम्पकलाल नी गहन वीनती, शरण
 सद्य दो निर्मली मती ॥६॥

१०२ भजन उपदेशी ।

वीतराग की बानी सुन लो, मिटे पापश्रो
 सहीजी । मिटे पाप० ॥८॥ मनुष्य जन्म पायो तू
 प्राणी, मान गुरु की कहीजी । तूं मान० ॥९॥ अब
 के अवसर क्यों नहीं चेतते, फेर जन्मश्रो नहींजी ।
 फेर जन्म ॥ २ ॥ रात दिवस तूं धंधे लागो, गयो
 जनम सच वहीजी । गयो जनम० ॥३॥ दुर्गुण को
 तूं त्यागज करजो, याहि अकलतने दईजी । याहि०
 ॥४॥ चम्पक मुनि सुन वैन सुधाकर, मोद भविक
 उर भईजी । मोद० ॥५॥

१०६ शांतिनाथ प्रभु की स्तुति ।

वन्दे-सात वे ।

साता करसोजी, महापता शांतिनाथजी म
देर ॥ सूर्यार्थ सिद्ध विमान से बची, हथियपुर
में आया । साता करबी साय जगत में माताजी
सुख पाया हो ॥ म० ॥१॥ तीन लोक में हर्ष मर्षों
सब गावे मङ्गलाधार । तीर्थकर पदवी से पाया
गुण से अपरंपार हो ॥ म० ॥२॥ अनाथ के मुनि
नाथ कबीरी तुम नाथम के नाथ । पारों तीर्थ
शरण आयो सोझी दोनों हाथ हो ॥ म० ॥ ३ ॥
सब सुख के तुम देते पाते सेवक तुमरे नाम ।
भव पार उतागे सागर से यह है तुमरो काम हो
॥ म ॥ गुरु हमारे रामरामजी गावे चम्पाताल ।
दाथ जोड़ के करुं पीतली करवो मुझे निहाल हो
॥ म ॥ ४ ॥



१०४. वीर स्तुति ।

मर्ज=पनजी मूढे वोल ।

मनडो मोह्योजी, महावीर स्वामी मुज दर्शन
 दीजोजी ॥ टेर ॥ दशवाँ सुरगथी चवि आया,
 बहोत्र वर्ष स्थिति पायाजी । पूरवली पुरयाई योगे,
 नाथ कहायाजी ॥ मन० ॥ १ ॥ सिद्धारथ राजाजी के
 नन्दन, त्रिशला राणी जायाजी । तीन लोक में रूप
 अनूपम, अधिको पायाजी ॥ मन० ॥ २ ॥ तीर्थकर
 पदवी से आया, ज्ञान घणोरो लायाजी । भविजीवां
 का काज सुधारी, मुगत लिघायाजी ॥ मन० ॥ ३ ॥
 जो नर मन में ध्यावे सो तो सुख अनंता पावेजी
 जन्म जराने मरण मिटावे, गर्भ न आवेजी ॥ मन०
 ॥ ४ ॥ गुरु हमारा रामरतनजो, दियो पाप छिट-
 काईजी । चोट लगी निज नाम धणी की मुज
 हिरदे खटकी जी ॥ मन० ॥ ५ ॥

१०५. भजन उपदेशी ।

वर्द्धनक ।

सुन लेना मुखाफिर बहना तो छाडि र धर
से होयगा ॥ ३६ ॥ बासपखा तो गया निकल कर
आई जवानी हाथ । बुढ़ापे का सुख बहुतसा
कहं कहाँ सय बातची ॥ सुन० ॥ १ ॥ सुल भई
रुही छब तेरी नहिँ बसता कहू जोर । सीवी
सुमरणी हाथ में तेरे दिल में पोका ओरजी ॥
सुन० ॥ २५ ॥ साईं नाम की बात बनी है, मेरी की
वसवार । मार बही को हूर हयओ फिर उतरों
मय पारजी ॥ सुन० ॥ ३ ॥ सुल बाहो तुम जीने
का तो बोको कुडुम्ब की भाय । दिल पे आकिन
राखतो तुम सुवा कका है पासजी ॥ सुन० ॥ ४७ ॥
सीख सुनी में गुरु बानी की जया कसेजे जान ।
गुरु हमारा रामरनजी करे बात की जानजी ॥
सुन० ॥ ५ ॥



१०६. उपदेशी ।

तर्ज-सावलिया रग फटा वाला तो पर जादू डारू रे ।

सतगुरु केरी घाणी सुन्नने, हिरदे शानज
लागो रे । हिरदे शानज लागो, उठो भव जीवां
जागो ॥टेर॥ घोर संसार असार इसी में, दुख को
है नहीं थागो रे । जो सुख चाहो जीने का तो,
प्रभु से अरजी मांगो रे, प्रभु० सत० ॥१॥ वीतराग
की घाणी जिनसे, धोवो दिल को दागो रे । चोर
करम इन्द्रिया संग लागी, इनसे अलगा भागोरे,
इनसे० ॥ स० ॥२॥ मात पिता और सासु सुसरा
रमण्या जम्बु आगोरे । सुनी घात सब चोर पान
परभवो लारा लागोरे ॥पर० स०॥३॥ आरो पांचवो
सुत्तर इनमें योहि ससुंदर थागोरे । गुरु हमारा
रामरतनजी, भर्म अंधियारो भागोरे ॥ भर्म स०
॥ ४ ॥

१०७ पञ्च परमेष्ठी ।

सर्व-व्यथी शंकर ।

सुनो पञ्च परमेष्ठी देव, जिनम्ब मोहे तारी
दीजोरे । अब करै मैं तुम्हारी सेव जिनम्ब मोहे
तारी दीजोरे ॥ १ ॥ देवाधि देव अरिहन्त जिनम्ब
मोहे तारी दीजोरे । श्री सिद्ध बड़ा भगवन्त जि-
नम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ २ ॥ सुनो आचार्य उच-
रन्त जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे । मुनि उपदेश
धी करे साध्य जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ ३ ॥
हुनो फस्यो मोहनी माय जिनम्ब मोहे तारी
दीजोरे । सप्तारसां लागी काय जिनम्ब मोहे तारी
दीजोरे ॥ ४ ॥ विकचिन्ह मैं मति मन्ब जिनम्ब
मोहे तारी दीजोरे । समन्वो नहीं मैं कन्ब जि-
नम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ ५ ॥ करधि करै चितलाय
जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे । अज्ञान तिमिर मिट
जाय जिनम्ब मोहे तारी दीजोरे ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

१०८. धन विषे ।

तज—नाव में नदिया इनी नाय ।

दुनियां धन में भूली जाय, कहा कहुं कछु कहा
 न जायरे ॥टेर॥ चोरी जारी करे लवाड़ी, मनमें राजी
 थाय । हिंसा करे पर प्राण की रे, धन लेवन की
 चहायरे ॥ दु० ॥ १ ॥ बेटा बेटी बेच देरे, न गिणे
 न्याय अन्याय । यातो मारे जीवतारे, धन से अत-
 रथ थायरे ॥ दु० ॥ २ ॥ सत हारे मत विगड़े रे,
 जातिसु भ्रष्ट होजाय । धर्म शर्म सगपण तजेरे ,
 भूटा सोगत खायरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ धूल खाय धन
 कारणे रे, सन्त महन्त कईराय । भूटा कई भगड़ा
 करे रे, लडे राज में जायरे ॥दु०॥४॥ चम्पक सुनि
 ऐसो कहे रे दीजे ममत हटाय । ऐसा अचम्भा
 हो रहा रे, मरने भूत जो थायरे ॥ दु० ॥५॥



१०६ भजन उपदेशी ।

कठिन मोक्ष का पथ्य समस्त विन हीन बत-
बेरे ॥ डेर ॥ शास्त्र की रीत क्रिया तत्र बैठे महात्त
घरायो नाम । सोम लाक्षण और पाप में पूरा कर
पाप को काम ॥ संत० ॥१॥ दो दो तीन है पर में
नारी तो पर निपा से प्रेम । खेती बाड़ी लड़का
लड़की तत्र दिया बरतने प्रेम ॥ संत० ॥२॥ मांज
खिलम या भग तमाखू मह मांस का आहार ।
आगी नहीं सो भोगी पूरा हुआ कासी घर ॥ संत०
॥ ३ ॥ राज गुरु और गाँव गुरु फिर अगत गुरु
कहेवाप । हाथी घोड़ा राखे घर में बैठे रेस में
जाय ॥ संत ॥४॥ गुरु गुरु की पिछान क्रिया से
हाथ नुरत निस्तार । बरपक सुनि पों कहे सब से
नरमब को मत हार ॥ संत० ॥५॥



११०. उपदेशी ।

सर्ज-प्रभु नाम सुमर सुख धाम ।

वाणी सुन लीजो रे, चतुर नर वाणी सुन
लीजो । थाने देवे सतगुरु उपदेश धरम को लावो
थे लीजो ॥ टेर ॥ मुनि सुनावे ज्ञान चतुर अब
आलस मत कीजो । बड़ी कठिन से जोग मिल्यो
जरा इनमें चित दीजो ॥ था०-॥१॥ लग्यो अनादी
काम मती तुम पाप माहि भीजो । प्राण पराय का
मन लूटो जरा दया कीजो ॥ था० ॥२॥ उत्तम नर
भव पाय मती तुम पाप विषय माहि रीजो । सुख
अल्प और दुःख अनन्तो समता रस पीजो ॥ था०
॥ ३ ॥ चम्पक मुनि उपदेश श्रवण कर वात हृदय
धीजो जिनवाणी अमृत रस पीजे अघ्र पंकज
हरीजो ॥ था० ॥४॥



१११ भजन उपदेशी ।

तर्क-विद्या व रही जी स्वप्ने ।

ये तन पांचवारे यांको मत कोई करण गुमान
तीर्थद्वार चक्री हुआ त्रिनका कथन बरस शरीर ।

आगम देखे साही तनको छोड़ी गया अमीर ॥ ये

॥१॥ अस्तेवर रत्ना त्रिसीरे रमणी रूप विशेष ।

गदिया कपका खेवर अफाऊँ मोह्या सुरजर देख ॥

ये० ॥२॥ मीठर दाड भो मांस कधिर हैं त्रिसमें

भरी बुर्गष । ऊपर मढ़ियो कामको यपि मति मूलो

मति मन्ध ॥ ये० ॥ ३ ॥ बोष पातु से देह बनी हैं

दण्डा काम लगाय । मन्ध मूच की यही कोयली

गध रही बरमाव ॥ ये० ॥ ४ ॥ ऊगर रंग सुरंग है रे

ता ऊपर सिगार । मन माना करता घुलारे उर में

भय भिगार ॥ ये० ॥ ५ ॥ समजो ३ दाडपीरे मन्ध

पूच का सोच । सार्गी आपन बीन धारे मन में

कर आलाप ॥ ये० ॥ ६ ॥ तुम से कपटाई करीरे

तिन से हो तिय रूप । दाड दुई एक पीसमीरे

मुख शरम्या कटु भूय ॥ ये० ॥ ७ ॥

११२. भजन उपदेशी ।

तर्ज-माद ।

हो थाने जाणो जाणो जाणो जरूरी दिल में
करलो विचार ॥ टेर ॥ बाप का बाप दादा गया,
अब थांकी कहीं आश । एक दिन यहां से चाल-
णोरे, रहणो नहिं थिर वासरे ॥ था० ॥ १ ॥ देख
रहे हो आप आंखों से, आया सोही आय । काल
वैरी तो किनने न छोड़े, सब दुनियां ने खायरे ॥
था० ॥ २ ॥ म्हारो म्हारो करतां गया सब अब
जनम्यां छो आप । शक्ती ऊमर थारी घटती जावे
तोही न आवे घाप ॥ था० ॥ ३ ॥ अन्तिम वेलां सइ
रोवेगा, थे भी रोवोगा खास । धन दौलत ने
कुटुम्ब कवीला, कोई न रहें तुम पास ॥ था० ॥ ४ ॥
संचत गुन्नीसे चहोतरेरे, रामपुरे सेखे काल ।
रामरतनजी गुरु प्रसादे, गायो चम्पालाल ॥ था०
॥ ५ ॥

११३ स्तवन उपदेशी ।

७८-स्वामी श्रुते गीत ।

झारे झगोरे २ थो मोह कर्म हुआ देसी भागे
ने हटेरत वालपछो धे खेक गंवापो जोवन में प्रिया
बाधेरे । फिरे मरकतो घर २ धने शरम न बाधे
ने ॥ का० ॥१॥ मात पिता ने कुटुम्ब कबीला धन
वीरत परिवारोरे । छोड़ छोड़ ने गया मोदक
हाग अमारोरे ॥ का० ॥२॥ आपो बुझापो गई अबाधी
इन्द्रया ओर हटाओरे । मन की मन में रह गई
मूषक फिर पक्षताओरे ॥ का० ॥३॥ अग संपत्ति ने
काधी काया हो अितवर ने काधीरे । गुह इमारत
रामरामजी समता राधी रे ॥ का० ॥४॥

११४ पंच परमेष्ठी स्तुति ।

१४-वसिष्ठजी की उपदेशनी भाग बाल की ही ।

मन मोहम पंच परमेष्ठी समई अग पक्षीजी ।
आमंड अज्ञान बाने सुख संपत्ति महिमा पक्षीजी ॥

टेर ॥ शुक्ल ध्यान से तोड़ी कर्म अरिहन्त पद पा-
 मियाजी । उपनो केवल दर्शन ज्ञान, होगये लोक
 अलोकनां जान । अतिशय घोतीस महागुणवान,
 पेंतीस वाणी अमृतमान । तीरथ थाप्या श्रीजी,
 चार परम सोभावणीजी ॥ आ० ॥१॥ श्री श्री सिद्ध
 कर्म कर अन्त विराज्या मोक्ष में जी । मेठ्या जनम
 मरणरा दुक्ख, पाया घणा अनन्ता सुक्ख । रोगरु
 शोक तृषा नहीं भूख, ज्ञानी भाख गया खुद सुक्ख ।
 जाने नमन करी अरिहन्त लेवे दीक्षा भणीजी ॥
 आ०॥२॥ तीजे आचारज गुणवान छत्तीसों अती
 भलाजी । समकित ज्ञान देत हैं भारी, सुणी ने
 खुशी होय नरनारी । दीनो बोध बीज सुखकारी,
 माने वचन सभी संसारी । चारों तीरथ में शिर-
 दार सोहे हीराकणीजी ॥ आ० ॥३॥ श्री श्री उपा-
 ध्यायजी, ज्ञाता सूत्र सिद्धातकाजी । आगम पूरव
 ग्रौर उपंग, मिलके सीखे साधु सब संग । अमृत
 वाणी वरषे रग, सुनके पाखंडी हो दंग । भवि
 जीवां के चित जेम रतन चिंतामणीजी ॥ आ० ॥४॥

पूरण साधु शिरोमणी सन्त मुनिगढ़ पांचवेंडी ।
 बरखत काम चारिष सार, मान्या दुरमन विषय
 विकार । मान्या समभार्ई मरमार हीमा मई पा-
 खडी गार । मनइो हर्षो म्हारो सुनी बाणी शानी
 तणीजी ॥ भा० ॥ १५ ॥ सुख मन से प्याऊं नमन करै
 पई पांचवेंडी । पाऊं सुख सम्पति बहुनूर जाई
 रोग शाक बुल्ल दूर । दुरमन शुभु होषे चूर रिडि
 सिडि मिले भरपूर । जग तारख भी तबकार अपू
 जीवम अकीजी ॥ भा० ॥ १६ ॥ सारी खूपी में ये सार,
 पदारथ मानसोजी । ऐसो नहीं को वूओ जाय
 शुख मम से सुमरो भाप । मिड जाये सारा शोक
 सन्ताप दूर जाये सब ही पाप । शुठ रामरतन के
 शिष्य कहे अपिये शुपीजी ॥ भा० ॥ १७ ॥

११५ जाबणी उपदेशी ।

जै-जै बनी ।

तबगर्भों से करत मुहम्मद महाताज को बहुत
 सताने हो । कैसे भय्वा होय तुम्हारा नाहक मुंह

दिखलाते हो ॥ टेर ॥ औरों की तुम गरदन काटो
 अपनी खैर मनाते हो । इब्राहीम और इस्माइल
 पर जरा न ध्यान लगाते हो ॥ यकीन थी उनको
 मालिक की तुम तो बात बनाते हो ॥ करी जान
 कुरवान बेटे की हजरत आप सुनाते हो । दुम्बा
 जिन्दा होगया वहां पर तुम तो मार के खाते हो
 ॥ कै० ॥१॥ आदम ने पकड़ी थी हिरनी देख नबी
 को चिल्लाती । हजरत बच्चे हैं जंगल में मुझे
 छुड़ादो दुख पाती ॥ किया कौल आने का छोड़दी
 गई बच्चे को संग लाती । रो रो बच्चे दूध पिये कहें
 अम्मा तूं क्यों घबराती । नबी साहय ने छुड़ादी
 हिरनी तुम तो मार के लाते हो ॥ कै० ॥२॥ वारी
 धारस बहुत खजाना नबी अइय्युब को दुःख दिया ।
 जुल्म किया शैतान ने उनका मुल्क माल सब फना
 किया । बहुत बीमारी बढ़ादी तन पर कीड़े पड़ते
 नीचे मियां । चुन चुन के ऊन रखे जिस्म में सब
 कीड़ों को बचा लिया । नाम रहीमा बीबी हाजिर
 थी ऐसे तुम बतलाते हो ॥ कै० ॥ ३ ॥ खुद का

गोस्त दिपा काठ नवी महोमद् फागता वचपाई ।
 देखो आंखों जोल सुवा ने कुरान अम्बर फरमाई ॥
 ऐसा आमकर रहम रखो कुछ आत्म उनही बन
 वाई । जान किसी की मत सूडो तुम सुवा के बच
 हो भाई ॥ कैस कैस के भूठी दुनिया में ताहक
 जान जसाने हो ॥ ६० ॥ ४॥

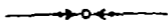


११६ श्री महावीर प्रभु स्तवन ।

०६-पाठ ।

महावीर स्वामी अस्तरजामी शिवगत गामी
 पूरो हमारी धाय । प्रणमूं शिरनामी दुर्मतिनामी
 सुमति सुखामी पूो हमारी धाय ॥ डेर ॥ पूरब
 कर्म संख्या तरारे सेख्या विषय बिकार । आत्म
 बोन नहीं अथघाम्या गर्भ नदित गंदाग रे ॥ बांध्या
 कम अगारी विमंती इहारी विस्त में धारी पूरो
 हमारी धाय ॥ म०११॥ आयो ई आपने आमरे रे
 गान गुणामी पात्र । ममता मयजल पार उतारो

गिरवा गरीब निवाजरे । यह छे अरज हमारी
लीजो स्वीकारी, छो उपकारी, पूरो हमारी आश
॥ म० ॥ २ ॥ वीर प्रभु मुज हार द्वियाना आतमना
आधार । तुम चरणांबुज वासना केरी, अन्तर
हुस अपार रे । छो विश्वाधारी, सूरत प्यारी,
लीजो उगारी, पूरो हमारी आश ॥ म० ॥ ३ ॥ जन्मो
जन्म हूं दास तुम्हारो, बहाला प्रभु विसवास ।
चम्पकलालजी मुनि परतापे, अरजी कालीदास रे ।
कीधी क्रोड़ अपारी, चित्त विचारी, ल्यो अव-
धारी, पूरो हमारी आश ॥ म० ॥ ४ ॥



११७. जिनवाणी ।

सर्ज-मांड ।

जिनराजनी वाणी, छे गुण खानी, मोक्ष नि-
शाणी, सुणिये चित्त लगाय । वाणी सुधा समाणी
शिव सुख दानी जगमां गवाणी, सुनिये चित्त
लगाय ॥ टेर ॥ अधम फौज निवारण कारण शस्त्र

करी अयकार । मयजस तरवा अविद्यतो मे पेय
 तसो आधारे । ऐतुं दिव्य मे आनी ज्ञान पिद्वावी
 भी जिनवासी सुमिये० ॥ जि० ॥ १॥ एक जिद्वावी
 अनेक गुणोंनुं वर्धन कैम कराय । कोक जिद्वावी
 कोई कहे पक्ष गुणमी गणती न पाप रे । अहोमय
 प्राणी उल्ट आनी बीरनी वासी, सुमिये० ॥ जि०
 ॥ २ ॥ दीर्घ उषधी संसार में ज्वाहा मोह अपार ।
 ताप निवारण भी जिन कैरी वासी अमृत पार
 रे । कही केवल ज्ञानी बाठ पुरानी अस्तर आनी
 सुमिये० ॥ जि० ॥ ३ ॥ अग्ग सुधारण मय दय
 ठारक धारक विषय बिकार । सुमता पाप समस्त
 पुकारे धारे अय अयकार रे । एही अर्थ हमारी
 पूरण ज्वारी के दितकारी सुमिये० ॥ जि० ॥ ४ ॥
 वाणी तथा गुण वर्धन करवा मुनि अम्यक बित
 ज्ञान । शुद्ध अर्थाशुद्ध सेव प्रतापे किंकर काशी-
 दास रे । मुंबई नगर मम्हारी होम अपारी पार
 वारी सुमिये ॥ जि० ॥ २२ ॥



११८. विनय ।

तर्ज-माढ ॥

मेरी अरजी लेना, चित्त में देना, सुनिये श्री
 महाराज दया दिल में धरना, भव दुख हरना,
 सुनिये श्री महाराज ॥ टेर ॥ मोह अनादि नींद में
 रे, बहुत हुचो हैरान । खान पान में मगन होके
 फिया कछुन विचार रे मोह लोभ बता के फन्दे
 फंसाना, चित्त में देना, सुनिये श्री महा० ॥ १ ॥
 सुमति वचन मान के, आयो आपके द्वार । अधम
 उधारण अन्तर्जामी मेरी सुनिये पुकार रे । मोह
 प्रबल बल, तिनको हटाना, चित्त में देना, सुनि०
 ॥२॥ चिन्तामणी श्री पार्सजीरे, चिंता चूरण हार,
 केसरीचन्द कहे लाज मेरी रखिये करिये विचार
 रे । हैं जैन प्रकाशक तेरे शरणा, चित्त में देना,
 सुनिये श्री महाराज ॥ ३ ॥

११६. ईश प्रार्थना ।

तर्क-कथाशी ।

भी शासनेश स्वामी, हो संघ के सदाई । शीजे
 क्यातु हमको सुख शांति सर्वदाई ॥ डेर ॥ तूं ई
 क्यातु क्या नहीं काम्य देव एवा । तासे कुरेप
 संघा तत्र तुमसे ली खगाई ॥ भी ॥ १ ॥ कोई बात
 मागता रे गदिको शिखा पकारे । तूं पाक्य से
 इपारे बुबुखि रे तुकाई ॥ भी० ॥ २ ॥ तय ईश शीप
 मार्ग तुमको सुरेश प्यारें । अहमेग्रह ममाबे
 दिग्दे मं प्यान क्याई ॥ भी० ॥ ३ ॥ तेरा जो प्याम
 प्याबे मो रगं मोह पाबे । आबागमन मिटाबे
 गति पञ्चमी में जाई ॥ भी० ॥ ४ ॥ जय ताप को
 मिटाओ परमाव पैब डारो । अक आखरो तिहारो
 लीमा हे माध जाई । भी० ॥ ५ ॥ भी सहु में एछाई
 मसिदिन रहे मबाई । दह कीजे एक्यताई दो
 बिस को मिटाई ॥ भी० ॥ ६ ॥ निज दास आप कीजे
 इतनी मया कटीजे । सम्पत्त्व दान शीजे मायव'
 विनय मुनाई ॥ भी० ॥ ७ ॥

१२०. अरिहंत स्तुति ।

तर्ज-धन्ना श्री आदि ॥

मनाऊँ मैं तो धी अरिहन्त महन्त ॥ टेर ॥ तरु
अशोक जांको अघलोकत शोक समुह नशत ।
सुररुत वारण वरण के नभ से अचित सुमन वर-
पत ॥ म० ॥ १ ॥ अर्ध मागधी घाणी जांकी योजन
इक पर्यंत । सुनत अमर नर पशु हिल मिल के
समझ सुबोध लहंत ॥ म० ॥ २ ॥ मुनिमन समसित
चमर अमर गण, प्रमुदित ह्वै ढारंत । स्फटिक
रत्न के सिंहासन पर, त्रिजत पतिराजंत ॥ म० ॥
३ ॥ प्रभावलय तम प्रलय करनहित, दिनकर सम
दमकंत । पृष्ट भाग रहि प्रभुजी कैसो, प्रवल प्रकाश
करंत ॥ म० ॥ ४ ॥ गगन माहिं घन गर्जारव सम
दुंदुभी शब्द वजंत । तीन छत्र शिर सोहैं तातें, तं
त्रिभुवन को कन्त ॥ म० ॥ ५ ॥ तव सुमरे सुख
संपत्ति पावे, नरसुर पय प्रणमंत । अष्ट सिद्धि नव
निधि घर प्रगटे, तेरो जाप जपंत ॥ म० ॥ ६ ॥ माधव

११६ ईश प्रार्थना ।

ग १-क्याती ।

भी शामनेश स्वामी, हो सब के सहार्थ । रीति
 क्यातु हमको सुख छांति सबैदार्थ ॥ शेर ॥ तूं ई
 क्यातु क्या नहीं अन्य देष क्या । तासे कुरूप
 सेया तत्र तुमसे सी लगार्थ ॥ श्री०४१॥ कोई बात
 माग्ता रं गदिको शिला पझारे । तूं पाक्य से
 उबारे बुबुधि रे सुझार्थ ॥ श्री०४२॥ गल ईश शीघ्र
 मार्थ तुमका सुरेश प्रार्थे । अहमेन्द्रु मताथे
 द्विगुण मं क्यान क्याथे ॥ श्री ४३॥ तेरु जो स्वाम
 क्याथे सो हर्गै मोह पाथे । आवागमन मिटाथे
 गति पञ्चमी में जाई ॥ श्री० ४४ ॥ अथ ताप को
 मिटाथा परमाथ पंचकारे । अथ आखरो तिहारो
 लीनो हे माथ जाई । श्री०४५ । श्री सङ्ग में रसाई
 प्रतिदिन रहे नचाई । दङ्ग कीथे पकयताई हो
 बिग्न को मिटाई ॥ श्री०४६ ॥ त्रिज दास जान कीजे
 इतनी मया करीथे । सम्पकरय जान कीजे माथन'
 रिमय मुचाई ॥ श्री० ४७ ॥

१२०. अरिहंत स्तुति ।

तर्ज-धन्ना श्री आदि ॥

मनाऊँ मैं तो श्री अरिहन्त महन्त ॥ टेर ॥ तरु
अशोक जांको अघलोकत शोक समुह नशंत ।
सुरकृत वाण वरण के नभ से अचित सुमन वर-
पंत ॥ म० ॥ १ ॥ अर्ध मागधी वाणी जाकी योजन
इक पर्यंत । सुनत अमर नर पशु हिल मिल के
समझ सुबोध लहंत ॥ म० ॥ २ ॥ मुनिमन समसित
चमर अमर गण, प्रमुदित ह्वै ढारंत । स्फटिक
रत्न के सिंहासन पर, त्रिजत पतिराजंत ॥ म० ॥
३ ॥ प्रभावलय तम प्रलय करनहित, दिनकर सम
दमकंत । पृष्ठ भाग रहि प्रभुजी कैसो, प्रबल प्रकाश
करंत ॥ म० ॥ ४ ॥ गगन माहिं घन गर्जारव सम
दुंदुभी शब्द वजंत । तीन छत्र शिर सोहें तातें, तूं
त्रिभुवन को कन्त ॥ म० ॥ ५ ॥ तव सुमरे सुख
संपत्ति पावे, नरसुर पय प्रणमंत । अष्ट सिद्धि नव
निधि घर प्रगटे, तेरो जाप जपंत ॥ म० ॥ ६ ॥ माधव

मुनि कर जोड़ बीजसे विनय सुनो भगवन्त ।
बुद्धि बुद्धि बुद्धि वैभव देखो अरु सुख सादि
अनन्त ॥ म० ४७३ इति



१९१ सिद्ध स्तुति ।

४८-नाम ।

सेबो सिद्ध उवा अपकार । जैसे होवे भगवन्त
कार ॥ देर ॥ अथ अविनाशी भगवन्त अगोचर अमल
अमल अतिकार । अन्तर्पामी त्रिभुवन स्वामी,
अमित शक्ति अन्तार ॥ से० ॥ १ ॥ करपद्म कमल
अद्भुत पुण्ड्र मुक्त संसार । पापो पद् परमि
तास पद् पद्मी चारणार ॥ से० ॥ २ ॥ सिद्ध प्रभु को
सुमर्य अगमै सकल सिद्ध दातार । मन बाधित
पूरन सुर तद सम चिता चूर्य हार ॥ से० ॥ ३ ॥
अपे आप जोगीश रात दिन, एपावे हृदय मन्तार ।
तीर्थकर ई प्रणमै उनको अब होवे अनन्तार ॥ से०
॥ ४ ॥ सूर्योदय के समय मन्त्रिपुत्र चिर चित

दढ़ता धार । जपै सिद्ध यह जाप तास घर, होवे
ऋद्धि अपार ॥ से० ॥५॥ सिद्ध स्तुतिये पढ़े भाव
से, प्रतिदिन जे नरनार । सो दिव शिव सुख पावे
निश्चय, बना रहे सरदार ॥से०॥६॥ 'माधव' मुनि
कहें सकल संघ में बड़े हमेश पियार । विद्या
विनय विवेक समन्वित, पावे प्रचुर प्रचार ॥से०७



१२२. श्री ऋषभदेव स्तुति ।

तर्ज-कन्वाली ।

भगवन मरुदेवी के लाल मोक्ष की राह बताने
वाले राह बताने वाले, आनन्द बढ़ाने वाले ॥भग
॥टेर॥ लीना अवधपुरी में अवतार, जग में छागया
आनन्दकार । सुरनर बोले जय जयकार, सारे
जिन गुण गाने वाले ॥ भ० ॥१॥ जग में था अज्ञान
महान, तुमने दिया सृष्टि को ज्ञान । करके मिथ्या-
मत का भान, केवल ज्ञान उपाने वाले ॥ भ० ॥२॥
तुमने दिया धर्म उपदेश, जिसमें राग द्वेष नहीं

शेर । तुम हो ब्रह्मा विष्णु महेश शिव मारण
 करवाने वाले ॥ म० ॥ ३ ॥ जग जीवों पै कदवा
 धार तुममें दिया मंत्र नबकार । जिनसे होगये
 मयदधि पार लाखों निश्चय जाने वाले ॥ म० ॥ ४ ॥
 वैठी कर्म बड़े पलवीर, देते सब जीवों को पीर ।
 न्यामत हो रहा अधम अधीर, तुम हो पीर
 बधाने वाले ॥ म० ॥ ५ ॥ इति



श्रीमान् प्रवर पंडित कविराज अमीरिपीठी न कृत
 १२३ श्री वीर स्तुति ।

कवे-महा शैला के बीरा में बहुधा बनी मूर्तरी ।

मोहनगारा प्यारा वीर जिनन्द हिरदे धसोजी ।
 अस्त्र नायक भी वर्षमान यिरबा गुप्त रत्नमारी
 ज्ञान ॥ टैर ॥ पुण्य पमोता माता निश्चिन्तादेवी
 मंगवतीजी न्यारी हूँस द्विपो अथवार घर घर
 वर्ते मंगलाधार सुर नर बोझे अथ अथकार ॥ मो०
 ॥ १ ॥ प्रमुखी परम वीरानी श्यामी सब सिद्ध संपदा

जी, जग से ममता मोह निवार घन में कीधो उग्र
 विहार तन तप धार्यो दुक्कर कार ॥ मो०॥२॥ उग्र-
 विहारी विचरत देश अनारज में गयाजी । उपसर्ग
 सहा परिपह धीर, ध्यानी तपसी अचल शरीर,
 क्षम्या खूब करी महावीर ॥ मो० ॥३॥ द्वादश वर्ष
 साडा छमास लगे तपस्या करीजी । मध पावापुर
 उत्तम स्थान, प्रभुजी पाया केवल ज्ञान, सुरपति
 कीधो परम कल्याण ॥ मो० ॥४॥ अष्टादश टोषण
 धर्जिन द्वादश गुणकर सोभताजी । घाणी वर्षे
 अमृत धार, धर्म प्रकाश्यो दोय प्रकार, हरि शचि
 सूरि सुर हर्ष अपार ॥ मो०॥५॥ यज्ञ करैया ब्राह्मण
 एकादश विद्याभरयाजी । शत चुम्मालिस के परि-
 वार, संशय दीनो नाथ निवार, सघला लीधो संजम
 भार ॥ मो०॥६॥ अमिमानी मद मर्दन शरण प्राण
 घालेश्वरजी । जय जय जयत्रिशला के नंद, अमृत
 वदे पद अरविंद, दीजो बोध बीज आनंद ॥ मो०
 ॥ ७ ॥ इति ॥



१२४ श्री गौतम स्तुति ।

६५-मतेषु ।

वेदु श्री गौतम मन मायन पापन गणपतीजी ।
 माता स्वपति पापे दिन दिन हो बढ़ती रतीजी ॥
 सद्गुण विषम होय सब दूर ही श्री दायक सुख
 मरपूर ॥ देर ॥ पृष्ठीमात तात वस्तुमूर्ति कुल कर्मन
 मन्त्रीजी । मेठवीं बीर प्रभु मदाभाग आग्यो पूरण
 मय अनुराग संशय मिठयो चक्यो यराग अर्थ-
 शत परिपारे संज्ञम धारे सुधमतिजी ॥ वं० ॥ १ ॥
 प्रभु के जेए शिष्य सुविनीत इन्द्रमूर्ति मन्त्रीजी ।
 गौतम गोत्र पवित्र कदाया ऊँची सात हाथ पर
 काया वस अयम संपेक्ष सुहाया देही समचोर
 साकार धार शोमे अतीजी ॥ वं० ॥ २ ॥ वम के
 कमक पुङ्गव निधर्यष तन लेखी मईजी । पद्य वीर
 अमल तनु कांती बरते नाम क्षिया सुख शंती
 इत्यथ अङ्क धरी हरी भ्रांती । अखल बीनापी सुख
 काबी तप सङ्गम पूतिजी ॥ वं० ॥ ३ ॥ आहु उग्र

द्विष्य महा द्विष्य घोर तपसी गुणीजी । घोर उदार
 घोर ब्रह्मचारी, ममता सोभा तनु परिहारी, सीतल
 लेण्या महा हितकारी, तेजू लेश्या है, संचिष्य
 द्विष्य मोटा जतीजी ॥ वं० ॥४॥ मंगलकारण दुःख
 निवारण कष्ट विदारणाजी । संशय मेटन के हित-
 कार, पूछ्या प्रश्न अनेक प्रकार, भरते वरते सुखं
 आधार, अष्ट सिद्धि नोनिघ रिद्धि पंकज पद राजे
 छतीजी ॥ वं० ॥ ५ ॥ ज्यांके नाम मंत्र की महिमा
 कहत बने नहींजी गौतम गुण मणि है, गुणरास,
 केवल कमला लील विलास, पूरे मन वांचित सब
 आश, व्यावे ध्यान अमीरिख पावें शिव शाश्वत
 गतीजी ॥ वं० ॥६॥ इति

१२५. गौतम स्वामी का स्तवन ।

गौतम नाम आधार, हमारे गौतम नाम आ-
 धार । सुख सम्पत्ति दातार, हमारे ॥ टेर ॥ वाद
 करण श्री वीर से आया घर अहंकार । संशय

हर संजम श्रियो पंच सया परिवार ॥ ६० ॥ १ ॥
सन्धि बपजी विपही रणे पूर्व ब्रह्मचार । निरंतर
कृत् ९ करे तपस्या बुद्धर कार ॥ ६० ॥ २ ॥ तीस
वर्ष मनु मक्ति में रक्त रहे गणधार । सिद्ध बुद्ध
बुद्ध डारके मुक्ति मया अविचार ॥ ६० ॥ ३ ॥ सन्धि
सन्धि मासती अक्षय सुख मण्डार । वायक मन
वंधित सदा वेदा अगावो पार ॥ ६० ॥ ४ ॥ कामधेनु
सुरतक मधि अक्षर अर्थ विचार । प्रवृत्त ही श्री
सम्पन्ने धामे एव भेकार ॥ ६० ॥ ५ ॥ प्रात उठ गीतम
अर्थ हर मन अज्ञाधार । सकल विद्य भय उपसर्मे
बर्ते मंगलाधार ॥ ६० ॥ ६ ॥ इन्द्रप्रस्थ अक्ष सत्तरे
अमृत अर्क स्वीकार । आरिभक्त बल देवो मनु
बन्धु पारंवार ॥ गी० ॥ ७ ॥ इति

१२६ मनु पार्ष्ण उपदेश ।

॥ ७ ॥

भोगी से धर्म करमाते धुनी में नाग काका
हे ब्याघ्रो इसको अस्त्री से मरे बेगुन करास

है ॥टेर॥ बदन नाजुक विचारों का उसे अम्माने
पाला है, मरे तेरी कचेरी में अरे ! धक्धक्ती
ज्वाला है ॥जो० १॥ अज्ञानी छोड़ दे हठ को समी
का जीव वहाला है । तिरे नहीं पाप करनी से मोक्ष
मारग निराला है ॥ जो० ॥२॥ लकड़ को चीर प्रभु
जी ने नाग नागिन निकाला है, दिया नवकार का
शरणा जड़ा दुर्गति का ताला है ॥ जो० ॥३॥ हुये
धरणेन्द्र महाराजा पद्मावती नाग वाला है, पूरे
आशा सकल मन की शासन के रत्नपाला है ॥जो०
॥ ४ ॥ मिथ्याती मान भर्दन को अटल वामा के
लाला है । अमीरिख दास चरनों का वचन संखे
में ढाला है ॥ जो० ॥५॥ इति ॥



१२७. प्रभु महावीर कीर्तन ।

गजल ।

सौभाग्यी नन्द प्रिशला के, तुहीं महबूब प्यारा
है । तेरे कदमों के चाकर को, मिला मोटा सहारा
है ॥टेर॥ जहां फानी तर्क करके चले वन में मुनी

बस है । द्रव्य और भाव सुध योगी, कठिन तप
 ध्यान धारा है ॥ सौ० ॥१॥ मनुष्य द्विपान देवों के
 परिपक्व जो सहें तम में । अजब तेरी जमा भाग
 देव सङ्गम भी द्वारा है ॥ सौ० ॥ २ ॥ तोड़ खमीर
 कर्मों की बने सबैद्य अगमता । दिया उपदेश दु-
 सिर्या को मोक्ष मार्ग उचारा है ॥ सौ० ॥ ३ ॥ मुनि
 गौतम सुधमनि करी बिल से तेरी सिद्धमत, करी
 बकसीस कैवल की वसे मुनिर्या से तारा है ॥ सौ०
 ॥ ४ ॥ गुम्हा से पूर ॥ मास्त्रिक मुर्ही रहमत का
 दरिया है । निगाह है महिज की मिस पै गुम्हा
 कैसा विचारा है ॥ सौ० ॥ ५ ॥ गुम्हा बकसी अमी-
 रिक को बुलातो अपने कदमों तक । मखा पा है
 बुरा तो भी नब प्यारा गुम्हार है ॥ सौ० ॥ ६ ॥



१९८. प्रभु स्तुति ।

३३-३३३ ।

कहो भ्राता अग जाता प्रभु महावीर की अय
 हो । धर्म दाता पिता माता प्रभु महावीर की अय

हो ॥ टेर ॥ त्रिकालिक द्रव्य त्रैलोकी चराचर जो
पदारथ है । सकल दर्शी सकल ज्ञाता, प्रभु महा-
वीर की जय हो ॥ क० ॥१॥ गरीवों पै दया करके
दिया उपदेश तिरने का । अराधे स्वर्ग शिवपाता,
प्रभु महावीर की जय हो ॥ क० ॥ २ ॥ वीरवाणी
सुधासानी करे मिथ्यात्व ग्रहहानी । निजातम
बोध की दाता प्रभु महावीर की जय हो ॥ क० ॥
३ ॥ स्यादवादी अनेकान्ती, वचन अविरुद्ध श्रीजी
के ॥ सुने सब भर्से मिट जाता, प्रभु महावीर की
जय हो ॥ क० ॥ ४ ॥ अमी चरनों के चाकर को,
दया करके दर्श दीजे । रहे आनन्द सुखशाता,
प्रभु महावीर की जय हो ॥ क० ॥५॥



१२६. श्री शान्तिनाथ की गजल ।

तर्ज—माता कोशक्या के लाल ।

साहिव शांतिनाथ भगवान, शांति वरताने
वाले । शांति वरताने वाले आनन्द बढ़ाने वाले ॥

साहित्य० ॥ देर ॥ पिता श्री अम्बसेन भूपाह प्रभु
 अशिरा लाल दयाल । तुम हो जगत शीघ्र रक्तबाल
 मिरगी रोग मिटाने वाले ॥ १ ॥ एक सइस पुरुष
 परिवार प्रभुश्री श्रीमा संक्षम मार । तब सब दिवा
 गार्जमंडार जग से मर्मत हटाने वाले ॥२॥ श्रीमा
 केवल कर्म खपाय सुधासुर पति सेवे तसपाय ।
 जिन वचन सुधा बरसाय भुगती पन्थ बताये
 वाले ॥ सा० ॥ ३ ॥ प्रभुश्री मैं हूँ शीघ्र अमाय अब
 गृहो कृपाकर दाय । रिपु कर्म लगे हैं साथ अरि
 को दूर भगाने वाले ॥ सा० ॥ ४ ॥ प्रभु तुम जगत
 पती जिनराज मेरे सकल सुधारो काज । रक्षिये
 तुम सेवक की आज हो मय फन्द बुझाने वाले
 ॥५॥ दुख मय चिन्ता विघ्न विहार प्रभुश्री शीघ्र
 काज सुधार । गृहे अविचल रिष भंडार सुख
 संपनि वृत्ताने वाले ॥६॥ जपता माध सहित बित
 मेष शानाकारी हैं जगदीश रिष प्रभु अविचल
 मेष आत्म रिष मिटाने वाले ॥ सा० ॥७॥

१३० महावीर प्रभु ।

क.आली ।

महावीर प्रभु मुझे वचाओ अरजी सुना रहा हूँ । निजदास को निभाओ, अरजी सुना रहा हूँ ॥
 टेर ॥ चारों गती में भटका कर्मों ने खूब पटका ।
 लाचार हो रहा हूँ, अरजी० ॥ १ ॥ माता उदर में
 तकलीफ बहोत पाया । दुख को भुला रहा हूँ,
 अरजी० ॥२॥ बालक पने में खेला, जोवन हुआ है
 गेला । धन्धे में फँस रहा हूँ, अरजी सु० ॥ ३ ॥
 जव की जरा ने घेरा, उस वक्त कौन तेरा । तुम
 नाम ले रहा हूँ, अरजी० ॥ ४ ॥ कर मेहेर पार
 करना, लीना है तेरा शरना । गुण तेरा गा रहा
 हूँ, अरजी० ॥५॥ अमृत ने कह सुनाया, लिख के
 रतन ने गाया । चरणों में आ पड़ा हूँ, अरजी सुना
 रहा हूँ ॥ ६ ॥ इति



१३१ भी शान्तिनाथ प्रभु की गजस्र ।

आमन्द के करिया शान्ति जिनम्द स्वामी ।

पुत्र कष्ट के हरैया शान्ति जिनम्द स्वामी ॥ ३६ ॥

सर्बाय सिद्ध ले आये बरुष्ट पुण्य ल्याये । मिरगी

प्यया हरैया शान्ति जिनम्द स्वामी ॥ ३७ ॥

आरुहकी ये धरती बोतराज आसु बरती । नरदेव

पद धरैया शान्ति ॥ ३८ ॥ अग त्याग धर्म धारे,

रिदु कर्म को निहारे । केवल रमा वरैया शान्ति ॥

३९ ॥ धर्मोपदेश दीया रास्ता बताया सीया ।

अधितार के तिरैया शान्ति ॥ ४० ॥ दो बीस धनुष

काबा अरु बर्य आयु पाया । मूम चिन्द के सो

मैया शान्ति ॥ ४१ ॥ अघ अशिव रूप समाधे

त्रिकुण्य योग व्याधे । सब काज के सरैया शान्ति ॥

४२ ॥ असूत दयाल पाया क्लिब जीतने यो गाया ।

हो मुक्ति के देवैया शान्ति जिनम्द स्वामी ॥ ४३ ॥



१३२. वीर प्रभु से अर्ज ।

तर्ज—कव्वाली ।

शासनपति हो श्रीजी, सिरताज तुम हमारे ।
अवगुण भरा है लेकिन, चाकर हैं हम तिहारे ॥
टेर ॥ दोषों पे ध्यान दोगे, तब तो कहां ठिकाना ।
फरजन्द में होय गलती वालिद उसे सुधारे ॥ १ ॥
हम ओगुनों से भारी, खल दुष्ट पापचारी । लेकिन
दया तुम्हारी, अध पुंज सब विदारे, शासन ॥ २ ॥
भारत के प्राणियों को, आधार आगमों का ।
साधे हैं धर्म अपना, उसके ही सब सहारे ॥ शा०
॥ ३ ॥ शासन के देव देवी, हो धर्म के सहायक ।
दीजे विवेक अपना, हालत को हम सुधारें ॥ शा०
॥ ४ ॥ सिद्धार्थ नृप दुलारे, त्रिशला के लाल प्यारे ।
शम्भे श्री तुम्हारे, कर सिद्ध काज सारे ॥ शा०
॥ ५ ॥ इति



१३३ श्री पंचपथ यज्ञ चौबीस जिन ।

नामनी ।

चौबीस जिनेश प्रथमू दमेश अथ अशिष
पक्षेश भय भय हरण । अथ अथ जिनेश्च वरमै
आमन्त्र सुख शानि वृष्ट मङ्गल करण ॥ देव ॥
शिवादेशी नन्द आमन्त्र कन्द मैत्री जिनम्ब सप्त
स्वामी । सुविधि ह्याल धन धर्म पात शान्ती
ह्याल अमृतपानी । ज्ञानी अमन्त्र मुनि सुमत
कम्ब ममि मदन मन्थ चारे शरण ॥ अथ० ॥१॥
अथ अजिन जीन शशि प्रभु पुनीत श्री कृपम
उदीन वृक्ष धर्म पति स्वामी स्वामी सुपाश मुञ्ज
पूरो आश बुद्धि प्रकाश को विमल मती । मन्त्रि
मे मङ्ग अरि से अटङ्ग ननु प्रभुच पचीस हरित
वरण ॥ अ०॥२॥ अरनाथ धीर महावीर बीर हर
वीर दो सुख शाना सुमती की आथ दो सुमति
नाथ नम जोड़ हाथ मांगू दाता ॥ मञ्ज पञ्च कथ
सब जोड़ कथ दो मोछ मन्थ दातो मरणा ॥ अ०

॥ ३ ॥ वासुपूज्य जाप, शीतल प्रताप, हर विषय
ताप, रुद्रो शीतल । श्रेयांश देव सब करे सेव,
कुंधु कुदेव, कर दूर सकल । पारस दयाल, करिये
निहाल, अभिनंदन, जिन तारण तरणों ॥ ज०॥४॥
मन्त्रों में मंत्र पेंसठ का यन्त्र, तन्त्रों में तंत्र, नित
ध्यान धरे । करे सकल सिद्ध, यश रिद्ध वृद्ध,
वद्धित समृद्ध, भंडार भरे । कहें श्रीरिख, परचा
प्रत्यक्ष, गुरुदेव सीख, हिरदे धरणां ॥ ज० ॥५॥



१३४. श्री नेमनाथ प्रभु को हालरियों ।

सर्ज=चेदन चेतोरे ।

यावे हालरियो २ मा शिवादेवीजी नेम कवर
नेरे ॥६॥ समुद्र विजयजी का नन्दलालजी, शिवा
देवीजीरा जायाजी । अपराजित वंमान से, सोरि-
पुर में आयाजी ॥ १ ॥ आश्रो मेरे लाला सब जग
व्हाला, माता इण पर बोलेरे । कण्ठ लगावे हरष
हरष, बेसाडे खोलेरे ॥२॥ शिरपर तिलक तम्बोल

विराजे माता पुत्र रमाबेरे । हाथे कड़ियाँ पाँप
 घुँघरिया सब मन भाबेरे ॥ गा० ॥ १३ ॥ माथे मुकुट
 कामे दो कुण्डल बाँहे बहिरखा सोबेरे । एत
 अङ्ग का पालना में अघिका मोहरे ॥ गा० ॥ १४ ॥
 आँने आभता नेमकबरजी परहा परहा खिल
 जाबेरे । माता साथे हाता पकड़ू मूषा पकड़ाबेरे
 ॥ गा० ॥ १५ ॥ आघो कंबरजी द्वार पहिमाऊँ, टोपी
 एतन अङ्गळजी एतन अङ्गित का पालना में बैठ
 कुलाऊँजी ॥ गा० ॥ १६ ॥ हरप घरीने शिवादेवीजी,
 प्रभु मुख दर्शन निरखेरे । रममूम रममूम फिरे
 महिल में दिवको हरखेजी ॥ गा० ॥ ७ ॥ मयी
 सुखकी शिवादेवीजी प्रभु के भीमन काबेरे ।
 आजा जाडु मरस अखेबी पैचर ताबेरे ॥ गा ॥ ८ ॥
 एतन अङ्ग का पाल कबोला प्रभुजी में पुरसाबे
 रे । मरुमल रेणुम गाडी ऊपर बैठ सिमाबेरे ॥
 गा ॥ ९ ॥ आना का तो बफरी अंबरा रेणुम डोर
 बटाबेरे । हरप घरीने शिवादेवीजी पुन खिसादि
 रे ॥ गा० ॥ १० ॥ हाथ जोड़ यों कहत अमीनिक ओ

हालरियो गावेरे । गोग शोग सब दूरा न्हासे नव-
निघ पावेरे ॥ गा० ॥११॥ इति

१३५. स्तुति ।

तर्क=होदी गज्ज ।

वैशाली नाथ धीर वीर धार के भजो ।
त्रिशला के लाल हैं दयाल भर्म सब तजो ॥ टैर ॥
चउवर्णे शर्ण धार सकल सिद्धि साधजो ।
लगा के पलक देख झलक ज्योति में मजो ॥वै०१॥
डुक दिल की चश्म खोल तोल धर्म परखजो ।
निर्वद्य सार धार के सावद्य त्यागजो ॥वै० २॥
हलदी पतंग, रग ज्यों तन धन विचारजो ।
जग भोग विषय रोगमें कुछ भी नहीं मजो ॥वै०३॥
हिंसा प्रमाद सङ्ग बुरे व्यसन से लजो ।
उपकार दया धर्म काज सिंह ज्यों गजो ॥वै० ४॥
अमृत सांची सीख ठीक दिल में धारजो ।
जिनवाणी प्रेम से सुनोनिज आत्म तारजो ॥वै०५॥

धिराजे माता पुत्र रमाधेरे । हाथे कड़ियाँ पाँप
 पुष्पारिया सब मन भावेरे ॥ गा० ॥ १॥ माथे मुकुट
 कामे शो कुण्डल पदि बहिरवा सोवेरे । रतन
 जड़ित का पालना में अघिका माहरे ॥ गा० ॥ १॥
 आने आगतों नेमकंधरजी परदा परदा किस
 आवेरे । माता लावे हाता पकड़ मूँषा पकड़ावेरे
 ॥ गा० ॥ १॥ आघो कंधरजी द्वार पदिनाई, डोपी
 रतन अड़ाऊंजी रतन जड़ित का पालना में बैठ
 मुनाईजी ॥ गा० ॥ १॥ हरष धरीने शिवादेवीजी
 प्रभु मुख दर्शन निरखेरे । रमरुम रमरुम फिरे
 महिल में दिवको हरखेजी ॥ गा ॥ ७ ॥ नवी
 सुखकी शिवादेवीजी प्रभु के भीमम कावेरे ।
 लाजा लाड सरस अखेजी चेहर लावेरे ॥ गा० ॥ ७॥
 रतन अकत का पाल कथोका प्रभुजी ने पुरसावे
 रे । मकमल रेशम गाथी ऊपर बैठ जिमावेरे ॥
 गा० ॥ १॥ सोना का तो बकरी मंभरा रेशम डोर
 बटावेरे । हरष धरीने शिवादेवीजी पुत्र सिखावे
 रे ॥ गा० ॥ १०॥ हाथ जोड़ पों कहत अमीरिअ ओ

१३७. पानी विषे ।

तर्ज-होनी ।

मनपीजो र जल को कोई छारया विना ॥टेर॥
पाप घणो अण छारया जल में, असजीव घणा
कीणा भीणा ॥म०॥१॥ केरी जीव घणा जलमांही,
पिया होय तन रोग घणा ॥ म०॥२॥ व्रत एकादशी
पूजा अरचा, अन छारो जल निकुल गिना ॥ म०
॥३॥ मत्स वधिक से पाप अधिक है विष्णु पुराने
श्लोक सुना ॥ म० ॥४॥ मूत्र ठारणो चार बोला में
जल शुद्धि का कहा गलना ॥ म० ॥ ५ ॥ पाप कटे
तन रोग मिटे हैं अमृत वचन सुन धारो सुगना
॥ म० ॥६॥ इति



१३८. श्री मुनि सुव्रत स्तवन ।

तर्ज-सती शिरोमणी अजना ।

श्री मुनि सुव्रत साहिबा, दीन दयाल देवां
तरणां देव के तारण तिरण प्रभु तुम भणी, उज्वल

(२०६)

१३६ भजन उपदेशी ।

धर्म—कर्मोप ।

सच्चा सिखात हमसे छिपाया नहीं जाता । कूड़े को कभी सत्य बताया नहीं जाता ॥ ३६ ॥ गुप्तकोप विगत दोष है तारक अर्हान के । सद्गोपी रूप प्यास में लाया नहीं जाता ॥ स० ॥ १ ॥ सारंगी सपरिभाही मिथ्या आडंबरि निगुमे को अपना सर पे झुकाया नहीं जाता ॥ स० ॥ २ ॥ साधय अर्द्धिसा विनयमूल धर्म बीर का । द्विसा धर्म पे मन को लगाया नहीं जाता ॥ स० ॥ ३ ॥ मिथ्य अैन वैम एन नहीं बिरुदना । साधय गयोङ्ग हमसे सुनाया नहीं जाना ॥ स० ॥ ४ ॥ कहत अमीरिज बीर कील अडल टि । दुनियां में किसी से हयाया नहीं जाता ॥ स० ॥ ५ ॥ इति

१३७. पानी विषे ।

तर्ज=होनी ।

मनपीजो २ जल को कोई छारया विना ॥टेर॥
पाप घणो अण छारया जल में, त्रमजीव घणा
भीणा भीणा ॥म०॥१॥ मेरी जीव घणा जलमांही,
पिया होय तन रोग घणा ॥ म०॥२॥ व्रत एकादशी
पूजा अरचा, अन छारो जल निकुल गिना ॥ म०
॥३॥ मत्स वधिक से पाप अधिक है विष्णु पुराने
श्लोक सुना ॥ म० ॥४॥ सूत्र ठारंगे चार बोला में
जल शुद्धि का कहा गलना ॥ म० ॥ ५ ॥ पाप कटे
तन रोग भिटे हैं अमृत घवन सुन धारो सुगना
॥ म० ॥६॥ इति



१३८. श्री मुनि सुव्रत स्तवन ।

तर्ज=सती शिरोमणी अजना ।

श्री मुनि सुव्रत साहिबा, दीन दयाल देवां
तणां देव के तारण तिरण प्रभु तुम भणी, उज्वल

विष्णु सुमर्कं नित्य मेव के ॥ २ ॥ श्री मुनि सुमर्त
साहिबा ॥ डेर ॥ हुं अपराधी बनादि को जनम
जनम गुन्हा किया भरपूर के । सुटिया प्राण सब
काय का सेविया पाप अठार करारतो ॥ श्री० ॥ २ ॥
पूरन अहुन कर्तव्यता ते प्रभु दिमखा तुम बिचार
के । अपम अकारण विद्वध से शरन आवो अब
कीक्रिये सार के ॥ श्री० ॥ ३ ॥ किञ्चित् पुण्य परमाव
से इन भव को लक्षियो श्री शिन धर्म के । निरूप
नरक निगोद से पहची अनुग्रह करो परिग्रह के
॥ श्री ॥ ४ ॥ साधु पक्षो नहीं संप्रद्यो आवक मत
नहीं किया अणीकार के । आदर्श तो न आरा-
धिया तेहची रुक्षियो हुं अनन्य संसार के ॥ श्री०
अब समकित मत आदर्शो तदपि आराधक हुई
तटं भव पार के । जन्म जीतष सफलो हुवे इन
पर विमनु बार हजार के ॥ श्री० ॥ ५ ॥ सुमित्र मरा-
धिय तुम पिता धन धन श्री परमावती माय के
तस मुत विभुवन विशक तुं अन्ध विमयचन्द
बार हजार के ॥ श्री० ॥ ७ ॥

१३६. अठारह पाप आलोचना ।

तर्क-सलित छन्द ।

परम देवनो देव तूं खरो, घर्म ताहरो में नथी
 कर्यो, भरममां भस्यो तूं नवी गस्यो, करमा फा-
 समां हूं अति दस्यो ॥ १ ॥ गरीब प्राणीनां प्राण में
 हरया, त्रसथावरो जीव नां गरया, थरर धूजतो
 मोतथी डरी, अरर पहवी घात में करी । २ ॥ सत्य
 सभा जई भूठ घोलिया, धर्मी जीवना मर्म खो-
 लिया, सद्गुणी सिरे आल आपिया, अरर पापना
 बंध थापिया ॥ ३ ॥ अदत्त दानथी हूं नविडर्यो, पर
 धन हरी केल में वर्यो, तस्करों तना तान में चढ्यो
 अरर पापना पुंजमां पढ्यो ॥ ४ ॥ रमणी रगमां अङ्ग
 राचियो, विषय सुखमा चित माचियो, शियल
 भंग नो दोष ना गरयो, अरर हायरे बाहुरो वरयो
 ॥ ५ ॥ अथिर दाममां हूं रयो अड़ी, वात धर्मनी
 चितनां चढी, उधत मोहमा हूं पढ्यो अती, अरर
 माहरी श्रुं थसे गती ॥ ६ ॥ करूर भावथी क्रोधने

मही सजन बुद्धी रोपमा रही । सबे संपधी
सप छोड़ियो तरक तुस्यधी तुच्छ हूं थयो ॥ ७ ॥
मत्सर मद्यधी में बहु कर्यो ममत भाव में हू अही
मर्यो । मद् इसके चक्रयो मानमा अर्यो चिनय ना
कर्यो गर्यमा अर्यो ॥ ८ ॥ इगलवात्रियें हूं बहु रम्यो
कपट कूटमा काल निर्गम्यो । मुख मीठ कही भेषि
बोलवी अरर कैमरे भूल से मधी ॥ ९ ॥ धन हिर
कणी मोती मे मधी अहुअ अर्यनो हूं थयो धर्यी ।
अधिक आशतो अररे अर्यी अरर लोभमे ना
सपरो हली ॥ १० ॥ मगम चित्त धी भ्रामनी परे
रत स्वार्थमा पोविया परे । तरकने तसा कर्ममा
कर्यो अरर रंगधी हूं मधी तरयो ॥ ११ ॥ रित
दुर्धी रक्षा उप हन्धमा गुन मधी गण्यू मेरी
मधमा । अरर कालकी रोपधी मरी अरर सार्यनो
हू थवा अरी ॥ १२ ॥ मित्र कुटुम्ब मे ब्यात जातमा
अहिपर्यो बहु बात पानमा । अहुअ आतमा पा-
नमा अररा अरर कनेशता कूपमा पर्यो ॥ १३ ॥
अप्यहुता दिया आल अर्यमे अधिक ऊचरी

मेल्युं धन्यने । सनगुरु तणो संगना कर्यो, अरर
 पापनां पुंजमां पढ्यो ॥ १४ ॥ परनी चोहटे चुगली
 करी, नृप सभा भूठी सायदी भरी । पिशुन धूर्त
 हुं लाच लालची, पशु पणें रह्यो पापमां पची ॥१५॥
 पर पूठे परा दोष दाखिया, जस तणो घणो स्वाद
 चाखिया । रहस वात तो में करी छती, नव अर-
 रयमा रूलियो अती ॥१६॥ अधम काममां हर्ष में
 धर्यो, धर्म ध्यान में अमरवे भर्यो । दुर्गुणे रच्यो
 मोहमां मच्यो, अरर कर्मना नृत्यमां रच्यो ॥१७॥
 छल विद्या करी कर्थ संचिया, छुटण विदणा लोक
 वंचिया । पतीत रांकने छेतया वहू, अरर पाप हुं
 केटला कहूं ॥ १८ ॥ शरीर शोधतो में नवी कर्यो,
 जड प्रसंग थी योनि में फर्यो । शुध विचार तो
 चित ना चढ्यो, मिथ्या शल्य तो मुज ने नढ्यो ॥
 ॥ १९ ॥ करम वैरिये बीटियो मने, कर ग्रही करूं
 अरजी जीनने । कर ग्रहो प्रभु रांक जानने, दिल
 दया धरो म्हेर आनने ॥२०॥ तकसिरों घणी को
 सके गणी, घगस तो गुन्हों जगतनां धणी । रींभ

करी करी तोड़ि बाधने, सख्य पखवाओ कोशिवत्स
ने ॥२१॥ नैब मुखा मही बम्बूमा मही, बाहुमांस
में बद्धे रही । ललित धुवमी जोड़ ये कही पठिष
प्राक्षिपे पश्चिम सही ॥ २२ ॥ इति



१४० धी पद्यावती ध्याकोचना ।

१४-केशी ॥

द्विजे गयी पद्ममावती जीधरणि लमाये ।
आखपर्यु जग शोहीसुं इन बेला भाव-से मुञ्ज मि
श्रद्धामि मुञ्जड ॥१॥ मय अमताए करी अदिहन्तनी
शान्त । जैमें जीध विराधिया खोगसी लाख ॥ ते
मुञ्ज ॥ २ ॥ तान लाख पृथ्वी तणा, साते अप-
काया मान लाख तडकायना साते बली बाय ॥ ते
मुञ्ज ॥ ३ ॥ दश लाख मत्येक पमरपती कीदह
साधारण धा । म इन्द्रियादिक धीधना बेचे लाख
विचार ॥ म० ॥४॥ वैच तिर्येक ने माग्धी बाद २
तान प्रकाश । कीदह लाख मनुष्यना बह लाख

चोरासी ॥ ते० ॥५॥ इह भव परभव सेविया, जेमें
 पाप अठार । त्रिविध त्रिविध परहरूँ दुरगति
 दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी बोल्या
 मृपावाद । द्रोप अदत्ता दाननां, मैथुन उनमाद ॥
 ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध
 विशेष । मान माया लोभ में कर्या वली रागने द्वेष
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ क्लेश करी जीव दूहव्या दीघा कूडा
 कलंक । निन्दा कीधी पारकी रति अरति निशंक
 ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी खाधी चोंमरे कीधो था-
 पण मोषो कुगुरु कुदेव कुधर्मनो भलो आण्यो
 भरोसो ॥ते०॥१०॥ खाटकीनां भव में क्रिया कीनी
 जीवनी घात । चीड़ी मार भव चरकला मार्या दिन
 ने रात ॥ते०॥११॥ मच्छि मारभव माछला भाल्या
 जल वास । घीवर मील कोली भवे मृग पाडिया
 पास ॥ ते० ॥१२॥ काजी मुल्ला ने भवे, पढ्या मंत्र
 कठोर । जीव अनेक जिमे कर्या कीधा पाप अघोर
 ॥ते०॥१३॥ कोटवाले भव में क्रिया, आकरा करने
 दण्ड । बन्धीघान मराविया कोरडा छंडी वंड ॥ते०

परमाधामी मां भवे शीघ्रा मेरिपासे दुःख क्षिपन
मेघन वेदना ताडन अतितीक्ष्णा ॥ ते० ॥ १५ ॥
कुमारना भव मे क्षिपा क्षया निवारकाया तेक्षी
भवे तिल पीक्षिया पाप विह मर्या ॥ ते ॥ १६ ॥
दक्षी भव हलके क्षिया फोर्या पृष्ठीनां पैठ । सुद
मिदस्य क्षिभायका शीघ्रा बलदक्षपेठ ॥ ते० ॥ १७ ॥
मात्रीनां भव रोपिया नागा विपिय से सुद मूल
पत्र फस फुल्लनां साग्या पाप अलक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥
अधापाईयानां भवे मरियो अधिको मार । पोरी
ऊँट कीका पख्या जासी दया न सिगार ॥ ते० ॥
१९ ॥ क्षीपाना भवे क्षिप्यां क्षिता रंगस पास ।
अग्नि आरंभ क्षीघ्रा यस्या पातुबाई अस्यास ॥ ते० ॥
॥ २० ॥ सूर्यपथे रक्ष भूमतां मायां मातुष्य दृग् ।
मह मांस भाक्षस्य मख्या नाया मूल नै कल्प ॥ ते० ॥
॥ २१ ॥ नाथ लखाई पालुमी अथगत पादि उल्लेख्या
आरंभ क्षीघ्री अति यथा पोते पापत्र सिध्या ॥
न० ॥ २२ ॥ इहाल कर्म क्षीघ्रावशी धमे शीघ्रा ।
स्य नाई बीजगगनी कृदा कोपक क्षीघ्रा ॥ तं० ॥

॥२३॥ विदल्ली भव उंदरगल्या, गरोली हत्यारी ।
 मूढ मूरख तणे भवे, जूं लीख मै मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥
 मडभुंजा तणे भवे, मार्या एकेंद्री जीव । ज्वार
 चणा गेऊं सेकिया, पाडंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥
 खांडण पीसण गारीनो, श्रारंभ कीधो अनेक ।
 रांधण पीसण अग्निनां, पापलाग्या विशेष ॥ ते०
 ॥२६॥ विकथा चार कीधी वली सेव्या पञ्च प्रमाद ।
 इष्ट वियोग पडाविया, रोदन विषवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥
 साधूने श्रावक तणा, व्रत लेइने भांग्या । मूल ने
 उत्तर तणा मुज दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ सांप
 बिछी सिंह चीतरा, सकराने समली । हिंसक
 जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥
 सूवावड दूषण घणां, काचा गर्भ गलाव्या । जे
 पानी ढोल्या घणां शील व्रत भंगाव्या ॥ ते० ॥ ३० ॥
 घोवीनां भवे जे कर्या, जल जीव सुकाया । धूल
 करी जल रेलिया, दान देतां निवार्या ॥ ते० ॥ ३१ ॥
 लुवारना जे भव कर्या, घड्या शस्त्र अपार कोस
 कुदाला ने पावडा, घग २ ती तलवार ॥ ते० ॥ ३२ ॥

गूस्वराभा मय में कर्पा सीला माप कटाया । पाकी
ने बेलां मेळिया, बाडे ऊठी छे ज्वाला ॥ ते० ॥ ११ ॥
ओडनां मय जे कर्पा कृषा वाप जोदाया । सरो
वर ने गलाविया बलि डाका बंधाया ॥ ते० ॥ १४ ॥
बाधिपानां मय जे कर्पा कृषा सेक सिखाया ।
ओडो देय अधिको लियो कृडा माप रखाया ॥
ते० ॥ १५ ॥ हाथीनां मय जे कर्पा बेसकी बिह
रिया । पंथी माला बंधिया पापे पेटअ भरिया ॥
ते० ॥ १६ ॥ केरीने कोठी बका बली निजुजमोरीया ।
राई बलाई शंखले पाते पापअ सिप्या ॥ ते० ॥ १७ ॥
अथमल भांधर मेळिया अथ पूंसे बूदे । अथ
माण्या कथ भारिया त पाप किम भूले ॥ ते० ॥
१८ ॥ मय अनेक ममतां थकां कीथां कुडुम्ब
संबंध । अविष २ बोसक, तेनो शुं प्रतिबंध ॥ ते०
॥ १९ ॥ मय अनेक ममतां थकां कीथो देह संबंध ।
अविष २ बोसक तेनो शुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ २० ॥
अथ अनेक ममतां थकां कीथो परिग्रह संबंध ।
अविष २ बोसक तेनो शुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ २१ ॥

इन परे इह परभवे कीघा पाप अखत्र । त्रिविध र
 चोसरू, करुं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ४२ ॥ खाती ना
 भव मैं किया, लीला रूख कटाया । छोटा ने बलि
 मोटको, पोते पाप कमाया ॥ ते० ॥ ४३ ॥ ब्राह्मण रे
 भव मैं किया, कीघा अण्णगल स्नान । जोतिष
 निमित्त भाखतां, लिया वज्र दान ॥ ते० ॥ ४४ ॥
 वजाजनां भव मैं किया जूना नवि करि बेच्या ।
 कूड़ कपट केलव्या घणा पोते पापज संच्या ॥ ते०
 ॥ ४५ ॥ परनारी मैं भोगवी वेश्या ने विधवा । चोरी
 जारी मैं करी बोलया मरम मैं मोषा ॥ ते० ॥ ४६ ॥
 पुरुष पराया सेषिया घरका ने बली दूजा । कीतोल
 हांसी ने मस्करी दीघा मरम ने मोषा ॥ ते० ॥ ४७ ॥
 अण छाण्यां आदण दिया अण पूंजे चुल्हा । अण
 सोध्या धान ओरिया ते किम जाय भूला ॥ ते० ॥
 ॥ ४८ ॥ जोर करी हिंढे हिंचता भांगी तरुवर डाल ।
 काचा फल फूल चूंटियां फोड़ी सरवर पाल ॥ ते०
 ॥ ४९ ॥ भोषा भरडाने भवे कण्हता नचाबा ।
 चकरा भैंसा सुरगावली बिना दोष लगाया ॥ ते०

॥१०॥ ग्हावण घोवण में किया बेशु बाधा मराया ।
आरी से मुख जोबता बहु दोष लगाया ॥११॥
सुख्या घाम बलाविया ईसीधन मसलाया । धने-
रिया भीरु तमेरिया मसली पाप कमाया ॥ ते० ॥
१२ ॥ दासी बेर्याने मने खोरी आरी माई । माती
ही बिसन सेपिया कुट्टी कमाई ॥ ते० ॥ १३ ॥
असुर मने में अपमो मुरगी गाव मराई । पंथी
पिंजरे पाहिया करुया नहीं लाई ॥ ते० ॥ १४ ॥
बिखम होछा बीड़ी पीपी बिन देख्या मझी ।
जीब घांस बलिया घया होती परम खारी ॥ ते० ॥
॥ १५ ॥ मेरु मन्थारी मासिया महाकरु इनुमान ।
आठ मरु में लुककरी दिया करुमादान ॥ ते० ॥
१६ ॥ माखी माका खेतिया मंथर घर हाया ।
सुलिया घाम बलाविया पाये वेद भयाया ॥ ते० ॥
१७ ॥ मेरुधारीरा मरु में किया खीषा अक्षुभता
आहार । ईस्या में घर्म बलावियो भाई क्या न
सिगार ॥ ते० ॥ १८ ॥ एहस्वी केरु डुकडा खाया
अमतीबाग । करुनी दुष बीपी नहीं पडिया बरक

मकार ॥ ते० ॥ ५६ ॥ निंदा कीधी साधुनी, शुद्ध
साधु सताया । कुगुरां संग लागने बहुला दोष
लगाया ॥ ते० ॥ ६० ॥ रेरे कर्म कीधा घणा, पाप
कीधा अपार । ये पाप उदय में आविया, पीछे
किणरो आधार ॥ ते० ॥ ६१ ॥ अरिहन्त सिद्ध साधु
नो, मुज शरणो हजो । भगवन्त सुमरण कीजिये,
सूरज सामो जो जो ॥ ते० ॥ ६२ ॥ समदृष्टि जीव
सरदसी, सुणता समता आवे । भारी कर्मी जीवड़ा
सुणता दुख पावे ॥ ते० ॥ ६३ ॥ हिवे राणी पद्मावती,
लीधा शरणा चार । सागारी अणसण कर्यो,
जाणपणानो सार ॥ ते० ॥ ६४ ॥ राग बेराठी जे
सुने, यह तीजी ढाल । समय सुन्दर कहे पाप से,
छूटूं ततकाल ॥ ते मुज० ॥ ६५ ॥



१४१. प्रभाती जिन स्तुति ।

जयजिनंद जयजिनंद जयजिनंद देवा ॥ टेर ॥
विमल चरण विघन हरण गुण समुद्र जेवा ॥१॥

अथन कोटि अमर पास हृद् करत सेवा ।
तीन लोक मार्गि अपर देव महीं एवा ॥ अ० ॥२॥
मात तस्त आठ तूहीं महार के करेवा ।
बीतगाग देव तूही कष्ट के हरेवा ॥ अ० ॥३॥
मात उठ करो प्रभु नाम का कहेवा ।
किसनसास परम देव नमो मित्य सेवा ॥ अ० ॥४॥



१४२ अथम स्तुति ।

नमो-क्याने भक्तिामी ही ।

आदेभर अधिनाशी हो मुगतीरा वासी सां
मला काई मेपकबी अरवास । मधजल पार
उतारो हो अषधरो अरबी बालहा काई आपो
अधिचल वास ॥ अ० ॥१॥ मरुदेवीरा नन्द्य हो
जगबन्धम सम्भन शीलरा काई विघन मिहन्धन
देव । पननामी गुरुधामी हो शिषगामी स्वामी
मापरां काई मुरतर सारे सेव ॥ अ० ॥२॥ बीतराग

मन रंजण हो दुख भंजन गंजन कामने कांई देवन
दूजो कोय । किसन करे कर जोड़ी हो शिरमोड़ी
सायब वन्दना कांई शिवसुख दीजो मोय ॥आ०३॥



१४३. अरिहन्त स्तुति ।

तर्ब-धीरा चालो हो विरज का वासी० ।

नमुं २ देव अरिहन्ता, प्रभु शिव रमणी के
कन्ताजी ॥टेर॥ घन घाति करम सब हन्ता । सब
जानत केवल वन्ताजी ॥ नमुं० ॥ १ ॥ जे चौतिश
अतिशय । सोहंता प्रभु तीन भवन में महंताजी ॥
नमुं० ॥ २ ॥ एक जोजन वाणी वापरंता । चारों
तीरथ स्थापन करंताजी ॥ नमुं० ॥३॥ तिलोकरिस्र
तन मन से नमंता । सेवा दीजो सदाई भगवन्ता
जी ॥ नमुं० ॥४॥ इति



अथम कोटि अमर पास एन्द्र करठ सेवा ।
तीम लोक माहिं अपर देव नहिं एषा ॥ अ ॥२॥
मात तात भात तूही महर के करेवा ।
वीतराग देव तूही कष्ट के हरेवा ॥ अ० ॥३०॥
प्रात उठ करो प्रभु माम का कलवा ।
किसनकास परम देव नमो मिस्य सेवा ॥ अ० ॥४॥



१४९. अथम स्तुति ।

नमः-स्वामे शशिनामी वी ।

आदिश्वर अविनाशी हो भुगतीरा बासी सां
मलो काई सेवकमी अरदास । मयकास पाए
उतारो हो अकधारा अरबी बाबहा काई आपो
अविचल वास ॥ अ० ॥१॥ मरुदेवीरा नन्द्य हो
जगबन्धन सन्धन शीतरा काई विघन त्रिकन्धन
देव । घननामी गुणधामी हो शिबनामी स्वामी
मायरा काई सुरसर सारे सेव ॥ अ० ॥२॥ वीतराग

गच्छ भार धुरंधर धीजे, वरवाणी पीयूष पीजे रे
॥ नि० ॥ ३ ॥ कहे 'सूर्य' चरण परसीजे, गुनगान
किया श्रव छीजेरे ॥ नि० ॥४॥



१४६. उपाध्याय स्तुति ।

मर्ज-उपरोक्त ।

बंदू चरण युगल उवज्झाया, जारा दर्शन से
सुख पाया हो ॥टेरा॥ गुण पचीस अलंकृत भाया,
शुचि गंग तरंग सुहाया हो ॥ वं०॥१॥ श्रुत केवली
विरुध घराया, भवि मिथ्या वमन कराया हो ॥
वं० ॥ २ ॥ वरवाचक थविर कहाया, कुत्तियावण
श्रोपम ठाया हो ॥वं०॥३॥ ढिगताने साज दिराया
मुनि चिन परमाद रहाया हो ॥ वं० ॥ ४ ॥ तिहुं
आगम भणे भणाया, 'मुनि सूर्य' जिन्हें शिरनाया
हो ॥ वं० ॥५॥



१४४ सिद्ध स्तुति ।

ॐ-स्तोत्र ।

नमू २ सिद्ध मगवन्ता मय भ्रमण हरो जप-
वन्ताजी प्रदेर ॥ गुण दर्शन ज्ञान अमंता नम चरण
लाह अरिहन्ताजी ॥ न० ॥१॥ कर जन्म मरण सब
हता मये अण्ड सिद्ध महंताजी ॥ न० ॥२॥ अरि
वस्तु हथी गुण राजंता लहे शिबसुख आप अयंता
जी ॥ न० ॥३॥ मुनि सूर्य सिद्ध प्रथमंता, मित सुमरे
शिबपुर कन्ताजी ॥ न० ॥४॥ इति



१४५ आचार्य स्तुति ।

ॐ-स्तोत्र ।

मितनमुं आचार्य तीक्ष्ण मधि जीपत्र कारक
सौख्ये ॥ देर ॥ जाका गुण कृतीसों तीक्ष्ण अप्पि
ओपमा सुरतक हीक्षेरे ॥ मि० ॥१॥ बर संपदा आठ
कहीअे बरसमना न्वाह कहीअे रे ॥ मि० ॥ २ ॥

देवी सुनन्द नरिंदा, हुण आदी करन मुनिंदा हो
॥ नि० ॥२॥ जस -सेवे पद अरविंदा नित नरगण
देव फणिंदा हो ॥नि०॥३॥ 'मुनि सूर्य' ऋषभजिन
वन्दा, टले विघन सभी छल छंदा हो ॥नि० ॥४॥

१४६. समता ।

समता रसका प्यालारे, पीवे सोही जाने ॥स०
॥टेर॥ थाक चढी कवहु नवि उतरे तीन भुवन सुख
मानेरे ॥ पी० ॥१॥ इन सम और नहीं रस जग में
इम कहें वेद पुराने रे ॥ पी० ॥ २ ॥ सकल किलेश
टले इक पल में जो समता घट आनेरे ॥ पी० ॥३॥
चोर चिलायती समता घरीने पायो अमर विमाने
रे ॥ पी० ॥४॥ रतनचन्द समता रस प्रकट्या पावे
केवल ज्ञानेरे ॥ पी० ॥५॥

१४७ साधु स्तुति ।

तन्मन्त्रोक्त ।

एह पंचम मुनि गुणधारी ज्योतिष ग्यान सदा
मूलकारी हो ॥ १८८ ॥ नवकस्ये उपबिहारी सम
कांधन लोह पिहारी हो ॥ १८९ ॥ करै तप बाँझ
परिहारी नवपाद सद्गित प्रह्लाधारी हो ॥ १९० ॥
अमरम सतरह पिहारी पंचाभय दूर मिहारी हो
॥ १९१ ॥ मुनि अंगम तीर्थ उपकारी, युद्ध अमर
गोचरी आरी हो ॥ १९२ ॥ गुण सत्ताविस भंडारी
'मुनि सूर्य' कहै बलिहारी हो ॥ १९३ ॥



१४८. षष्ठम स्तुति ।

तन्मन्त्रोक्त ।

मित वन्दू नामि के वन्द्या अग तारुण अय
जिन वन्द्या हो ॥ १८८ ॥ मवि तारुण दित सुख कंठा
कह्यो हो विष घर्म जिनव्या हो ॥ १८९ ॥ मड-

देवी मुनन्द नरिंदा, दुष आदी करन मुनिंदा हो
॥ नि० ॥२॥ जस सेवे पद अरविंदा नित नरगण
देव फण्डा हो ॥ नि० ॥३॥ 'मुनि सूर्य' ऋषभजिन
वन्दा. टले विघन समी छल छंदा हो ॥ नि० ॥४॥



१४६. समता ।

समता रसका प्यालारे, पीवे सोही जाने ॥ स०
॥ टेर ॥ थाक चढी कवहु नवि उतरे तीन भुवन सुख
मानेरे ॥ पी० ॥१॥ इन सम और नहीं रस जग में
इम कहें वेद पुराने रे ॥ पी० ॥२॥ सकल किलेश
टले इक पल में जो समता घट आनेरे ॥ पी० ॥३॥
चोर चिलायती समता धरीने पायो अमर विमाने
रे ॥ पी० ॥४॥ रतनचन्द समता रस प्रकट्या पावे
केवल क्षानेरे ॥ पी० ॥५॥

१५० श्री शान्तिनाथ स्तुति ।

४३-४५२ इति श्री शान्तिनाथे ।

शान्ति त्रिनेश्वर साहिबारे शान्ति तथा दातार ।
 अमरजामी अम तखोरे आत्ममनो आधार ॥ १ ॥
 त्रिनेश्वर सुख मोरी अरदास व डेर ॥ पित चाहे
 प्रभु चाकरीरे मम चाहे मिशया काज । नयन चाहे
 प्रभु निरखारारे अरुण हो मिनराज व जि० ॥ २ ॥
 पलक म विमरुं सामनेर त्रिम मोरो मम मह ।
 एक कसो किम राखियेरे राज कपटमो मेह व जि०
 ॥ ३ ॥ आठ करे कोई आपसीरे नवि मूर्खीये नि
 रास । सेधक आसी साहिबारे हीज तास दिवास
 व जि० व ४ ॥ वायक ने देता धक रे बिह नवि सागे
 वार । काज अरे मित्र दासमोरे ए मोहो उपकार
 व जि० व ५ ॥ पहवो आसी अग पसीरे अरजो दिव
 में व्यार । पोतानो आसी करीरे मोहम अथ अय-
 कार ॥ जि ॥ ६ ॥ इति

१५१. प्रभु प्रार्थना ।

तजं=देश ।

मारी नाइ तमारे हाथे हरि संभालजोरे ।
प्यारा पोतानो जाणीने प्रभुपद पालजोरे ॥ टेर ॥
पथ्यापथ्य नथी समजातूं, दुख सदैव रहे उम-
रातूं । मने हशे शुं थातूं, नाथ निहालजोरे ॥ मा०
॥१॥ अनादि वैद्य आपछो सांचा कोई उपाय विपे
नहिं काचा । दिवस रह्या छे रांचा, वेला वालजोरे
॥ मा० ॥ २ ॥ विश्वेश्वर शुं हजी विलारो, वाजी
हाथ छुता का हारो । महा मुभारो मारो, नटवर
टालजोरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ केशव हरि मारूं शुं थासे,
घाण चाल्यो शुं गढ़ घेरा से । लाज तमारी जासे,
भूधर भालजोरे ॥ मारी० ॥४॥



१५२. जिनेश प्रार्थना ।

शी कहुं कथनी मारी नाथ, शी कहुं० हवे
शरण दर्ई ल्यो तारी नाथ ॥ टेर ॥ दश दृष्टान्ते

बुद्धिमत् मत्त पक्ष पुण्य धरि हूं पाम्यो । भवनी
 भूषणपीमां भूष्यो विपद्य धरि न विराम्यो ॥ ना०
 शी० ॥१॥ आर्ये भूमि-ने उत्तम कुलमां अम्भ धर्या
 शुभ योगे । साध्य न साध्य मूढ पष्वाधी, अमित
 धयो हू मोगी ॥ ना० शी० ॥२॥ तत्र पटुता गुड संग
 मश्यो पक्ष वूर प्रभात् न कीधो । इन्द्रिय सुखमां
 बाह्य धनीने उन्मत्तग मे कीधो ॥ ना० शी० ॥३॥
 भवत्त योगे साधी नै दिन दिन बहु पातों निर-
 धारी । करवी करता काया कर्म्ये मूर्खी मे न
 निधारी ॥ ना० शी० ॥ ४ ॥ सत्साधन संग्रह यथा
 पक्ष मधु विदुमां अटक्यो । आज्ञा काज्ञ करी समय
 गुमाभ्यो तोमे अधर हूं लटक्यो ॥ ना० शी० ॥५॥
 तात बाल मम अन्तरणी पे कर्तता पार म धादि ।
 अन्तर बल आपो अविनाशी तो सेवक सुख पाव
 ॥ ना० शी० ॥६॥

१५३. पूर्णनिंदघन प्रभु ।

राग धन्या श्री ।

प्रभु मेरे ? तू सब वाते पूरा । परकी आश
कहा करे प्रीतम ? ये किरण वाते अधूरा ॥ टेर ॥
परबस बसत लहत परतख दुख सब ही वासे
सनूरा । निज घर आप संभार संपदा मत मन
होय सनूरा ॥ प्र० ॥ १ ॥ परसंग त्याग लाग निजरंगे
आनन्द वेली अंकूरा । निज अनुभव रस लागे
मीठा ज्यों घेवर में छूरा ॥ प्र० ॥ २ ॥ अपने ख्याल
पलक में खेले करे शत्रु का चूरा । सहजानन्द
अचल सुख पावे धूरे जग जस नूरा ॥ प्र० ॥ ३ ॥

१५४. पंच परमेष्ठी लावणी ।

अष्टपदी ।

जपो नवकार मंत्र ज्ञाता, स्वर्ग अपवर्ग सौख्य
दाता ॥ टेर ॥ भीत रुज तन में नहीं आता, रिपु
को करन सके घाता ॥ दोहा-क्रोड़ केवली गुण

करते तो विश्व नाशे पाए । महा प्रमाथिक मज
 परमेष्ठी अपर्ता अय २ कर । मिटावे अथम मरण
 जाता ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रथम अरिहंत देख मीने होय
 नहीं अष्टादश अमी । अखिल गुण आरुष दि पावे
 गिरा गुण पसुतीसे तामे ॥ दोहा—अथम होय अठ
 केपली अठ्ठण नव आन । कर्म घातिया वेद
 कापाई पाया केवल बाव ॥ बिडोया बोसठ गुण
 गाता ॥ अ० ॥ २ ॥ नमो पद सूजे भी शिखा बाव
 दर्शन कर ससूजा । कर्म बसु इधि बसु गुण लीया
 अम्य भव अरुषका कीया ॥ दोहा प्रथम प्रथम
 महीं एक है भाव प्राय है बाव । ज्योति रूप मि-
 कलंक निरंजन अचिनाशी अचिकार । म्याम हर
 गोगेवर म्याता ॥ अ० ॥ ३ ॥ नमो पद आचार्य तीये
 सम्पदा अष्ट देख तीये । कृतीसों गुण गिरवा
 तीये ओपमा सुरतक की तीये ॥ दोहा—इति समान
 अठ संघ में नीतारण गुणवाम । पण्डित योग
 अचरित पावे धर्म आरु मिर्षाम । सुपरावर
 जोक मादि म्याता ॥ अ० ॥ ४ ॥ नमो पद बोये अष्ट-

ज्जाया, विमल गुण पणवीसे भाया । भारती वक्रं
वास डायामिथ्या दर्शन सल अघ ढाया ॥ दोहा-
भणे भणावे सूत्र सब चरण करणरा धार । डिगता
प्राणी धर्म से घिरकर राखण हार । भविक ने
बोध बीज दाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ नमो पद पंचम उप-
कारी, साधु गुण सप्तविंस धारी । अमल चित
खच्छ गगवारी, तपोधन घोर ब्रह्मचारी ॥ दोहा-
नमो ज्ञान दर्शन भणी तप चारित्र उदार । अड
सिध नवनिध मंगल माला पग २ मिले अपार ।
विघन घन मेटन को वाता ॥ ज० ॥ ६ ॥ भणे जो
भव्य शुद्ध भावे, थोक तस मन वंछित थावे ।
अचिंती कमला घर आवे, लावणी किशनलाल
गावे ॥ दोहा-सार चतुर्दश पूर्ष को मंत्र बड़ो नव-
कार । सब मंगल में धूर यह सकल पाप क्षयकार ।
सिधरतां वरते सुख साता ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति



१५५. गुह्यदेव स्तवन ।

ॐ—हा ॐ वे भेदा गते ।

इसा गुह्यदेव हमारे श्रीम यशोवर्षि तारक
 द्वारा । कमल कामनी कौक इत्या सब जग से
 न्यायरे ॥ १० ॥ तत्त्व कवि विरवा में आगी ज्ञान
 असार सकल रिष त्यागी । कुटुम्ब कौक निकरवा
 बहू मागी विविध २ त्याग दिया जिन पाप
 अठाररे ॥ १० ॥ ११ ॥ भूमंडल विधरे मन्वकश्य वासु
 जिन प्रतिबन्ध न अश्ये साबध माया मुझे न
 अश्ये अष्ट करम सब करम परीषा जीते सारारे
 ॥ १० ॥ १२ ॥ इशुविष घटी अरम का घारी परिमह
 ममता हूँ निवारी नवविष बाहू सदित ब्रह्मचारी
 मणिनी अमिता-पुत्री समाध करी सब दारारे ॥
 १० ॥ १३ ॥ संजम सतर मेदे अरामे अहमातर
 परमाह न लाये सदा मुगति को मारग चाये
 धार नपोधन अम इम संम मुख हृन्व अपारारे ॥
 १० ॥ १४ ॥ पञ्च महावत विमल पाते पञ्च इन्दी को

जीतण वाले चार कषाय किया पेमाले, भाव करन
 सत्य योग मनो वच तन सम धारारे ॥ इ० ॥ ५ ॥
 संपन नाण दरश चारित्रे, क्षमावन्त वैराग्य पवित्रे
 कष्ट सह्ये मरणान्त विचित्रे, वेदनि आया समो
 अयासे धन अनगारारे ॥ इ० ॥ ६ ॥ घरम देव
 दिनकर जिम गाजे, चतुर संघ में घन जिम गाजे
 दर्शन दीठां सब दुख भाजे, किशनलाल कहे ऐसा
 मुनि मम प्राण पियारारे ॥ इ० ॥ ७ ॥ इति



१५६. वीर प्रार्थना ।

तर्ज=काली कमली वाले तुम पर लाखों सताम ।

जगपति जगदाधार, सुनलो वीर जिनंद ।
 जिन शासन सिरदार, सुनलो वीर जिनंद ॥ टेर ॥
 हठी मूर्ख कपटी व्यभिचारी, किये पाप मै भारीर
 अगणित अवगुणों का आगारी कीजे ब्रेड़ा पार
 सुन० ज० ॥ १ ॥ भूटे पक्षपात में पड़के, किये
 सच्चे को भूटा लड़के । हुआ अन्ध निज ऐंठ
 पकड़ के ऐसा में मतवार ॥ सु० ज० ॥ २ ॥ तेरा

नाम धरा के भूटा अर्ध अमर्ध में किया अटूटा ।
 कहे सत्य सो ठस पर रुठा कैसे हो उबार ॥सु०
 अ०॥३॥ अपनी इया कया में मारी हो न पया
 ग्य जिम्हादारी । कैसे कहुं सकल विस्तारी तारो
 तारन हार ॥सु०त्रि०॥४॥ पतित पापी अधम चोर
 में कया हरिकर मेरी चोर में । साल गुणीसो पि
 प्याखु बैंगलोर में सूर्य बिजय अधधार ॥सु० अ०
 ३४॥



१५७ अबदह स्वप्न ।

रती क्य मे ।

मैं सुपना रेख्या अरवी सुम लीओ म्हाय
 नादिबा इरेय दीठो मयम गज ऊजलो मरे बुजे
 कृपम गुणयस्त । तीजे सिंह सुलससो मरे घोया
 रेब मईत टो ॥ म्हे० ॥१॥ पुगल माला फल पांच
 में बहु गायत्री कस्त । रवि ऊर्गता सातवें मरे
 आठवें यता पनंग हो ॥ म्हे० ॥ २ ॥ कुम्म कस्त

रतना जड्योसरे, दसमें पदम तलाव । रतना-
 गर इग्यारमोसरे, बारमो देव विमान हो ॥ म्हें०
 ॥ ३ ॥ रतना रापी तेरमी सरे, चवदमें अगन
 प्रचण्ड । सिद्धारथ पूछा करेसरे, पूछे श्रीपति
 पण्ड हो ॥ म्हें० ।४।



१५८. भजन उपदेशी ।

तर्ज-ख्याल में ।

तुम माल खरीदो त्रिशलानन्दन की खुली
 दुकानजी ॥ टेर ॥ शास्त्र रूप भरी बहु पेठ्यां मुनि-
 वर बने बजाजी । वजह वजह का माल देखलो
 कर अपना मन राजी ॥ तुम० ॥१॥ जिनघायी को
 गज हैं सांचो जरा फर्क मत जाण । माप माप देवे
 सतगुरुजी मतकर खींचा तानजी ॥ तु० ॥२॥ जीव
 दया की मल २ भारी शुध मन मिसरू लीजे ।
 डबल मीण समता तणोसरे चाहे सो कह दीजे
 जी ॥ तु० ॥३॥ समता को बंदागल भारी साड़ी ले
 सन्तोष । ऐसा कर व्यौपार जिन्हों से चेतन

पावे मोक्षजी ॥ तु० ॥ ४ ॥ सुखी हाथ वा सोदा
 लेखो नहीं मगने का काम । मम चाब तो मोक्ष
 लेजायो मैं नहीं मांगा वामजी ॥ तु० ॥ ५ ॥ मास
 बिके है थोड़ो जिनसे बर्ब पूरे नहीं खाछे । आ
 वेगा कोई इत्तम माथी मास हमारे पक्षेजी ॥ तु०
 ॥ ६ ॥ मास बिके तो पछो होसी चुनयो मबिज्ज
 बाग । मयाँ सजाना कदियम लूटे सतगुड सिर
 पर हाथजी ॥ तु० ॥ ७ ॥ गुपीसे कृतीममेंछरे
 अम्बाना श्रीमास । करब मुनि उपदेश सुजायो
 मोक्ष आबछपी आठजी ॥ तु० ॥ ८ ॥

१४६ परन्नी बिये काबधी ।

मने—कर की वा कुल ने कन्धी रे २ ।

अतुन परन्नी मल बिरको २ आबछकेरी रेअ
 अन्धी बिरकी को मकको ॥ रेए ॥ राबस मोखो
 गय कडावे लखगाइ बंको । पाप करी मे करक
 गहुँष्या बुक पायो अथिको ॥ अ० ॥ १ ॥ आलकी

खड को राय पद्भोत्तर, द्रौपदी ने हरतो । कृष्ण
 नरेश्वर करी खुवारी पुण्य हुवो हलको ॥ च० ॥ २ ॥
 कीचक राय महा दुख पायो, भीम सुं अधिको ।
 नारी द्रौपदी नेह विचारी, भव २ में भटक्यो ॥
 च० ॥ ३ ॥ परनारी को रग पतंग है, पोढल को
 भलको । औस वृंद जब लगे तावड़ो, ढलक जाय
 ढलको ॥ च० ॥ ४ ॥ परनारी से स्नेह किया से, धन
 जावे घर को । दूजा देखने करे खुवारी, भव धन
 क्यों भटको ॥ च० ॥ ५ ॥



१६० भाव मुनि वंदना ।

राग विमास ।

जूओरे ! जूओरे जैनों ! केवा व्रतधारी, केवा
 व्रतधारी । तेने वन्दना हमारी । जूओरे ! जूओरे
 जैनो० ॥ टेर ॥ जूओ २ जम्बु स्वामी, यालावये
 बोध पामी, तजी राज्य ऋद्धि जेने तजी आठ
 नारी, तजी आठ० वन्दना० जू० ॥ १ ॥ गज सुक-

माल मुनी, घण शिर पर घूनी अडग रखा ते
 प्यामे । डिग्पा न लिगारी, तेमे वन्दना० जू० ॥२॥
 कोण्याना मंदिर मघ रखा मुनि स्पृष्टि मद्र,
 घण्या संग पासता ये घया न यिकारी घया
 न यिकारी तेमे वन्दना० जू० ॥ ३॥ सती तो
 गजुस जेयी जगमां न जोडी येयी पतिव्रत
 माटे कम्पा ग्ही ए कषारी र्ही ए कषारी
 नने वन्दना० जू० ॥४॥ जनक सुता जे सीता वरप
 तो नारे सीता घणुं दुख वेदुं तो ए डिग्पा न
 लिगारी डिग्पा न लिगारी तेमे वन्दना० जू० ॥
 ५॥ सती कलायती नामे घया संखपुर गामे कर
 निज काव्या मोए रखा देकघारी रखा देकघारीतेमे
 वन्दना० जू० ॥६॥ दुलका तो हीया बेबे सह्या एतो
 काम बेबे घणुं दुख वेदुं मोए डिग्पा न लिगारी
 डिग्पा न लिगारी तेमे वन्दना० जू० ॥७॥ घण्य र
 न नग्मारी एवा र्क टेक घारी जीवित सुषारुं
 अष्ट पाण्या मबपारी पाण्या मबपारी तेमे वन्दना०
 जू० ॥८॥

१६१. भजन उपदेशी ।

बांधो मती कर्म चीकरा भुगतोगा आयो आप,
 भवियण ॥टेरा॥ पहिलां तो जोवन थिर नहीं, दूजो
 अधिर संसार, भ० । तीजो घन छे कारमो, चौथो
 तन नहीं लार, भ० बां० ॥१॥ एकतो अटवी उजाड़
 में, दूजो विपसी ठौर, भ० । मुनिवर मारग जावतां,
 विच में मिलिया चोर, भ० बां० ॥ २ ॥ तन वस्तर
 लेतां थकां, ऋषिजी कीथो ध्यान, भ० । चोर कहें
 कारण कीस्यो, मुनि कहें सुण धर कान, भ० बां०
 ॥ ३ ॥ तूं बांधे कर्म एकलो, खावे सघलो साथ,
 भ० । पातिवार कुण राह में, तूतो पूछेनी घर में
 वात, भ० बां० ॥४॥ चोर पूछे घर आयने हूं बांधू
 पापनो पूर, भ० । कुण २ सामिल रहवो थे सांच
 कहो तज कूड़, भ० बां० ॥ ५ ॥ खावण सीर सह
 हमें पापनां सीर न कोय, भ० । जो करसी सो

पापसी घोर मे देवे सुखि पोय म० वां० ॥१॥ घोर
 आयो मुनिवर कने मलो दिपो मुक्त नाम म० ।
 राम कहे लहु सांभरो समझो इन व्याख्यान म०
 वां० ॥७॥



१६२. श्रुपम जिन पारणा ।

उर्क-काम मे ।

महारी रस सेलकी आदि जिनेम्बर कियो पा-
 रणो ॥१॥ यदा एक सी भाठ सेलकी रस मरिवा
 के मीका । दान दिपो भेयांश कपरजी मांडझिया
 प्रभु नूँकाजी ॥ म्हा० ॥१॥ देव बजावे तुहुमी छरे
 मोर्तिया की परणा । कियो पारणो आदि जिनेम्बर
 मेरी भूज मे तिरवाजी ॥ म्हा० ॥२॥ सुखि सिद्धि
 मनो कामवा घर घर मंगलवात् ॥ सुनिपां हरप
 बधायला म्हादि आका तीज स्वीहाएजी ॥ म्हा ॥
 ३॥ सहुठ कादो विपत बिडारो एको हमारी काज ।
 वानूराम कर जोड़ी कहता श्रुपमदेव महाराजजी
 ॥ म्हा० ॥४॥

१६३. सकुटुम्ब मुनि ।

तर्ज-भरवी ।

मुनि को कहिये गृहवासी, जांके भाव कुटुम्ब
 गुणरासी हो ॥टेर॥ धीरज तात क्षमा जस जननी
 दादी जान दयासी हो ॥ मु० ॥ १ ॥ चारित चाचो
 भाव भतीजो काका शुभ किरियासी हो ॥ मु० ॥२॥
 उद्यम दास विवेक सहोदर बुद्धि कलत्र विभासी
 हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ ज्ञान सुपुत्र परमारथ पोतो तत्व
 रुची वरमासी हो ॥ मु० ॥४॥ दान सुदादो मार्दव
 मामो पुत्र-वधू समतासी हो ॥ मु० ॥ ५ ॥ आगम
 सुसरो सासू सुमती भावना श्रेष्ठ भुवासी हो ॥मु०
 ॥६॥ संजम सालो वहिन चेतना संघ सगो सुवि-
 लासी हो ॥ मु० ॥ ७ ॥ अमर कुटुम्ब किशन दिग
 जिनके ते मुनि शिवपद पासी हो ॥ मु० ॥८॥



१६४ काया का पद ।

कर्म-कलुष नीचे एक नीचे ।

कामा पिण्ड कायो राज कायो मत भूत
इसी में राखो प्र का० ॥ देर ४ पकड़त बार न सागे
पल जिम भारक हसको माखो । मोडल असक
स्वपम कैमो कुल किम कर राख्यो सांखो ॥ का०
॥ १ ॥ मकड़ी आस दिवाख रेतकी जिम जल बीच
पतासो । बाता गृदि होय इव घट में यह पिण्ड
बढ़ो तमाखो ॥ का० ॥२॥ मत भूत अठ दुर्गेष की
क्यारी बुक दावानस आंखो । सुन्दर पदन सोहे
शशि ओपम मूठ कथा मत बांखो ॥ का० ॥ ३ ॥
इनमें एतन इसोद्विज उत्तम भी जिनपर मे आखो ।
सख चोरसी जीव मोन में नदवा यह मत नाखो ॥
कर० ॥४॥



१६५. परस्त्री विषे ।

नज-होली ।

हो मत ताको नार विरानी, यातो नरक तणी
 निसियाणी ॥ टेर ॥ परनारी छे काली नागण के
 विष बेल समानी । तेज पराक्रम पीलण काजे यह
 घर मरिड घाणी । गुण गण बालण छाणी ॥ हो०
 ॥ १ ॥ रावण राय त्रिखण्ड को नायक सीत हरी
 घर आणी । राम चड्या दल वादल लेकर मार्यो
 शारगपाणी ॥ कथा आगम में आणी ॥ हो० ॥ २ ॥
 पद्मोतर निज लाज गमाई कीचक नीच लिहाणी ।
 मणिरथ मूओ मेण रहा वस अपजस लह्यो अ-
 ज्ञानी ॥ जगमांही प्रकट कहाणी ॥ हो० ॥ ३ ॥ गौ
 ब्राह्मण ने बाल हत्या रिप नार हत्या बलि जाणी ।
 तिण थी पाप अधिक पिण लागे भाख्यो केवल
 नाणी ॥ के अनंत दुखारी खानी ॥ हो० ॥ ४ ॥ रतन
 जतन कर शील अराधो छांडो कुमत पुरानी ।
 मुगत महिलानी सहल अचल सुघ, मुगत रमण

मिसाखी ॥ यो वीर जिर्मइ बखानी ॥ हो० ॥ २ ॥
अठारह बियासी महामदिर में शिपल कथा सु
बखानी । शीख बिना सहू अम्म अकारण क्या
राजा क्या राखी ॥ शिपल अस उत्तम माखी ॥
हो० ॥ १६ ॥

१६६ चेतन और कर्म ।

एत क्या शं तथा बखानी ।

चेतन ! ओ तू ज्ञान अम्पासी । आप ही बाँचे
आपही छोड़े मिअमति शक्ति विकसी ॥ देर ॥ ओ
तू आप स्वभावे देखे आशा छोड़ उवासी । सुर
नर किअर मायक संपति ता तुअ घरखी हासी ॥
ये० ॥ १ ॥ मोह बोर अब गुण घर हूटे बैत आश
गलफानी । आशा छोड़ उवास रहे ओ सो उत्तम
सम्बानी ॥ अ० ॥ २ ॥ जोग हाई पर आश घरत ई
पा ही अग में हासी । तू जाने जे गुण को संखू
गुण ता जाब माखी ॥ ये० ॥ ३ ॥ पुअल ही तू आश घरत

सो तो सबही विनासी । तूं तो भिन्न रूप हैं उनतें
चिदानन्द अविनासी ॥ चे० ॥ ४ ॥ धन खरचे नर
बहुत गुमानें करघत लेवे कासी । तो भी दुख को
अन्त न आवे जो आशा नहिं घासी ॥ चे० ॥ ५ ॥
सुख जल विषम विषय मृग तृष्णा होत मूढ़मति
प्यासी । विभ्रम भूमि लई पर आशी तूं तो सहज
विलासी ॥ चे० ॥ ६ ॥ यांको पिता मोह दुख भ्राता
होत विषय रति मासी । भव सुत भरता अविरत
प्राणी मिथ्यामति ये सासी ॥चे०॥७॥ आशा छोड़
रहे जो जोगी सो होवे शिववासी । उनको सुजस
बसाने ज्ञाता अन्तर दृष्टि प्रकाशी ॥ चे० ॥ ८ ॥



१६७. आध्यात्मिक पद ।

आशावरी ।

कवे निर्ग्रथ स्वरूप धरूंगा, तप करके मुगत
धरूंगा ॥ टेर ॥ कव अहवास आश सब छांडी कव
वन में विचरूंगा । बाह्य अभ्यंतर त्याग परिग्रह

उभय लिम सुधरंगा ॥ क० ॥ १ ॥ होय एकाएकी
 परम उदासी पंचाचार करंगा । कब बिर ओम
 करी पचासम इन्द्रिय दमन करंगा ॥ क० ॥ २ ॥
 आत्म ध्यान सबी वल अपनो मोह बरिसु करंगा ।
 त्यागी उपाधि समाधि लगाकर परिपह सहस्र
 करंगा ॥ क० ॥ ३ ॥ कब गुण ठान भेदिये सब के
 कर्म कलक जरुगा । आत्मन् कन्ध विद्वान्
 साद्विष बिन सुमरे सुमरंगा ॥ क० ॥ ४ ॥ ऐसी
 लम्बि पादें जबे मैं आपदि आप करंगा । अमुक्ति
 सुत हीराचन्द कहत हैं बहुरी भां जय में परंगा
 ॥ क० ॥ ५ ॥



१४८. भजन उपदेशी ।

क्यों भूखो खेतन मान मोहनी पाश में ॥ देण
 निर्मल स्पष्टिक मन आत्म उज्ज्वल सहस्र स्व-
 भाव विकास में । निज स्वभाव से विध हो राखो
 माह विद्वान् में ॥ क्यों ॥ १ ॥ मोहमदिय बल
 आच्छादित हा कन्धो कुटुम्ब की भाश में । सृण

तृष्णा वश फिरे भटकता इत उत कर विश्वास में
 ॥ क्यों० ॥२॥ एकादश श्रेणी से चढ़ के पड़े प्रथम
 गुणरास में । तस्कर विकट मोह अटकावे जाता
 शिवपुर वास में ॥ क्यों० ॥ ३ ॥ सिंह सम्मुख हो
 मरे कुरंगी निज सुत रक्षा आश में । मरे मोह
 वश पड़े पतंगी जलता दीप उजास में ॥ क्यों० ॥४॥
 मरुदेवी अरु गौतम मुनिवर बसिया मोह निवास
 में । मोह तज केवल कमला पाई पहुंचे शिव कै-
 लास में ॥ क्यों० ॥५॥ सिंह कभी निज भक्षण तज
 के धरे राग नहिं वास में । त्यों छानी नहीं विषय
 भोगवे रमण करे गुण खास में ॥ क्यों० ॥६॥ अमर
 कमल के पुष्प न छेदे दुख लहें श्वासोश्वास में ।
 कठिन काष्ठ क्षण भर में कोरे हो कर मोह के दास
 में ॥ क्यों० ॥७॥ सुगम तोड़नी लोह सांकली दुष्कर
 मोह विनाश में । धन्य पुरुष जग वन्धन तज के
 रमते त्रिद्विलास में ॥ क्यों० ॥८॥ गुन्नीसे चौराणु
 संवत रही शांति चौमास में । नन्दसूरि मुनि 'सूर्य'
 कहे यों सिरे शहर मद्रास में ॥ क्यों० ॥९॥

१६६ ईश प्राप्ति ।

वन्दे-विष्णु वं श्री नमः ।

गौर कर देवनाथी, हि सुदा न मसजिद
मदिर में ॥ हेर ॥ मुसलमानों की मसजिद देवी
दिगुधों के मंदिर धारे । मुझा देव पुजाय देवे
बड़े २ तिसरन धारे ॥ गी० ॥ १ ॥ यकरा ईद मुसल
मानों की बहरा काटा जावे । येत धार में हो
नयपुर्गा मँसा तक कट जावे ॥ गी० ॥ २ ॥ जब
कोई काम अकरी जावे इसम सुदा की जावे ।
येईमान बिना स्वारथ के गगाजनी बहावे ॥ गी०
॥ ३ ॥ मझा मधुरा धीर मदीना काशी में फिर
आया । रामधम् कहे साक किया जब दिव में
ईश्वर पाया ॥ गी० ॥ ४ ॥

— ❦ —

१७० कृपेव पूजा निषेध ।

वन्दे-विष्णु वं श्री नमः ।

ध्यान पर देवनाथी नहीं थीकत मिळे पूजन
स ॥ हेर ॥ काम ताजिधे जिहा करिस्ते कितवै ह

पूजो प्यारी । चकरा मुर्गा घँट काटकर वनी फिरो
हत्यारी ॥ ध्या० ॥ १ ॥ चाहे पूजो काली माई या
पूजो चामुंडा । चाहे स्याने को बुलवाकर बांधो
गले में गंडा ॥ ध्या० ॥ २ ॥ बुला २ कर घर में
जोगिया जाहिर पीर मनालो । चाहे पोपजी को
बुलवाकर दुर्गा पाठ करालो ॥ ध्या० ॥ ३ ॥ पुत्र
मिले नां यों करने से सुनो सुशीलानारी । जो
भाग में लिखा होगा वही मिलेगा प्यारी ॥ ध्या०
॥ ४ ॥



१७१. दो संग में नहीं होता ।

छोटी लावणी ।

दो एक संग नहीं बने धर्म कृपयाई ।
नहीं रहे एक घरतन में दूध खटाई ॥ टेर ॥
मन सुत दारा में लगा मोक्ष कव होवे ।
जग कीनी शत्रुता भरी नींद कव सोवे ॥
तू जीतन चहें संग्राम मन में कदराई ॥ न० ॥ १॥

गणिका से पारी किया चहें घन रासन ।
 कर किया मद्य का पान चहें सत भासन ॥
 जब शिरपर चढ़ा हराम वहिन क्या भाई ॥ न० ॥ ७ ॥
 जोष हिंसक कहे कि मैं मी गुरु कहार्कै ।
 कहे सुगत कोर कि मैं मी ऊंच पद पाऊ ॥
 कि कर माया में मोह मिलन की नाही ॥ म० ॥ ११ ॥



१७२. धर्म पै इइता ।

४२-हर सागरने ।

धर्म न हारमारे धर्म के ऊपर तन मन घन
 सब बाण्हारे ॥ देर ॥ हरिअम्भु ने धर्म न हारा
 राज पाट तन सीमा साग । विपद समूह का
 उनके कोई पारमारे ॥ धर्म० ॥ १॥ तेग बहादुर ने
 मर सीमा धर्म का किन्तु त्याग न कीमा । मर-
 जाना मजूर धर्म नहीं हारमारे ॥ ध० ॥ २ ॥ धी
 गाबिह के राज दुकारे सुमे दुप भीती में पुकारे ।
 अपने पूषेओ की ओर जरा निहारमारे ॥ ध० ॥ ३ ॥

शीश हकीकत ने कटवाया निर्भय होकर धर्म
वचाया । पद्मावती के सतपर दृष्टि डारनारे ॥ ध०
॥ ४ ॥



१७३. धर्म पै ।

तर्ज—गजल, विना जिनराज के देखे ।

ज्ञान दुर्लभ है दुनियां में, धरम सब से अमो-
लक है । यही भगवान ने भाखा, धरम सब से
अमोलक है ॥ टेर ॥ रखो तन अपना धन देकर,
वचावो लाज तन देकर । धरम पर चारदो सबको
धरम० ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ धरम के सामने सब हेच,
राज और पाट दुनियां का । धरम ही सार है जग
में, धरम० ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ धरम के वासते सीता,
क्रिया प्रवेश अगनी में । राम तज राज धन पहुंचे,
धरम० ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ धरम के वासते धर जान भी,
जाए तो दे दीजे । समझ लीजे यकीं कीजे, धरम०
॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥



१७४ अनाथ ।

तक-पञ्च बन्धनों से ।

अनाथ वृक्ष को गहरे जगाधो स्वजाति बंधु
स्वदेश बंधु । द्वितीयी बनकर क्या दिखावो, स्व
जाति बंधु स्वदेश बंधु ॥४१॥ बिचारे माता पिता
से छोड़ा तुमी से माता हर्षोनि ओड़ा । तड़पते
मिश्रिम न अथ बन्धनों स्वजाति ॥ अ० ॥ १ ॥
एक पापी पैद के ही जातिर, बिचरिी होकर के
फिरते घर घर । विदेशियों को न अथ सुठावो स्व-
जाति ॥ अ० ॥ २ ॥ तुमारे घर में तो फरा मज्जमल
न एकको कामा न यत्न कम्बल । सुखावो धम को
एन्दे बन्धनों स्वजाति ॥ अ० ॥ ३ ॥ अनाथ होवे
सनाथ बन्धे, बनेंगे भारत के ताल सन्धे ।
अनाथ आश्रम मी आप बन्धनों स्वजाति ॥ अ०
॥ ४ ॥



१७५. व्याख्यान के प्रारंभ की स्तुति ।

वीर हेमाचल से निकसी, गुरु गौतम के
 श्रुत्कुंड ढरी है । मोह महाचल से द चली, जग की
 नड़ता सब दूर करी है ॥ ज्ञान पयोदधि मांहरली
 बहुभंग तरंगन से उछरी है । तासु विशारद गंग-
 नदी, प्रथमें अञ्जली निज शीश धरी है ॥१॥ ज्ञान-
 सु नीर भरी सरिता, सुरघेनु प्रमोद ज्यों क्षीर
 निधानी । कर्म की व्याधिहरंत सदा, अङ्गमेल-
 हरत शिवाकर मानी ॥ जैन सिद्धांत की ज्योति-
 स्क्षरी, सुरवृक्ष समान महासुखदानी । लोक अलोक
 प्रकाश भये, मुनिराज घखानत है जिनवानी ॥२॥
 शोमित देवविषे मघवा, उडुवृन्द विषे शशि मंगल
 कारी । भूप समूह विषे भरतेश्वर, केशव योघ-
 विषे मनुहारी ॥ नागन में धरणेंद्र बड़ो, चमरेन्द्र
 असुरन में अधिकारी । यूं जिन शासन संघ विषे
 मुनिराज दीपे श्रुतज्ञान भंडारी ॥३॥



१७६ ममहर हृद ।

जैसे करी केतकी, [कपेट, एक कपो ज्ञाप,
 माकडूय गापडूय, अन्तर प्रवेरो है । पीपीहोत
 पीपीपह, होस करे कञ्ज की, कहां अगवाही
 कहां कोयल की डेर है । कहां मालु तेज मयो,
 आयियो बिचारो कहां पूनम को उअवाहा कहां,
 अभावम अन्वेरो है । पच खोड़ पारखी, विहाल
 देह मिअर कट, जैनवैन औरवैन, अन्तर प्रवेरो
 है ॥१॥ बीतपग बाबी सांभी, मुक्ति की मिठानी
 महा, मुकुठ की बाबी बाबी, आप मुख बजाकी
 है । इसको अराच के तिरिया है अमल कीच
 सोही अहाअ आच अया मन बाधी है ॥ अया
 है साट पाट, अया ही से खेचोपाट, अया बिल
 बीच अयाट, मिअरकन मानी है । बाबी तो प्रवेरी
 पच बीतपग हुरुव नहीं उनके सिवाप और हो-
 पसी कइानी है ॥ २ ॥

गाय-मिअरी मुयापी पारवयापी परंपर-
 गयापी । होबभामुपयचनां नमो नया सम्बन्धि-

द्वारां ॥१॥ जो देवाण्वि देवो, जं देवा पंजली नमं-
सन्ति । तं देवा देव महीयं सिरसा वंदे महावीरं
॥ २ ॥ एगोवि नमोकारो, जिणवर वस्सस वद्ध
माणस । संसार सागराउ तरइ नरं व नारीवा, ॥३॥

१७७. व्याख्यान समाप्ति की स्तुति ।

शासन मंडन स्वामजी, नाम सदा जयकार ।
त्रिलोकन में तिलक सम, भज अश्लानन्द कुंधार ।
मुक्तिवर वर्धमान की जय ॥१॥ जिनवर नाम से
होइये, पाप हवन सब क्षय । मोक्षधाम पावे तुरत
मिट जाय सब मन भय ॥ कहोजी श्री जैन धर्म
की जय ।२॥

दोहा-दया सुखांनी वेलड़ी, दया सुखांनी खान ।
अनंताजीव मुगते गया, दया तणा फल जाण ॥१॥
हिंसा दुःखनी वेलड़ी, हिंसा दुःखनी खान । अनंता-
जीव नरके गया, हिंसा तणा फल जाण ॥२॥ जेती
सुणो ते ती करो, तो पहुंचो निर्वाण । काइयक हिरदे

राखओ तो सुखिपारो परिमाणु ॥३॥ जिन माण
 पारी घणो, सुरम जारा मेह । सठा होय ने सरह
 ओ मन में आणु अमेह ॥४॥ खरो मारण बीतराण
 को, कृद नहीं लयसेण । आफी मयमियति एक
 गई तिमको पद उपसेण ॥५॥ जिन धर्म पाया पिडे
 श्रीर न आये दाय । अमृत भोजन छोड़ने कुक-
 सई कुठ जाय ॥६॥ करो दृष्टाती धर्म की, दीये
 अधिकी ओत । कृष्ण महावली, जालओ बाभ्यो
 तीर्थदूर गात ॥ ७ ॥ खेतोरे मधि प्राणिया ए
 संसार असार । स्थिण्या कोई दीसे नहीं धर
 दीवन परिचार ॥ ८ ॥ धर्म करो तुम्हें प्राणिया ।
 धर्म पकी सुख होय धर्म करता जीय ने दुखिय
 न दीठा कोय ॥ ९ ॥ रत्न पड़ा है बजार में, रहा
 गरद खिपटाय । मूरख आये काँकरो अतुरं तियो
 उठाय ॥१०॥ दीछ न कीये धर्मनी तप अप कीये
 नूट । जैसी शीशी काच की जाय पल्लव में फूट
 ॥११॥ बुझमी आरो पांचमो निधरु राखओ मन ।
 थोड़ा में नफो घणो खेम कुपडा माँही रतन ॥१२॥

साधु चन्दन वावना, शीतल जांका अङ्ग । लहर
 उतारे मिथ्यात की दे दे ज्ञान का रंग ॥१३॥ साधु
 बड़े परमारश्री, मोटा जिनका मन । भर भर मुष्टी
 देत है, धर्म रूपियो घन ॥ १४ ॥ दया रण सिंगो
 याजियो, चेतो चेतो नरनार । मोक्ष पुरी में चालणो
 बेगा होजो तयार ॥१५॥ इति

१७८. षट्द्रव्य ।

षट्द्रव्य ज्यामें कहा यों मित्र मित्र, आगम
 सुणत चस्त्राण । पंचास्तिकाया नव पदारथ, पांच
 भाख्या ग्यान ॥ चारित्र तेरा क्या हो जिनवर,
 ज्ञान दर्शन परधान । जो शास्त्र नित सुणो भवि-
 यण, आण सुध मन ध्यान ॥१॥ चोवीश तीर्थङ्कर
 लोक मांही, तिरण तारण जहाज । नव वासु नव
 प्रतिधासु देवा, बारे चक्रवर्ती जाण ॥ बलदेव नव
 खव हुवा त्रेसठ, घणा गुणारी खान जो शास्त्र
 नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान ॥ २ ॥

चार दैत्या हीनी हो त्रिमंथर, कियो पर उपकार ।
पांच असुरजठ चार शिष्टा तीन गुरुमठ धार ।
पांच मंथर त्रिमेश भाख्या दयाधर्म परधान ओ
शास्त्र मित सुखो मविपक्ष, चाक्ष सुख मम ध्यान
॥ ३ ॥ भीर कहां जग कबजो बर्बन तीन लोक
प्रमास सुश्रुत पाप पलाय जाये पापपक्ष निर्दोष ।
देव विमाषिक मांही पक्षी करी पंख परधान ।
ओ शास्त्र मित सुखो मविपक्ष चाक्ष सुख मम
ध्यान ॥ ४ ॥

कलश-विघन इच्छ मगल करस्य धन भी जैन
परम । त्रिम समस्या पातिक मूरे दूरे धाठों कर्म ॥
धन साधु धन साधनी धन भी जैन परम । त्रिम
समस्या पातिक उखे दूरे धाठों कर्म ॥ कहोजी
भी जैन धन की जयः बोहोजी भी जैन धर्म की
जयः जय जय मन्दा जय जय महा जय विजय ।
जय विजय ! ! जय विजय ! ! !



१७६. चार शरण ।

अरिहंत सरणं पव्वज्जामि । सिद्धा सरणं
पव्वज्जामि ॥ साहू सरणं पव्वज्जामि । केवली
पणत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि ॥

१ पहिला शरणा श्रीअरिहंत भगवंत का वे
अरिहंत भगवंत महाराज अठारह दोष रहित,
चारहगुण सहित, चोतीस अतिशय पँतीस वाणी
के गुणकर विराजमान, देवेन्द्र नरेन्द्र के वंदनीय
पूज्यनीय, ऐसे अरिहंत भगवंत का शरणा होना ।

२ दूसरा शरणा श्रीसिद्ध भगवंतजी महाराज
का, वे सिद्ध भगवंतजी महाराज-आठ कर्म रहित,
आठ गुण सहित अजर, अमर, अविकार, निरंजन
निराकार, उर्ध्वलोक के चरिमांत मोक्षस्थान में
विराजमान ऐसे सिद्ध भगवंत का शरणा होना ।

३ तीसरा शरणा साधुजी महाराज का, वे
साधुजी महाराज पंच महाव्रत पाले, पांच इंद्रिय
जीते, चार कपाय टाले, पांच समिति समिता,

तीनगुणि गुता सतरे प्रकारे संयम पाठे बारा प्रकारे तप करे, क्षयामने दोष रहित आहार, ब्रह्म पात्र व स्थान भोगने, शान्त दांत आदि अनेक गुण सहित ऐसे साधुजी महापन्न का शरण होना ।

४ लीला शरणा श्रीशिवेश्वर भगवान् प्रथित इयाधर्म का, धर्मके दो मेव १ अत धर्म सो ब्राह्म शोरी श्रीशिव प्रथित पाथी (शास्त्र) और २ ब्राह्म धर्म के दो मेव १ अमगारी धर्म सो साधुजी का और २ सागारी धर्म सो भानक का यह धर्म अतीरिक्त मानसिक पुष्क का मल्ल कर मोक्ष के अमल अक्षय सुख का दाता है ऐसे धर्म का शरणा सदा काज होना ।

॥ शोहा ॥ ये बारा शरणा पुष्कहरण, और न बृहदा दोष ॥ जो मध्य प्राणी आदरे तो अक्षय अविच्छेद एव होय ॥ १ ॥

१८०. तीन मनोरथ

दोहा—आरंभ परिग्रह तजकरी, पंच महाव्रत
धार ॥ अन्त अवसर आलोचना । करुं संथारो
सार ॥

पहिला मनोरथ श्रावकजी ऐसा चिन्तवे कि-
छः काया का आरम्भ और नवप्रकार का वाह्य
तथा चौदह प्रकार का आभ्यन्तर परिग्रह, यह
ससार में रूलाने वाला है । इसका त्याग करूंगा
वह दिन मेरा धन्य होगा ।

२ दूसरा मनोरथ श्रावकजी ऐसा चिन्तवे-कि
द्रव्य से मस्तक और भाव से मन को मुंडाकर
दश प्रकार के साधु धर्म, पंच महाव्रत पांच स-
मिति, तीन गुप्ति का धारक साधु बनूंगा वह दिन
मेरा धन्य होगा ।

३ तीसरा मनोरथ श्रावकजी ऐसा चिन्तवे
कि-आलोचना निन्दना कर निशल्य हो अठारा
पाप और चारों आहार का त्याग कर संथारा

पूर्वक समाधि मरण करणा बड दिम घम्व
दोगा ।

दोटा सीम मनोरथ पै कहे जो प्याबे नित्य
मम । शक्तिभार परते सहु पाबे शिप सुख घम
॥ १ ॥

अथ

१८१ पौवइ-नियम

याथा—सखित इव विगई । पाइयी संबोत
बराय कुसुमेसु ॥ पाइसु सयसु विजेबये । बम
दिसि न्दाब मतेसु ॥ १ ॥

१ सखित—जीव सखित बस्तु जैसे कच्चापाखी
कच्चीहरी फुल फल माखी फली [लीला] तथा
बटखी भोजनपानी आदि बनाए को हो चकी
नहीं हुई हो तथा नमक चर्खंड बराम विस्ता
येवा इत्यादि इनके बम तथा बसब का परिमाण
करे ।

२ द्रव्य—द्रव्य, जितने नाम तथा जितने स्वाद पलट्टे उतने ही अलग २ द्रव्य जानना, जैसे—रोटी, पुड़ी कड़ाई की पुड़ी चाटी, खांखरे ये सब अलग २ द्रव्य जानना, ऐसे ही सब समझना इनकी गिनती तथा वजनका परिमाण करे ।

३ विगई—विकारिक वस्तु, जैसे—घी, तेल, दूध, दही, शक्कर, गुड़ तथा तली हुई वस्तु, इनकी गिनती व वजन का परिमाण करे ।

४ बाहणी—पांच में पहनने की, जैसे पगरखी, बूट, खड़ाऊ इत्यादि के नगका परिमाण करे ।

५ तम्बोल—मुखवास, जैसे पान, सुपारी, लवंग, इलायची, चूरण, खटाई, गोली आदि के नगका, वजनका परिमाण करे ।

६ वत्थ—वस्त्र, सूत के, ऊन के, रेशम के, सण के, पहरने ओढ़नेके नगका परिमाण करे ।

इसमें—सूपनेकी वस्तु जैसे सूधने की म
म्हाल (तपकीर-छीकणी) अथवा फूल इत्यादि
के मज का परिमाण करे ।

८ घाईख—सपारी, बार तरु की १ बरता
हाथी, घोड़े ऊंट आदि २ फिरता गाड़ी मोटर
रेल तीरी, साईकल आदि ३ तिरता-अहाल
बाट मोच डोंग आदि और ४ उकता-गुम्बारा
बिमान आदि इनके मज का परिमाण करे ।

९ सवण—शुष्क सोने के त्रिये पसंग बार
माया कुसी, घारी, तकिया, सतरंजी उम,
अटाई डेबल आदि के मज का परिमाण करे ।

१० बिलेपन—शुकीर को सपाने की वस्तु
जैसे-सेल पीठी अदम केसर कांच कांगरी
तथा हाथ सोने की पाच वूल आदि के मज का
परिमाण करे ।

११ बम—अधक रं दिन को मीथुन सेवन का

त्याग करे, रात की मर्यादा करे । वक्त्र का तथा टाहम का परिमाण करे ।

१२ दिसि-दिशा गमन करने का, जैसे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, ऊपर, पहाड़ादि पर, नीचे, भोंहरादि में जाने के कोस की मर्यादा करे ।

१३ न्हाण-स्नान, गरदन ऊपर शिर, कोहनी नीचे हाथ, घुटने नीचे पांच धोवे सो छोटा स्नान, शरीर पखाले सो बड़ा स्नान इनकी गिनती का परिमाण करे ।

१४ भत्त-भोजन, खाने में जितनी वस्तु श्रावे उन सभी के वजनका समुचय परिमाण करे, पीने में पानी श्रावे उसके वजन का परिमाण करे ।

पृथ्वीकाया-मिट्टी, नमक, खड़ी, पांडु, हिरमची, काली, पीली मिट्टी, वापरने में श्रावे जिसकी जाति तथा वजन का परिमाण करे ।

१६ मपकाया—पानी, नदी तास्वब कुष्मा परेखा, धका भादि के नग का परिमाण करे तथा बापरने के पानी के बजन का परिमाण करे ।

१७ टैऊकाय—अग्नि, चूल्हा सिगडी मही दीवा बीडी चिहम इस्वादि के नग का परिमाण करे ।

१८ वाऊकाया—हवा, पंखा बीजना, फूकपी मृगडी मूले वाजिन इस्वादि के नम का परिमाण करे ।

१९ वनस्पतिकया—दूरी किलोवरी बापरने के शिबे सामा परे असका, तथा फल फूल माजी मीगे घाम के मारे भादि वजन का परिमाण करे ।

२० असकाया—दिलते बसते जीव जानकर रेखाकर संकल्पकर निरपघवी जीव को मारने के स्वाग करे ।

२१ मस्सी—हथियार, तलवार, बंदूक बरछी
छुरी, कटार, चाकू, बक्की, ऊंखल मूसल, सरोता,
इमामदस्ता कुदाली, पावड़ा, पहार, सुई, कतरणी
इत्यादि के नग का परिमाण करे ।

२२ मस्सी—श्याही तथा व्यापारः—
कपड़ा, किराना, सराफी, मणियारी का तथा
दावात, कलम, कागज का परिमाण करे ।

२३ कस्सी—कृषि, खेत, माला, घाडी का,
तथा जमीन खोदने का घर कूआ आदि कराने
का तथा आसामी का परिमाण करे ।

यों हमेशा २३ नियम धारण करने से, राई
जितना पाप तो खुला रह जाता है और मेरु जि-
तना पाप रुक जाता है ।



१६ अपघाता—पानी लड़ी, तालाब, कुआ
परोडा, घड़ा आदि के नग का परिमाण करे तथा
बापरमे के पानी के बजन का परिमाण करे ।

१७ तेजकाव—अग्नि बूझा खियडी मही
रीषा, बीडी विलम इत्यादि के नग का परिमाण
करे ।

१८ बाउकपा—दूबा पला बीयना फुकली
मृगली भूते बाकिर इत्यादि के नग का परि-
माण करे ।

१९ बनसविकाषा—दूरी खिलोठरी बापरमे के
किये लाना पडे बसका तथा फल फूल मायी
सीमे, घास के मारे आदि बजन का परिमाण
करे ।

२० असकाषा—दिकते बसते जीव जानकर
बेसकर संकश्यकर निरपराधी जीव को मारने
के त्याग करे ।

- तने ? उ०-बारहसो । प्र०-सो वर्षके पक्ष कितने ?
उ०-चोबीस सो । २४०० प्र०-सो वर्ष के अठ-
षाडिये कितने ? उ०-अडतालीस सो [४८००]
प्र०-सो वर्षके दिन कितने ? उ०-छत्तीस हजार ।
प्र०-सो वर्ष के पहर कितने ?- उ०-२८८००० ।
प्र०-सो वर्ष के मुहूर्त कितने ? उ०-१०८०००० ।
प्र०-सो वर्ष की घडियें कितनी उ०-२१ लाख
६० हजार [कच्ची दो घड़ी ४८ मिनटका मुहूर्त]
प्र०-सो वर्ष के श्वाशोश्वास कितने ? उ०-४ अडब
७ करोड़ ४८ लाख ४० हजार । प्र०-एक वर्ष के
श्वाशोश्वास कितने ? उ०-४ कोड़ ७ लाख ४८
हजार ४०० सो । प्र०-एक महिने के श्वाशोश्वास
कितने ? उ०-३३ लाख ६५ हजार ७०० सो ।
प्र०-एक दिन के श्वाशोश्वास कितने ? ०-१
लाख १३ हजार १ सो ६० । एक पहर के श्वाशो-
श्वास कितने ? उ०-१४ हजार १ सो पोणे ४८॥
प्र०-एक घड़ी के श्वाशोश्वास कितने ? उ०-१
हजार ८ सो ८६ ॥ ।

१८२. घर्मफल प्ररनोचरी

राजप्रद में भगवान् महावीर अउर हमार
 थी गीतमादि साधु और पत्नीस हमार। श्रीबंदन
 बाला मादि साधुके परिवार से पधारे। भेदिह
 राजा बेजपादानी और अमयकुँवर मादि। सबेक
 राजपुत्र भगवान् को नमस्कार करे गए। दोहा
 बारह आठिफे परपदा विधापरकी ओर गीतम
 स्वामी पूरिषा प्रभु से कर ओर १ सुनोबाय
 त्रिभुवनके, पूरुं वारह पोल। त्रिभुवन उत्तर की
 त्रिपे संजारीजे लोल ॥ २ ॥

प्रभ—सो बय के संवत्सर कितने उत्तर—सो।
 प्र०—सो वर्ष के पुग कितने। उ०—बीस (३
 वर्षका एक पुग) प्र०—सो वर्ष की अयन कितनी।
 उ०—दोषो। [एक वर्ष के दो अयन होते हैं,
 वसिष्ठायन और अश्विनयन] प्र०—सो वर्ष की
 अह्न कितनी। उ०—सुदसो। [एक वर्ष में अह्न ३
 होती हैं १ वसंत, २ ग्रीष्म, ३ वर्षा ४ अश्विन ५
 हेमंत और ६ शिशिर] प्र०—सो वर्ष के मास कि

कर्म का क्षय हो। तेले [अष्टम भक्त] के तप का क्या फल ? उ०—लाख क्रोड़ वर्ष के अशुभ कर्म का क्षय हो। चोला [दशम भक्त] के तप का क्या फल ? उ०—दशलाख क्रोड़ वर्ष के अशुभ कर्म का क्षय हो। पचोला [बारह भक्त] के तप का क्या फल ? उ०—क्रोड़ा-क्रोड़ वर्ष के अशुभ कर्म क्षय हो। ऐसे सर्व तपका फल दशगुना जानना।

एक प्रतिपूर्ण आठ प्रहरका पौषध करे उसका क्या फल ? उ०—सत्ताइस सो तितंतर क्रोड़ सितंतर लाख ११ हजार ७ सो ७७ पल्योपम और एक पल्योपम के नवभाग उस में से सात भाग जितना शुभदेवायु बंध करे। एक पहर की सामायिक करे उसका क्या फल ? उ०—तीन सो ४७ क्रोड़ २२ लाख २२ हजार दोसे २२ पल, एक पल्य के ६ भाग जितना देवायु बांधे। एक मुहूर्त ४८ मिनट की सामायिक का क्या फल ? उ०—६२ क्रोड़ ५६ लाख २५ हजार ६ सो २५ पल्योपम, एक पलका चौथा भाग देवायुका बंध करे एक घड़ी

कोई सम्यक् दृष्टि मीकारसी तप करे उसका
 क्या फल ? ३०-सौ १०० वर्ष की आयुम नर्कायु
 व्यक्त देखतायुका वष करे । प्र०-एक प्रहर है
 तपका क्या फल । ४०-दस हजार वर्ष के आयुम
 कर्म का वष होवे । देवपहरसी तपका क्या फल ?
 ५०-दश हजार वर्ष के आयुम कर्म का वष होवे ।
 दो पाहरमी तपका क्या फल ? ६०-एक लाख
 वर्ष के आयुम कर्म का वष हो । एकास्रष तप का
 क्या फल ? ७०-दश लाख वर्ष के आयुम कर्म का
 हो । एक ठाना [एक बह्म आहार पानी खाना पीना]
 तपका क्या फल ? ८०-एक कोड़ वर्ष के आयुम
 कर्म का वष हो । एक दात [एक बह्म ही पाचमे
 आहार लेवे] तप का क्या फल ? ९०-दश कोड़
 वर्ष के आयुम कर्म का वष हो । आर्यविल तप का
 क्या फल ? १०-सोकोड़ वर्ष के आयुम कर्म का वष
 हो । उपषास का क्या फल ? ११-दश हजार कोड़ वर्ष
 के आयुम कर्म का वष हो । बेका [कर्मका] तपका
 क्या फल ? १२-दश हजार कोड़ वर्ष के आयुम

का साठी वारहसो उपवास का फल होय, यों हर एक तपकी पहरसी करने से दूणा फल होय ।

वारवां चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त का सातसो वर्ष का आयुष्य था, सातसो वर्ष के श्वाशोश्वास कितने ! ३०-२८ सो ५२ कोड ३८ लाख ८० हजार । ब्रह्मदत्त मरके सातवीं नरक में तेतीस सागर की स्थिति में गया, एक श्वाशोश्वास पे कितने पल्य का दुख पाया, ३०-११ लाख ५६ हजार ६ सो पचीस, एक पल के तीसरे भाग अधिक नर्क दुख पाया ।

धन्नामुनि नव महिने संजम पाला, नव महिने के श्वाशोश्वास कितने, ३०-३ कोड ५ लाख ६१ हजार ७०० सो ॥ धन्ना अणगार सर्वार्थ सिद्ध में ३३ सागर का आयुष्य पाया तो एक श्वास पे कितना सुख पाये । ३०-१ सो ७ कोड ६२ लाख ६६ हजार ६ से ६८ पल एक पल के छठे भाग कुछ कम स्वर्ग सुख पाए ।



का संपर्क करे उसका क्या फल ? उ०-४६ कोड़
 २६ लाख ६२ हजार ६ सौ ६२४ पक्ष्य वैवायु का
 बंध होवे । शुद्ध मनसे नयकार मंत्र की एक माता
 यिनमे का क्या फल ? उ०-१६ लाख ६६ हजार ३
 से ६७ पक्ष्य शुभवैवायुका बंध करे । अशुद्धी
 एक पक्ष शुद्ध मन सेपडे उसका क्या फल ? उ०-
 अघम्य ६६ हजार उत्कृष्ट १०० सागर के पाप दूर
 होवे ।

बेला तेला बोला भीर पचोला करे बनें
 कितने उपवास का फल होवे । उ०-बेले का १,
 तेले का २१, बोले का १२१, पचोले का १२१,
 ऐसे एकेक उपवास बढ़ाने से उसका फल पांच
 गुना होय जैसे १ उपवास का फल ३१२१
 समझना ।

उपवास बेला तेला बोला भीर पचोला इन
 की पहरसी करे तो कितना फल हो ? उ०-उपवास
 का हो उपवास बेले का ६४ उपवास, तेले का
 १० उपवास बीले का २१० उपवास भीर पचोले

का साठी वारहसो उपवास का फल होय, यों हर एक तपकी पहरसी करने से दूणा फल होय ।

वारवां चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त का सातसो वर्ष का आयुष्य था, सातसो वर्ष के श्वाशोश्वास कितने ! ३०-२८ सो ५२ कोड ३८ लाख ८० हजार । ब्रह्मदत्त मरके सातवीं नरक में तेतीस सागर की स्थिति में गया, एक श्वाशोश्वास पे कितने पल्य का दुख पाया, ३०-११ लाख ५६ हजार ६ सो पचीस, एक पल के तीसरे भाग अधिक नर्क दुख पाया ।

धन्नामुनि नव महिने संजम पाला, नव महिने के श्वाशोश्वास कितने, ३०-३ कोड ५ लाख ६१ हजार ७०० सो ॥ धन्ना अणुगार सर्वार्थ सिद्ध में ३३ सागर का आयुष्य पाया तो एक श्वास पे कितना सुख पाये । ३०-१'सो ७ कोड ६२ लाख ६६ हजार ६ से ६८ पल एक पल के छठे भाग कुछ कम स्वर्ग सुख पाए ।



श्री पंच परमेष्ठी क १०८ गुण

श्री अरिहंत प्रभु के १२ गुण ॥ कवित्त ॥

ऐशना अशोक तल्ल पक्ष बर्ष 'पुष्पवृषी' नाम
विज्ञाय 'बाणी' अोजम विस्तारी है । 'सिद्धासत्र'
रत्नमय पूठे 'मामं'रस छोड़े 'कृष्ण' तीन कृष्णपर
'मेरी' शब्द मारी है ॥ 'सो' 'सो' कोप इच्छा नाहीं
'लोका'नाक जामे 'सब' समझे 'सुभाषा' सेवें
'सुर' नर मारी है । कहत यों 'सर्व'भूमि' बारे
गुणमारी गुणी, ऐसे अरिहंत ताको बंदना हमारी
है ॥ १ ॥

श्री सिद्ध प्रभु क ८ गुण ॥ कवित्त ॥

ज्ञान वर्णमाबरणी शब्द ज्ञान वर्ण इच्छो
विपशय सुख पाया 'वेद'नी विदारी है । 'सायिक'
हो 'मोह' तज अक्षय हो 'धायु'तज, 'नाम'कर्म
सय से अमूर्ति गुणमारी है ॥ 'मोह'कर्म कथ इच्छा
गुण हो अगुण कथु 'अमृत'पय सय मे अमृत बर

धारी है । कहत यों “सूर्य मुनि” आठ गुणधारी
गुणी, ऐसे सिद्ध प्रभु ताको वंदना हमारी है ॥२॥
श्री आचार्यजी के ३६ गुण ॥ कवित्त ॥

‘पञ्च इन्द्रजीते धरे ‘नवविध ब्रह्मचर्य ‘क्रोध
मान माया लोभ चारों परिहारी हैं । दर्शन चारित्र
ज्ञान तप वीर्य ‘पञ्चाचार ‘पञ्चमहाव्रत पाले ‘तीन
गुप्ति धारी है ॥ ‘इरिया भाषा एपणा आदानादि
तिक्खेवणा, उच्चार पासादि पंच समिति सुप्यारी
है । कहयों ‘सूर्यमुनि’ धारक छत्तीस गुणी, ऐसे
आचारज ताकां वन्दना हमारी है ॥ ३ ॥

श्री उपाध्यायजी के २५ गुण ॥ कवित्त ॥

‘ग्यारह सु अङ्गज्ञान उपाग ‘‘धारे घखान,
‘चरण ‘करण सित्तरी के गुणधारी है । चारमूल
चारछेद आवश्यक सूत्र और, पठित चवदे पूर्व
आगम आगारी है ॥ उपदेश सुधावाणी ढिगता
को थिर करें, ज्ञान दृगदाता भवि जीव हितकारी
है । कहत यों “सूर्य मुनि” धारक पच्चीस गुणी,
ऐसे उपाध्याय ताको वन्दना हमारी है ॥ ४ ॥

श्री साधुजी के २७ गुण ॥ कवित्त ॥

पाले पञ्च 'महामत' कृपाय विचारे बार
पंच 'इन्द्रि' पीते तिहुं योग समचारी है । कर्ष
जोग भाव सबे समा सु-वैराग्यवंत कर्मज
चारिण नाम संपन्न मंडारी है ॥ देवमी अद्वियासै
सुमरसास्त कए खई इया के आगार दोष भिष्ठा
के निचारी है । कहत यों 'सूर्य मुनि' सप्ताबीस
पारी गुणी ऐसे मुनिराज ताको बन्दना हमारी
है ॥ २४ ॥

श्री गुरुदेव के गुण ॥ कवित्त ॥

धर्म उपदेश दाता मोक्ष रूप मार्ग दाता सम
फित रत्नदाता शास्त्र के दातारी है । ज्ञान उप
नेत्र दाता माया के मुकुट सम दिया के है
दार जप तप के धारारी है ॥ काव के कुंडल
सम रत्न के मंजूर सम धर्म जहाँ विचरे कि
सेयें बरनारी है । कहत है 'सूर्य मुनि' गुरु यों
धर्मक धारी ऐसे गुरुराज ताको बन्दना हमारी है
॥ २५ ॥

नित्यनन्द-स्मरणा का शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२२	१२	घं	धिं
२२	१३	युक्तां	भक्त्या
१३	७	शान्ति	शांति
२३	१०	चन्द्रं	चन्द्र
२४	१०	मोक्षं	मोक्ष
२७	१३	मृतादि	भृतादि
४१	७	धर्म	धर्मः
५०	१५	हरिष्यति	हरिष्यति
६१	७	ससार	संसार
६३	१२	सुधा	शुद्ध
६३	१५	चम्पक ली	चम्पकली

श्री साधुजी के २७ गुण ॥ कवित्त ॥

पासे पञ्च 'महाप्रत' कथाय सिवारे चार
पंच 'इन्द्रि' धीते तिहुं योग समघारी है। कर्त
जोग भाव लखे कमा सु-वैराग्यवंत 'वर्यम'
चारित्र हाम संपन्न मंडारी है ॥ वैदमी अद्वियासे
सुमरसाम्भ कर लखे कया के आगार दोष मिटा
के निबारी है। कहत यों 'वर्य मुनि' सत्ताबीस
घारी गुणी ऐसे मुनिराज ताको पवना हमारी
है ॥ २० ॥

श्री गुरुदेष के गुण ॥ कवित्त ॥

धर्म उपदेश दाता मोक्ष रूप मार्ग दाता सम
कित रत्नदाता शास्त्र के दातारी है। काम रूप
मैत्र दाता माया के मुकुट सम, दिया के हैं
हार जप तप के आगारी है ॥ काम के कुंडल
सम रत्न के मंजुष सम धन्य जहां बिचरे कि
सेधे मरनारी है। कहत है 'वर्य मुनि' गुण यों
धमेक घारी ऐसे गुरुराज ताको पवना हमारी है
॥ २१ ॥

(५)

पृष्ठ	पंक्ति	अष्टादि	सुद्धि
६४	१	सुख	सुख
६६	४	न्यूना द्वारे	न्यूनाद्वारे
६६	१	तरवारी	तरवारी
७१	४	विट	विट
७१	१०	तवामिष	तवामिष
७१	११	ओटिंग	ओटिंगज
७२	४	दुर्जन	दुर्जनमो
७४	७	वेदि	वेदि
७६	२	मिषारक	मिषारक
८६	१	ममी	ममि
८७	२	विस्मय	विस्मय
८७	१३	रषायो	रषायो
८८	१३	अघ	अघ
९२	१६	आवर्ता	आवर्ता
९२	१७	निरमल	निरमली
१०३	६	अलवेस्तार	अलवेम्भर
१०३	१४	मदरेषी स्तवन	मार्सदा पाडा स्तवन

(ग)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१०६	१३	साधुजी	साधुजी
११३	१४	हात	हान
११४	५	घर	सुलसां घर
११४	७	नेमिनी	नेमिना
११४	६	एक संधारे	एक मास संधारे
११४	१७	मेठी	मेटी
११६	१७	तजी	गया तजी
११६	११	सर्वार्थ सिद्ध पहुंच्या	पहुंच्या सर्वार्थसिद्ध
११६	११	वीरप	वीरपे;
११७	१०	टालेश	टाले
११६	३	अढाई	अढाई
११६	७	सतियों ले	सतियों से
१२०	६	वडा	०
१२३	१३	कामथी	कामजी
१२४	६	भरण्रां	भरण्ण
१२६	१४	इषवीस	इकवीस

(घ)

पृष्ठ	पङ्क्ति	असुद्धि	सुद्धि
१५७	७	गिष्ठाप	गिष्ठाप
१३४	१८	मठ	मठ २
१३५	६	असवापी	असवापी असवापी
१३६	१३	आशो	आशे
१३७	५	घटसु	घटसु
१४३	१२	अज्ञाना	अज्ञान
१४५	२	पेसमठा	तुमे समठा
१४५	१६	हमोरा	हमारो
१४६	१४	आठम	मित्र पर आठम
१५२	४	मठज्ञान	मठका ज्ञान
१५२	६	ठाट	ठाट शुद्ध
१५२	७	कर	करे
१५२	६	व्या	धर्म व्या
१५३	१३	देखलो ऐसी	देखलो है अमादि
			विभ्य एषता म्याप
			पूर्वक देखलो ऐसी
१५५	४	करती	करती

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१५६	७	पाछा	फिर कर पाछा
१६०	१	पार	गुरुजी पार
१६०	११	आत्मा	आत्म
१६४	६	लुललुल	लुललुल चरणे
१६४	१२	तेरी	तरी
१६५	४	पाप तोड़िये अरी,	पाप तो डरीऽ
१७१	११	पान	पान से
१७५	१०	पाप	०
१८६	१३	मिटाओ	निवारो
१९१	११	सूरि	सुरि
१९७	४	अराधे	अराधे
१९८	४	संदम	संजम
१९९	६	उदर में	उदर में आया
२००	११	कावा	काया
२०२	४	जयजय	जप जय
२०२	४	घरने	चरते

(८)

पृष्ठ	पंक्ति	अष्टुष्टि	शुद्धि
१२७	७	मिषाण	मिषोण
१३४	१८	मद	मर २
१३५	६	असवारी	इसरी असवारी
१३६	१३	आषो	आषे
१३७	५	घटसु	घटसु
१४३	१२	अजासा	अजास
१४५	२	पैसमता	तुमे समता
१४७	१६	हमारो	हमारो
१४८	१४	आवम	निज पर आवम
१५२	४	मवखान	मवका आम
१५२	६	ठाठ	ठाठ दुके
१५२	७	कर	करे
१५२	६	कषा	धर्म कषा
१५३	१३	देखलो ऐसी	देखलो हे अगादि
१५५	४	करती	यिम्ह रचना न्याय पूर्वक देखलो ऐसी करती

(छ)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२५३	२	हेमाचल	हिमाचल
२५३	३	श्रुत्कुंड	मुखकुरण्ड
२५३	५	वासुविशारद,	ता शुचिशारद
२५३	६	प्रथमें	प्रणमी
२५३	८	कर्मकी	वेदर्जुं
२५३	८	अङ्गमेल	अघमेल
२७०	४	दसहजार	हजार
२७५	८	तिक्खेवणा,	निक्खेवणा



(५)

पृष्ठ	पंक्ति	अध्याय	शुद्धि
२०२	३	द्वय	दृग्
२०२	११	स्वामी	•
२०२	११	पीर	सकल पीर
२०३	११	पाये	पाये
२०८	१७	बन्धुम	बन्धुत
२०९	४	करमा	करम
२१०	६	अग्ने	अग्निरे
२११	१०	कथं	अर्थ
२१२	४	प्राक्षिये	प्राक्षिते
२१३	१	बौमरे	बौतरे
२१३	१५	विमे	विमे
२१४	१	हस्ये विषा,	हस्येविषा
२१८	१४	पाये	पाये
२२२	८	मित	मित
२३३	१४	अबगुणों	अबगुण
२३४	५	शुभिसो	•
२४३	१५	मोह	विपमय मोह

(६)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
२५३	२	हेमाचल	हिमाचल
२५३	३	शुत्कुंड	मुखकुरण्ड
२५३	५	वासुविशारद,	ता शुचिशारद
२५३	६	प्रथमें	प्रणमी
२५३	८	कर्मकी	वेदजुं
२५३	८	अङ्गमेल	अघमेल
२७०	४	दसहजार	हजार
२७५	८	तिक्खेवणा,	निक्खेवणा



